चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम (FYUP) के लिए पाठ्यक्रम
तथा पाठ्यक्रम सम्बन्धी दिशा-निर्देश

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप)

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

हिंदी विभाग

रोनो हिल्स, दोइमुख, अरुणाचल प्रदेश-791112

अकादमिक सत्र 2024-25 से प्रभावी

प्रस्तावना

1.0. **प्रस्तावना**

चार वर्षीय हिंदी स्नातक प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम के निर्माण हेतु गठित पाठ्यक्रम निर्माण समिति (BOS) इस रिपोर्ट को प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रही है। पाठ्यक्रम निर्माण समिति ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिए गए दिशा-निर्देशों के अनुपालन में इस पाठ्यक्रम का निर्माण किया है।

इस सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की गई है कि इसके अध्ययन के पश्चात हिंदी साहित्य के विद्यार्थी यह जान सकेंगे कि साहित्य का अध्ययन कैसे किया जाए, उसकी समीक्षा कैसे की जाए और दिए गए पाठ को पढ़ने की समझ किस प्रकार विकसित की जाए ताकि विद्यार्थी साहित्य के उद्देश्य से भली-भाँति परिचित हो सके। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत स्नातक सप्तम सत्र में शोध प्रविधि एवं सिद्धांत तथा अष्टम सत्र में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता से सम्बंधित माइनर पत्र पढ़ाया जाएगा। सप्तम सत्र के बाद ऐसे विद्यार्थीजो स्नातक शोध के साथ प्रतिष्ठा की उपाधि प्राप्त करना चाहते हैं, उनसे अष्टम सत्र में 12 क्रेडिट के शोध परियोजना कार्य का लेखन कराया जायेगा। षष्ठ सत्र तक हिंदी माइनर के पत्रों को अन्य विषयों के विद्यार्थी पढ़ेंगे, जबकि सप्तम एवं अष्टम सत्र के माइनर पत्रों - (1. शोध प्रविधि तथा 2. शोध एवं प्रकाशन नैतिकता) को हिंदी मेजर के विद्यार्थी पढ़ेंगे। शोध परियोजना का लेखन कार्य करने हेतु अर्हता अंक सभी विभागों के लिए विश्वविद्यालय द्वारा तय किया जाएगा। चार वर्षीय स्नातक शोध के साथ प्रतिष्ठा की उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थी एक अर्हता परीक्षा उत्तीर्ण करके पीएच. डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम के निर्माण के दौरान क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक संदर्भों के अनुरूप विकल्प रखे गए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुरूप यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। इस पाठ्यक्रम में हिंदी साहित्य के सभी कालखंडो, प्रवृत्तियों, लेखकों, विविध विषय-वस्तु, विधागत विभाजन, शोध प्रविधि, शोध एवं प्रकाशन नैतिकता तथा शोध परियोजना लेखन कार्य आदि के समायोजन द्वारा पाठ्यक्रम को सर्वसमावेशी बनाया गया है।

भारत विविधतापूर्ण देश है और ये विविधताएँ भाषागत भी हैं। यहाँ तक कि हिंदी भाषा के अंतर्गत अनेक बोलियाँ भी सम्मिलित हैं जिनका साहित्य भी हिंदी भाषा को समृद्ध कर रहा है। इस समृद्ध साहित्यिक परम्परा के अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस पाठ्यक्रम की रूपरेखा निर्मित की गई है। इस पाठ्यक्रम में 'भारतीय साहित्य' शीर्षक पत्र के अंतर्गत अन्य भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य को भी सम्मिलित किया गया है। इस पाठ्यक्रम में 'अरुणाचली लोक साहित्य' शीर्षक से भी एक पत्र रखा गया है। अरुणाचली लोक साहित्य के अंतर्गत इस प्रदेश की बोलियों में प्राप्त लोक साहित्य के विविध रूपों का अध्ययन किया जायेगा। साथ ही इस दिशा में शोध की संभावनाओं को भी तलाशने का प्रयास किया जायेगा। शोध परियोजना पर कार्य करते समय अरुणाचल प्रदेश की बोलियों एवं उनमें प्राप्त लोक साहित्य पर अधिक ध्यान दिया जायेगा।

यह पाठ्यक्रम रोजगारपरक शिक्षा देने का कार्य भी करेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुरूप तैयार इस पाठ्यक्रम को नवाचार की दृष्टि से लागू किया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन समाज के सभी वर्गों के लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

अतः सभी सम्बद्ध महाविद्यालयों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे इस कार्यक्रम को लागू करने में अपनी रुचि दिखाएँ और प्रोत्साहन दें ताकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुरूप निर्मित इस कार्यक्रम की सार्थकता सिद्ध हो सके।

चार वर्षीय हिंदी स्नातक प्रतिष्ठा तथा चार वर्षीय हिंदी स्नातक शोध के साथ प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम का संक्षिप्त परिचय

हिन्दी स्नातक प्रतिष्ठा, 4 (चार) वर्षों की स्नातक उपाधि है, जिसमें 8 (आठ) सत्र शामिल हैं। पाठ्यक्रम में विविध और अंतर्दृष्टि-उन्मुख पत्रों को सम्मिलित किया गया है जिसमें प्रतिष्ठा के 21 (इक्कीस) पत्र, 3 (तीन) विभागीय ऐच्छिक (Departmental

Elective) [ऐसे विद्यार्थी जो चार वर्षीय स्नातक शोध के साथ प्रतिष्ठा की उपाधि प्राप्त करना चाहते हैं, वे प्रतिष्ठा के 21 (इक्कीस) पत्रों का अध्ययन तथा 12 क्रेडिट के शोध परियोजना कार्य का लेखन करेंगे], माइनर के 8 (आठ) पत्र, बहुअनुशासनात्मक पाठ्यक्रम (MultidisciplinaryCourse) के 3 (तीन) पत्र, योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम (Ability Enhancement Course) के 2 (दो) पत्र, कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (Skill Enhancement Course) के 3 (तीन) पत्र और मूल्यवर्धित पाठ्यक्रम (Value-Added Course) के 3 (तीन) पत्र शामिल हैं।

1. प्रत्येक पत्र को चार इकाइयों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक पत्र के लिए 100 (सौ) अंक निर्धारित हैं जिसमें आंतरिक मूल्यांकन के लिए 20 (बीस) अंक और सत्रांत परीक्षा के लिए 80(अस्सी) अंक निर्धारित हैं। हिंदी स्नातक प्रतिष्ठा के विद्यार्थी, हिंदी सामान्य (माइनर), के पत्रों को अन्य विभागों में पढ़ेंगे। बहुअनुशासनात्मक पाठ्यक्रम (Multidisciplinary Course) तथा मूल्यवर्धित पाठ्यक्रम (Value-Added Course) आदि पत्रों को अपने विभाग में अथवा अन्य विभागों में पढ़ सकते है।

इस पाठ्यक्रम में बहु प्रवेश एवं बहु निकास का प्रावधान रहेगा, जो इस प्रकार है-

1.1. उपाधि प्रदान करने का मानदंड

- **एक वर्षीय स्नातक सर्टिफिकेट**: प्रथम एवं द्वितीय सत्र में 40 क्रेडिट अंक प्राप्त करने वाला कोई विद्यार्थी यदि पाठ्यक्रम को छोड़ना चाहे तो उसे उक्त विषय में एक वर्षीय स्नातक का सर्टिफिकेट दिया जायेगा, बशर्ते उसे इन दोनों सत्रोंमें 2 क्रेडिट की इंटर्नशिप पूरी करनी होगी।
- **दो वर्षीय स्नातक का डिप्लोमा :**चतुर्थ सत्र के समाप्त होने के पश्चात 80 क्रेडिट अंक प्राप्त करने वाला कोई विद्यार्थी यदि पाठ्यक्रम को छोड़ना चाहे तो उसे उक्त विषय में दो वर्षीय स्नातक का डिप्लोमा प्रदान किया जाएगा, बशर्ते उसे इन दो वर्षों के दौरान 2 क्रेडिट की इंटर्नशिप पूरी करनी होगी।
- **तीन वर्षीय स्नातक उपाधि:**षष्ठ सत्र अथवा तीन वर्ष की पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात 120 क्रेडिट अंक अर्जित करने वाला कोई छात्र यदि पाठ्यक्रम को छोड़ना चाहे तो उसे तीन वर्षीय स्नातककी उपाधि प्रदान की जायेगी, बशर्ते उसे इन तीन वर्षों के दौरान 2 क्रेडिट की इंटर्नशिप पूरी करनी होगी।
- **चार वर्षीय स्नातक उपाधि:** चार वर्षीय स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम को पूरा करने वाले छात्रों को ही हिंदी में प्रतिष्ठा (आनर्स) की उपाधि प्रदान की जाएगी। इस पाठ्यक्रम के चतुर्थ वर्ष अर्थात सप्तम एवं अष्टम सत्र का पाठ्यक्रम दो प्रकार का होगा :-

  क. अष्टम सत्र में हिंदी प्रतिष्ठा के पाठ्यक्रम में 160 क्रेडिट अर्जित करने वाले छात्रों को ही हिंदी स्नातक प्रतिष्ठा की उपाधि प्रदान की जाएगी। ऐसे छात्र यदि परास्नातक कार्यक्रम में प्रवेश लेना चाहे तो वे सीधे परास्नातक के तृतीय सत्र में प्रवेश पा सकते हैं, बशर्ते वे इस पाठ्यक्रम के लिए विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अपेक्षित क्रेडिट अर्जित कर पाये हों और विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हों।

  ख. अष्टम सत्र में हिंदी प्रतिष्ठा के पाठ्यक्रम में 160 क्रेडिट अर्जित करने वाले वे छात्र जिन्होंने 12 क्रेडिट का शोध परियोजना कार्य भी पूर्ण किया हो उन्हें हिंदी स्नातक शोध के साथ प्रतिष्ठा की उपाधि प्रदान की जाएगी। शोध के साथ स्नातक प्रतिष्ठा की उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र विश्वविद्यालय द्वारा बनाए गए दिशानिर्देशों और प्रवेश परीक्षा के नियमों के अंतर्गत विश्वविद्यालय में पीएच. डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश पा सकते हैं, बशर्ते उसे इस पाठ्यक्रम के लिए विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अपेक्षित क्रेडिट अर्जित करना होगा।

पाठ्यक्रमों के नाम और उनके कूट नाम:

1. हिंदी प्रतिष्ठा (Hindi Major) : **HIN-CC**
2. हिंदी सामान्य (Hindi Minor) : **HIN-MC**
3. अंतर अनुशासनात्मक पाठ्यक्रम (Multidisciplinary Course) : **HIN-MD**
4. योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम (Ability Enhancement Course) : **HIN-AE**
5. कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (Skill Enhancement Course) : **HIN-SE**
6. मूल्यवर्धित पाठ्यक्रम (Value-Added Course) : **VAC**
7. विभागीय ऐक्छिक (Departmental Elective) **: HIN – DE**

तीन वर्षीय स्नातक/चार वर्षीय हिंदी स्नातक (प्रतिष्ठा)/ चार वर्षीय हिंदी स्नातक शोध के साथ (प्रतिष्ठा) के लिए पाठ्यक्रम संरचना

प्रथम सत्र									
पाठ्यक्रम कोड	**पाठ्यक्रम का शीर्षक**	**कुल क्रेडिट**	**क्रेडिट**			**संवाद अवधि**	**आतंरिक परीक्षा अंक**	**सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/प्रयोगात्मक)**	**कुल अंक**
			L	T	P				
HIN-CC-1110	हिन्दी साहित्य: आदिकाल से भक्तिकाल (इतिहास एवं रचनाएँ)	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-MC-1110	हिंदी सामान्य	4	3	1	0	60	20	80	100
XXX-MD-1110	राष्ट्रीय चेतना की कविता	3	2	1	0	45	20	80	100
XXX-AE-1110	लेखन कौशल	4	3	1	0	60	20	80	100
XXX-SEC-0010	हिंदी शिक्षण	3	2	1	0	45	20	80	100
EVS-VA-1110	अन्य विभागों द्वारा तैयार किया जाएगा। विद्यार्थी अपने पसंद	2	1	1	0	30	20	80	100

पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	कुल क्रेडिट	क्रेडिट L	T	P	संवाद अवधि	आतंरिक परीक्षा अंक	सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/प्रयोगात्मक)	कुल अंक
	के विषय में तैयार पाठ्यक्रम का चयन कर सकते हैं।								
द्वितीय सत्र									
पाठ्यक्रम कोड	**पाठ्यक्रम का शीर्षक**	**कुल क्रेडिट**	**क्रेडिट** L	T	P	**संवाद अवधि**	**आतंरिक परीक्षा अंक**	**सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/प्रयोगात्मक)**	**कुल अंक**
HIN-CC-1210	रीतिकाल : इतिहास एवं रचनाएँ	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-MC-1111	गद्य साहित्य : कहानी एवं उपन्यास	4	3	1	0	60	20	80	100
XXX-MD-1210	साहित्य और सिनेमा	3	2	1	0	45	20	80	100
XXX-AE-1210	पटकथा तथा संवाद लेखन	4	3	1	0	60	20	80	100
XXX-SE-0020	सृजनात्मक लेखन	3	2	1	0	45	20	80	100
EVS-VA-1120	अन्य विभागों द्वारा तैयार की जायेगी। विद्यार्थी अपने पसंद के विषय में तैयार पाठ्यक्रम का चयन कर सकते हैं।	2	1	1	0	30	20	80	100
प्रथम एवं द्वितीय सत्र में 40 क्रेडिट अंक प्राप्त करने वाला कोई विद्यार्थी यदि पाठ्यक्रम को छोड़ना चाहे तो उसे उक्त विषय में स्नातक प्रमाण पत्र की उपाधि दी जाएगी, बशर्ते उसे इन दो सत्रों में संचालित कौशल आधारित पाठ्यक्रम के 6 क्रेडिट के अतिरिक्त व्यवसायिक पाठ्यक्रम के अंतर्गत संचालित 4 क्रेडिट वाला प्रशिक्षण/ समर इंटर्नशिप पूरा करना होगा।									
तृतीय सत्र									
पाठ्यक्रम कोड	**पाठ्यक्रम का शीर्षक**	**कुल क्रेडिट**	**क्रेडिट** L	T	P	**संवाद अवधि**	**आतंरिक परीक्षा अंक**	**सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/प्रयोगात्मक)**	**कुल अंक**

HIN-CC-2110	**आधुनिक काल: इतिहास एवं रचनाएँ- 1**	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-2120	**हिंदी कहानी-1**	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-MC-2110	**हिंदी आत्मकथा और जीवनी**	4	3	1	0	60	20	80	100
XXX-MD-1310	**कम्प्यूटर-अनुप्रयोग : तकनीकी संसाधन एवं उपकरण**	3	2	1	0	45	20	80	100
HIN-XXX-SE-0030	**राजभाषा हिदी : अवधारणा एवं अनुप्रयोग**	3	2	1	0	45	20	80	100
EVS-VA-1130	अन्य विभागों द्वारा तैयार की जायेगी। विद्यार्थी अपने पसंद के विषय में तैयार पाठ्यक्रम का चयन कर सकते हैं।	2	1	1	0	30	20	80	100

चतुर्थ सत्र									
पाठ्यक्रम कोड	**पाठ्यक्रम का शीर्षक**	**कुल क्रेडिट**	**क्रेडिट**			**संवाद अवधि**	**आतंरिक परीक्षा अंक**	**सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/प्रयोगात्मक)**	**कुल अंक**
			L	**T**	**P**				
HIN-CC-2210	हिंदी भाषा एवं भाषा विज्ञान	4	3	1	0	60	20	80	100

HIN-CC-2220	**हिंदी नाटक**	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-2230	**कथेतर गद्य साहित्य**	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-2240	**हिंदी भक्ति काव्य**	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-MC-3210	**आधुनिक हिंदी कविता**	4	3	1	0	60	20	80	100

1. चतुर्थ सत्र के समाप्त होने के पश्चात 80 क्रेडिट अंक प्राप्त करने वाला कोई विद्यार्थी यदि पाठ्यक्रम को छोड़ना चाहे तो उसे उक्त विषय में स्नातक डिप्लोमा की उपाधि दी जाएगी, बशर्ते उसे इन दो वर्षों में व्यवसायिक पाठ्यक्रम के अंतर्गत संचालित 4 क्रेडिट वाला प्रशिक्षण/ समर इंटर्नशिप को पूरा करना होगा।
2. वे विद्यार्थी जो तीन वर्षीय स्नातक या चार वर्षीय स्नातक उपाधि प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें भी पंचम सत्र तक व्यवसायिक पाठ्यक्रम के अंतर्गत संचालित 4 क्रेडिट वाला प्रशिक्षण/ समर इंटर्नशिप को पूरा करना होगा।

पंचम सत्र

पाठ्यक्रम कोड	**पाठ्यक्रम का शीर्षक**	**कुल क्रेडिट**	**क्रेडिट**			**संवाद अवधि**	**आतंरिक परीक्षा अंक**	**सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/प्रयोगात्मक)**	**कुल अंक**
			L	**T**	**P**				
HIN-CC-3110	**भारतीय काव्यशास्त्र**	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-3120	**आधुनिक काल: इतिहास एवं रचनाएँ- 2**	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-3130	**प्रयोजनमूलक हिन्दी**	4	3	1	0	60	20	80	100

HIN-CC-3140	**लोक साहित्य**	2	1	1	0	30	20	80	100
HIN-MC-4110	**प्रवासी साहित्य**	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-IN-5110	**प्रशिक्षण / इंटर्नशिप**	2	1	1	0	30	20	80	100
षष्ठ सत्र									
पाठ्यक्रम कोड	**पाठ्यक्रम का शीर्षक**	**कुल क्रेडिट**	**क्रेडिट**			**संवाद अवधि**	**आतंरिक परीक्षा अंक**	**सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/प्रयोगात्मक)**	**कुल अंक**
			L	**T**	**P**				
HIN-CC-3210	**पाश्चात्य काव्यशास्त्र**	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-3220	**छायावाद**	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-3230	**प्रेमचन्द**	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-3240	**मीडिया के विविध आयाम**	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-MC-4210	**राष्ट्रीय चेतना का साहित्य**	4	3	1	0	60	20	80	100

षष्ठ सत्र अथवा तीन वर्ष की पढ़ाई पूर्ण होने के पश्चात 120 क्रेडिट अर्जित करने वाला कोई छात्र यदि पाठ्यक्रम से निकास लेना चाहे तो उसे स्नातक की उपाधि प्रदान की जायेगी।

सप्तम सत्र									
पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	कुल क्रेडिट	क्रेडिट			संवाद अवधि	आतंरिक परीक्षा अंक	सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/प्रयोगात्मक)	कुल अंक
			L	T	P				
HIN-CC-4110	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक)	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-4120	आदिकालीन साहित्य एवं निर्गुण भक्ति काव्य	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-4130	भारतीय काव्यशास्त्र	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-4140	कहानी एवं अन्य गद्य विधाएँ	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-MC-4150	भारतीय साहित्य	4	3	1	0	60	20	80	100

अष्टम सत्र									
पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	कुल क्रेडिट	क्रेडिट			संवाद अवधि	आतंरिक	सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/प्रयो	कुल अंक
			L	T	P				

							परीक्षा अंक	गात्मक)	
HIN-CC-4210	हिंदी साहित्य का इतिहास: आधुनिक काल	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-4220	सगुण भक्ति काव्य एवं रीति काव्य	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-4230	आधुनिक काव्य	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-CC-4240	हिन्दी नाटक एवं निबंध	4	3	1	0	60	20	80	100
HIN-MC-4250	अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं प्रविधि	4	3	1	0	60	20	80	100

योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम (Ability Enhancement Course) AEC

सत्र	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	कुल क्रेडिट	क्रेडिट			संवाद अवधि	आतंरिक परीक्षाअंक	सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/ प्रयोगात्मक)	कुल अंक
				L	T	P				
प्रथम	**XXX-AE-1110**	लेखन कौशल	4	3	1	0	60	20	80	100
द्वितीय	**XXX-AE-1210**	पटकथा तथा संवाद लेखन	4	3	1	0	60	20	80	100

हिंदी सामान्य (Hindi Minor) MC

सत्र	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	कुल क्रेडिट	क्रेडिट			संवाद अवधि	आतंरिक परीक्षांक	सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/ प्रयोगात्मक)	कुल अंक
				L	T	P				
प्रथम	**HIN-MC-1110**	हिंदी सामान्य	4	3	1	0	60	20	80	100
द्वितीय	**HIN-MC-1111**	गद्य साहित्य : कहानी एवं उपन्यास	4	3	1	0	60	20	80	100
तृतीय	**HIN-MC-2110**	हिंदी आत्मकथा और जीवनी	4	3	1	0	60	20	80	100
चतुर्थ	**HIN-MC-3210**	आधुनिक हिंदी कविता	4	3	1	0	60	20	80	100
पंचम	**HIN-MC-4110**	प्रवासी साहित्य	4	3	1	0	60	20	80	100
षष्ट	**HIN-MC-4210**	राष्ट्रीय चेतना का साहित्य	4	3	1	0	60	20	80	100
सप्तम	**HIN-RC-5110**	शोध प्रविधि	4	3	1	0	60	20	80	100
अष्टम	**HIN-RC-5210**	शोध एवं प्रकाशन नैतिकता	4	3	1	0	60	20	80	100

कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (Skill Enhancement Course)SEC

सत्र	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	कुल क्रेडिट	क्रेडिट			संवाद अवधि	आतंरिक परीक्षांक	सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/ प्रयोगात्मक)	कुल अंक
				L	T	P				
प्रथम	XXX-SE-0010	हिंदी शिक्षण	3	2	1	0	45	20	80	100
द्वितीय	XXX-SE-0020	सृजनात्मक लेखन	3	2	1	0	45	20	80	100
तृतीय	XXX-SE-0030	राजभाषा हिंदी : अवधारणा एवं अनुप्रयोग	3	2	1	0	45	20	80	100

अंतर अनुशासनात्मक पाठ्यक्रम (Multidisciplinary Course)MD

सत्र	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	कुल क्रेडिट	क्रेडिट			संवाद अवधि	आतंरिक परीक्षांक	सत्रांत परीक्षा (सैद्धांतिकी/ प्रयोगात्मक)	कुल अंक
				L	T	P				
प्रथम	XXX-MD-1110	राष्ट्रीय चेतना की कविता	3	2	1	0	45	20	80	100
द्वितीय	XXX-MD-1210	साहित्य और सिनेमा	3	2	1	0	45	20	80	100

तृतीय	**XXX-MD-1310**	कंप्यूटर अनुप्रयोग : तकनीकी संसाधन एवं उपकरण	3	2	1	0	45	20	80	100

पाठ्यक्रम का शैक्षिक उद्देश्य [Programme Educational Objective (PEO)]

1. विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के इतिहास और परम्परा से परिचित कराना।
2. विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के उद्भव और विकास सेअवगत कराना।
3. विद्यार्थियों को साहित्य सिद्धांत और साहित्य समालोचना से परिचित कराना।
4. विद्यार्थियों को विभिन्न कालखंडों की हिंदी कविता और उनके रचनाकारों के बारे में जानकारी देना।
5. विद्यार्थियों को विभिन्न कालखंडों के हिंदी गद्यतथा उनके रचनाकारों से अवगत कराना।
6. राष्ट्रीय चेतना की कविताओं के माध्यम से विद्यार्थियों में राष्ट्रीय संस्कृति के प्रति चेतना जागृत करना।
7. विद्यार्थियोंमेंप्रयोजनमूलक हिंदी के अध्ययन द्वारा हिंदी शिक्षण और लेखन कौशल को प्रोत्साहित करना।
8. भारतीय साहित्य के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों में बहुभाषिकता एवं बहु सांस्कृतिकता की भावना का विकास होगा।
9. लोक साहित्य के अध्ययन के माध्यम से लोक साहित्य के संग्रहण और विश्लेषण को बढ़ावा देना साथ ही अरुणाचल प्रदेश के लोक साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित करना।
10. पटकथा लेखन, समाचार लेखन, दृश्य-श्रव्य माध्यम लेखन एवंविज्ञापन लेखन के माध्यम से विद्यार्थियों में रोजगारपरकता को बढ़ावा मिलेगा।
11. प्रवृत्ति केन्द्रित एवं साहित्यकार केन्द्रित पत्रों के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों में साहित्य के प्रति गहरी अभिरुचि पैदा करना।
12. विद्यार्थियोंकोविभिन्न शोध प्रविधियों से अवगत कराना।
13. शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के अध्ययन से विद्यार्थियों को शोध के दार्शनिक और नैतिक पक्ष से अवगत कराना।
14. भाषा और साहित्य में मात्रात्मक और गुणात्मक अनुसंधान के बारे में विद्यार्थियोंको परिचित कराना।
15. विद्यार्थियों को पत्रकारिता और मीडिया के क्षेत्र में विद्यमान रोज़गार की संभावनाओं से परिचित कराना।
16. साहित्य में चल रहे विमर्शों के माध्यम से नवीन विमर्शों के महत्त्व के प्रति छात्रों में जागरूकता का प्रसार।
17. साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन तथा प्रवासी साहित्य अध्ययन को प्रोत्साहित करना।
18. विद्यार्थियोंको अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों का विश्लेषण करने और एक अनुसंधान परियोजना लिखने में सक्षम बनाना।
19. साहित्य अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता को संवर्धित करना।
20. साहित्य के महत्व और उसकी सार्थकता को स्पष्ट करना।
21. उच्च शिक्षा में शोध की महत्ता और शोध के क्षेत्र में अवदान के प्रति जागरूकता पैदा करना तथा शोध के प्रति आकर्षण पैदा करना।
22. साहित्य के आस्वादन और मूल्यांकन से सम्बंधित विवेक को जागृत करना।
23. इंटर्नशिप कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न व्यावसायिक कौशल में प्रशिक्षित करना।

पाठ्यक्रम की उपलब्धियाँ [Programme Outcomes (PO)]

1. विद्यार्थी हिंदी साहित्य के अध्ययन के माध्यम से उसके इतिहास, साहित्यिक रूपों, विविध विधाओं तथा भाषा का ज्ञान अर्जित कर सकेंगे। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से वे आदिकालीन, मध्यकालीन और आधुनिककालीन कवियों एवं रचनाकारों की कृतियों का अध्ययन-विश्लेषण कर सकेंगे। इसके साथ ही विद्यार्थी राष्ट्रीय चेतना तथा देशप्रेम के विविध आयामों से सम्बंधित साहित्य से परिचित हो सकेंगे। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों में समावेशी और समता की भावना का विकास होगा। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से वे एक आदर्श नागरिक के रूप में विकसित होंगे तथा एक बेहतर समाज बनाने की दिशा में आगे बढ़ेंगे और इस प्रकार देश के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दे सकेंगे।

2. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों में सृजनात्मक कल्पनाशीलता तथा नवीन विचारों की उद्भावना होगी जिसके माध्यम से वे साहित्य और समाज के मूल्यों को समझने में समर्थ होंगे। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी रचनात्मक लेखन के आवश्यक गुणों का अध्ययन करते हुए साहित्य की विविध विधाओं की आधारभूत संरचनाओं के व्यावहारिक पक्ष को समझने में पारंगत हो सकेंगे।

3. इस पाठ्यक्रम के अध्ययनोपरांत विद्यार्थी साहित्यशास्त्रीय कला-विधान तथा साहित्य की विभिन्न विधाओं के रचनात्मक सौंदर्य को आत्मसात कर सकेंगे। समय-समय पर उद्भावित साहित्यशास्त्रीय आलोक में काव्य-सौंदर्य के विभिन्न तत्वों से परिचित हो सकेंगे। विद्यार्थी भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य के विभिन्न साहित्यशास्त्रीय सिद्धांतों और विचारधाराओं को समझने में सक्षम हो सकेंगे।

4. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के विभिन्न काव्यान्दोलनों, विमर्शों, आलोचना की परंपरा और दृष्टियाँ, लोक-साहित्य एवं प्रवासी साहित्य की अवधारणा और उसके स्वरूप से अवगत हो सकेंगे। इसी के साथ विद्यार्थी लेखन कौशल के विविध रूपों, भाषागत रचनात्मक सन्दर्भों, व्याकरणिक विधानों, अनुवाद, भाषिक एवं तकनीकी रूपान्तरणों इत्यादि से परिचित हो सकेंगे। विद्यार्थी पारम्परिक एवं आधुनिक संचारमाध्यमों के लेखन व संपादन विधि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा राजभाषा हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों, प्रयोजनमूलक पक्षों और मीडिया आयामों को समझने में समर्थ हो सकेंगे।

पाठ्यक्रम की विशिष्ट उपलब्धियाँ Programme Specific Outcomes (PSOs)

PSO1. विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास, रचनाकारों, रचनाओं के मूल तत्त्वों एवं विचार-सरणियों का कालानुक्रम के अनुसार अध्ययन कर सकेंगे। वे अवधारणात्मक सिद्धांतों, विधागत सन्दर्भों, क्षेत्रीय-राष्ट्रीय चेतनागत विमर्शों तथा वैचारिकी आदि का अध्ययन कर सकेंगे तथा अपना बहुआयामी विकास एवं बौद्धिक मूल्य संवर्द्धन करने में सक्षम हो सकेंगे।

PSO2. हिंदी साहित्य के विभिन्न पाठों, विधाओं और मौलिक कृतियों के सृजनात्मक, संज्ञानात्मक तथा आलोचनात्मक पक्षों से अवगत होते हुए विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में मानवीय एवं लोकतान्त्रिक मूल्यों की स्थापना एवं प्रतिष्ठा कर पाने में समर्थ हो सकेंगे।

PSO3. विद्यार्थी भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य-शास्त्र के सिद्धांतों और विचारों का अध्ययन कर सकेंगे। हिंदी साहित्य की रचनाधर्मिता और जनपक्षधरता को सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के आलोक में जान सकेंगे तथा इतिहास एवं लोक-परम्परा में अनुस्यूत वृत्तांतों, दृष्टान्तों और मिथकीय चेतनागत विशिष्टताओं को समझ सकेंगे।

PSO4. विद्यार्थी लेखन कौशल के विविध रूपों, रचनात्मक सन्दर्भों, व्याकरणिक विधानों, अनुवाद, भाषिक एवं तकनीकी रूपान्तरणों इत्यादि का रोजगारपरक दृष्टिकोण से अंतरानुशासनिक तथा नवाचारी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

PSO5. विद्यार्थियों में मानवीय गुणों का विकास होगा तथा वे हिंदी साहित्य के मूल्य-बोध को आत्मसात करेंगे। वे सामाजिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन में भूमिका-निर्वाह की दृष्टि से सार्वजनीन एवं उदात्त गुणधर्म सीख एवं जान सकेंगे।

प्रथम सत्र

HIN-CC-1110

हिंदी साहित्य : आदिकाल से भक्तिकाल

(इतिहास एवं रचनाएँ)

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी साहित्य के आदिकाल की युगीन परिस्थितियों, प्रवृत्तियों एवं प्रमुख कवियों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी चंदबरदाई और अमीर खुसरो की चयनित रचनाओं की व्याख्या, समीक्षा तथा दोनों रचनाकारों की काव्यगत विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी कबीर और जायसी की काव्य-दृष्टि एवं काव्य-वैभव से परिचित हो सकेंगे। साथ ही कबीर की भक्ति भावना और पद्मावत के सन्दर्भ में सूफी काव्य-परम्परा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी सूरदास और तुलसीदास की भक्ति-भावना, वात्सल्य, समन्वय-भावना तथा अन्य काव्यगत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों ने हिंदी साहित्य के आदिकाल की युगीन परिस्थितियों, प्रवृत्तियों एवं प्रमुख कवियों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों ने चंदबरदाई और अमीर खुसरो की चयनित रचनाओं की व्याख्या, समीक्षा तथा दोनों रचनाकारों की काव्यगत विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त किया।

CO3. विद्यार्थी कबीर और जायसी की काव्य-दृष्टि एवं काव्य-वैभव से परिचित हुए। साथ ही कबीर की भक्ति-भावना और पद्मावत के सन्दर्भ में सूफी काव्य-परम्परा का परिचय प्राप्त किया।

CO4. विद्यार्थी सूरदास और तुलसीदास की भक्ति-भावना, वात्सल्य, समन्वय-भावना तथा अन्य काव्यगत विशेषताओं से परिचित हुए।

इकाई	विषय	संवाद-अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	**आदिकाल:** साहित्य का इतिहास: काल विभाजन, सीमा-निर्धारण और नामकरण, आदिकालीन साहित्य की परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ। **भक्तिकाल:** भक्तिकाल की पृष्ठभूमि; परिस्थितियाँ; वर्गीकरण तथा सामान्य प्रवृत्तियाँ, निर्गुण एवं सगुण काव्यधाराओं की ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी, कृष्णाश्रयी तथा रामाश्रयी काव्यधाराओं का परिचय तथा विशेषताएँ।	30	C1
2	**क. चन्दबरदाई :** पुस्तक: आदिकालीन काव्य – सं. डॉ. वासुदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन) अथ पद्मावती समय : प्रारंभ से 10 (दस) पद। आलोचना: पृथ्वीराज रासो का काव्य-सौन्दर्य, रासो की प्रामाणिकता, अथ पद्मावती समय का काव्य-सौन्दर्य। **ख. अमीर खुसरो :** (पाठ्य पुस्तक: अमीर खुसरो: व्यक्तित्व और कृतित्व – परमानन्द पांचाल) • कव्वाली- घ (1) • दोहे :– (1) गोरी सोवे सेज पर (2) खुसरो रैन सुहाग की (3) देख मैं (4) चकवा-चकवी (5) सेज सुनी	30	C2

3	पाठ्य-पुस्तकः प्राचीन काव्य संग्रह; सम्पा.- राजदेव सिंह; वाणी प्रकाशन, दिल्ली **क. कबीर :** पाठांश: प्रारम्भ के पाँच सबद आलोचना : कबीर की भक्ति ; सामाजिक चेतना; काव्य रूप **ख. जायसी :** पाठांश : उपसंहार खण्ड आलोचना : सूफी काव्य परम्परा और पद्मावत ; जायसी का काव्य-वैभव	30	C3
4	**क. सूरदासः** पाठ्य पुस्तकः प्राचीन काव्य संग्रह; सम्पा.- राजदेव सिंह; वाणी प्रकाशन, दिल्ली। पाठांश : विनय के पद - 1, 5 तथा भ्रमरगीत प्रसंग- पद संख्या: 3,4,5,6,7 तथा 8 आलोचना : सूर की भक्ति-भावना ; वात्सल्य वर्णन; भ्रमरगीत काव्य परम्परा **ख. तुलसीदास :** पाठ्यपुस्तक : काव्य-वैभव : सं. दूधनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन पाठांश : समस्त पद । आलोचना : भक्ति-भावना; काव्यगत विशेषताएँ; समन्वय- भावना	30	C4
कुल संवाद-अवधि		120	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	2	-	3	2	2	-	3
CO2	3	3	2	1	3	3	3	1	3
CO3	3	3	2	2	3	3	3	2	3
CO4	3	3	2	2	3	3	3	2	3
Average	3	2.75	2	1.25	3	2.75	2.75	1.25	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. इकाई 2, 3 तथा इकाई 4 से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x3 = 24

2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 14x4= 56

सहायक ग्रन्थः

1.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	: रामचन्द्र शुक्ल
2.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	: सं. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल
3.	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	: डॉ. रामकुमार वर्मा
4.	हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहासः दो खण्ड	: डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
5.	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	: डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
6.	हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास	: डॉ. बच्चन सिंह
7.	हिन्दी साहित्यः उद्भव और विकास	: डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
8.	अमीर खुसरो और उनका हिंदी साहित्य	: भोलानाथ तिवारी
9.	कबीर	: हजारीप्रसाद द्विवेदी
10.	सूरदास	: नंददुलारे वाजपेयी
11.	भ्रमरगीत सार	: सं. रामचन्द्र शुक्ल
12.	जायसी ग्रंथावली	: सं. रामचन्द्र शुक्ल
13.	गोस्वामी तुलसीदास	: रामचन्द्र शुक्ल

प्रथम सत्र

HIN-MC-1110

सामान्य हिंदी

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास के विभिन्न कालों की परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी कबीरदास, सूरदास और तुलसीदास के चयनित काव्यांशों की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन कर सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी प्रेमचंद, उषा प्रियंवदा और मोहन राकेश की चयनित कहानियों की समीक्षा कर सकेंगे तथा कहानीकारों की कहानी-कला से अवगत हो सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी हिंदी व्याकरण के विभिन्न अवयवों से परिचित हो सकेंगे तथा पत्र लेखन और निबंध लेखन के कौशल से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने हिंदी साहित्य के इतिहास के विभिन्न कालों की परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय प्राप्त किया।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने कबीरदास, सूरदास और तुलसीदास के चयनित काव्यांशों की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया।

CO3. विद्यार्थियों ने प्रेमचंद, उषा प्रियंवदा और मोहन राकेश की चयनित कहानियों की समीक्षा की तथा कहानीकारों की कहानी-कला से अवगत हुए।

CO4. विद्यार्थियों ने हिंदी व्याकरण के विभिन्न अवयवों से परिचित प्राप्त किया तथा पत्र लेखन और निबंध लेखन के कौशल से अवगत हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	हिंदी साहित्य का इतिहास: सामान्य परिचय ; आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल का सामान्य परिचय।	30	C1

2	**कविता** ● कबीर : पाठ्य पुस्तक : कबीर ग्रंथावली, संपादक : डॉ. श्यामसुन्दर दास पाठ्य अंश : 'गुरुदेव को अंग' साखी संख्या 1 से 10 तक ● सूरदास : पाठ्य पुस्तक: सूरसागरसार, संपादक : डॉ. धीरेन्द्र वर्मा पाठ्य अंश: 'गोकुल लीला' पद संख्या : 7, 18, 19, 20, 21 ● तुलसीदास : पाठ्य पुस्तक : कवितावली, गीता प्रेस, गोरखपुर पाठ्य अंश : 'बाल काण्ड' पद संख्या : 1, 3, 4, 5, 7	30	C2
3	**कहानी** ● प्रेमचंद : सवा सेर गेहूँ ● उषा प्रियंवदा : वापसी ● मोहन राकेश : मलबे का मालिक	30	C3
4	**हिंदी व्याकरण और रचना:** **व्याकरण :**लिंग निर्णय, वचन, काल, वाक्य-शुद्धि, विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, संधि, समास, वर्तनी, शुद्धि-अशुद्धि, मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ। **पत्र-लेखन, निबंध-लेखन** *(निबंध के लिए विषय : विज्ञान से सम्बंधित विषय, पर्यावरण से सम्बंधित विषय, साहित्य से सम्बंधित विषय, सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित विषय तथा अरुणाचल प्रदेश से सम्बंधित विषय)*।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	3	3	2	2	1	3
CO2	3	3	2	1	3	3	2	2	3
CO3	3	3	2	3	3	3	3	1	3
CO4	1	2	3	3	1	1	1	3	2
Average	2.50	2.75	2.25	2.50	2.50	2.25	2	1.75	2.75

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. इकाई 2 तथा 3 से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x2 = 16

2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनकेविकल्प भी होंगे। 12x4= 48

3. इकाई 4 के व्याकरण वाले भाग से चार-चार अंक के चार प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 4x4 =16

सहायक ग्रन्थः

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं डॉ. नगेन्द्र , डॉ. हरदयाल
3. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ. रामकुमार वर्मा
4. कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी
5. सूरदास : रामचन्द्र शुक्ल
6. सुर साहित्य : हजारीप्रसाद द्विवेदी
7. तुलसी और उनका युग : राजपति दीक्षित
8. गोस्वामी तुलसीदास : हजारीप्रसाद द्विवेदी
9. कहानी नयी कहानी : नामवर सिंह
10. हिंदी कहानी का विकास : मधुरेश
11. हिंदी व्याकरण और रचना : वासुदेव नंदन प्रसाद
12. हिंदी व्याकरण : कामता प्रसाद गुरु

प्रथम सत्र

HIN-MD-1110

राष्ट्रीय चेतना की कविता

संवाद-अवधि	: 90
क्रेडिट	: 3
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप से अवगत कराया जायेगा। राष्ट्रीय चेतना की कविताओं के तात्त्विक विवेचन तथा उसमें अभिव्यक्त देश प्रेम के विविध आयामों का अध्ययन कराया जायेगा।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' तथा मैथिलीशरण गुप्त की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन कर सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी सुभद्रा कुमारी चौहान और रामनरेश त्रिपाठी विरचित चयनित कविताओं की व्याख्या और आलोचना का अध्ययन कर सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी माखनलाल चतुर्वेदी और जयशंकर प्रसाद की चयनित राष्ट्रीय भावना से सम्बंधित कविताओं की व्याख्या एवं मीमांसा से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप से अवगत हुए। राष्ट्रीय चेतना की कविताओं के तात्त्विक विवेचन तथा उसमें अभिव्यक्त देश प्रेम के विविध आयामों का अध्ययन किया।

CO2. इस पत्र के अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों ने अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' तथा मैथिलीशरण गुप्त की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा की।

CO3. विद्यार्थियों ने सुभद्रा कुमारी चौहान और रामनरेश त्रिपाठी विरचित चयनित कविताओं की व्याख्या की तथा आलोचना का अध्ययन किया।

CO4. विद्यार्थी माखनलाल चतुर्वेदी और जयशंकर प्रसाद की चयनित राष्ट्रीय चेतना की कविताओं की व्याख्या एवं मीमांसा से अवगत हुए।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	राष्ट्रीय चेतना : परिभाषा और स्वरूप, राष्ट्रीय चेतना की कविता का तात्विक विवेचन, राष्ट्रीय चेतना की कविता में देश प्रेम के विविध आयाम, हिंदी साहित्य के विविध युगों में राष्ट्रीय चेतना का विकास।	18	C1
2	क. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : कर्मवीर ख. मैथिलीशरण गुप्त : नर हो ना निराश करो मन को	24	C2
3	क. सुभद्रा कुमारी चौहान : झांसी की रानी ख. रामनरेश त्रिपाठी : वह देश कौन सा है	24	C3
4	क. माखनलाल चतुर्वेदी : पुष्प की अभिलाषा ख.जयशंकर प्रसाद : भारत महिमा	24	C4
	कुल संवाद-अवधि	**90**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	3	3	2	3	2	3
CO2	3	3	2	3	3	3	3	1	3
CO3	3	3	2	3	3	3	3	1	3
CO4	3	3	2	3	3	3	3	1	3
Average	3	3	2	3	3	2.75	3	1.25	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. इकाई 2, 3 तथा 4 से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x3=24
2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 14x4= 56

सहायक ग्रंथ-

1. अतीत के हंस	: मैथिलीशरण गुप्त, प्रभाकर श्रोत्रिय
2. जयशंकर प्रसाद	: नंददुलारे वाजपेयी
3. सुभद्रा कुमारी चौहान	: साहित्य अकादमी
4. पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त	: रामधारी सिंह दिनकर
5. हरिऔध और उनका साहित्य	: मुकुंददेव शर्मा
6. रामनरेश त्रिपाठी	: इंदरराज वैद 'अधीर'
7. राष्ट्रीय नवजागरण और साहित्य	: वीरभारत तलवार
8. भारतेंदु हरिश्चन्द्र	: मदन गोपाल
9. भारतेंदु हरिश्चन्द्र	: ब्रजरत्न दस
10. माखनलाल चतुर्वेदी	: साहित्य अकादमी
11. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	: साहित्य अकादमी

प्रथम सत्र

HIN-AE-1110

लेखन कौशल

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी लेखन-कौशल से अवगत हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी लेखन के विविध रूपों, जैसे-गद्य-पद्य, नाटक-एकांकी, समाचार, पत्र लेखन आदि से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी रचनात्मक लेखन के लिए आवश्यक गुणों का अध्ययन कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी विविध साहित्यिक विधाओं की आधारभूत संरचनाओं के व्यावहारिक पक्ष से परिचित हो सकेंगे तथा विभिन्न विधाओं में लेखन का अभ्यास कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन के द्वारा विद्यार्थी लेखन-कौशल की कला से अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी लेखन के विविध रूपों, जैसे- गद्य-पद्य, नाटक-एकांकी, समाचार, पत्र-लेखन आदि से परिचित हुए।

CO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों ने रचनात्मक लेखन के लिए आवश्यक गुणों का अध्ययन किया तथा व्याकरणिक रूप से शुद्ध हिन्दी लेखन में कुशलता प्राप्त की।

CO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी विविध साहित्यिक विधाओं की आधारभूत संरचनाओं के व्यावहारिक पक्ष से परिचित हुए तथा विभिन्न विधाओं में लेखन का अभ्यास भी किया।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	लेखन कौशल : स्वरूप एवं सिद्धांत, लेखन कौशल का महत्व एवं विशेषताएँ।	30	C1

2	लेखन के विविध रूप : मौखिक-लिखित, गद्य-पद्य, नाटक-एकांकी, समाचार, पत्र लेखन।	30	C2
3	लेखन कौशल: भाषा प्रयोग, शब्द चयन, व्याकरणिक कोटियाँ, रचनात्मक लेखन के लिए आवश्यक गुण।	30	C3
4	शिक्षण : विविध साहित्यिक विधाओं की आधारभूत संरचनाओं का व्यावहारिक पक्ष तथा विभिन्न विधाओं में लेखन का अभ्यास।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**60**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	1	3	2	3	1	2	2	3	2
CO2	3	3	2	3	1	2	2	3	2
CO3	1	3	2	3	1	2	2	3	2
CO4	2	3	2	3	2	3	2	3	3
Average	1.75	3	2	3	1.25	2.25	2	3	2.25

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 14x4= 56
2. कुल पाँच टिप्पणियाँ पूछी जायेंगी, जिनमें से किन्हीं दो का उत्तर लिखना होगा। 7x2= 14

सहायक ग्रंथ :

1. रचनात्मक लेखन : सं. रमेश गौतम
1. हिंदी वाक्य विन्यास : सुधा कश्यप
2. संचार भाषा हिंदी : सूर्यप्रसाद दीक्षित
3. लेखन कला और रचना कौशल : परिकल्पना प्रकाशन

प्रथम सत्र

HIN-SE-0010

हिंदी शिक्षण

संवाद-अवधि	: 90
क्रेडिट	: 3
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs),

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी सम्पादक के नाम पत्र, सम्पादकीय लेखन, स्तम्भ लेखन, पत्र-पत्रिकाओं के लिये आलेख रचना, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन हेतु वार्ता, साक्षात्कार एवं परिचर्चा तैयार करने की विधियों से अवगत हो सकेंगे।
LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी कार्यालयी पत्राचार के विविध रूपों से परिचित हो सकेंगे।
LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने सोशल मीडिया एवं न्यू-मीडिया लेखन की विभिन्न विधियों तथा हिंदी भाषा के तकनीकी प्रयोगों से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को सृजनात्मक लेखन की विभिन्न साहित्यिक विधाओं एवं उनके स्वरूप की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी सम्पादक के नाम पत्र, सम्पादकीय लेखन, स्तम्भ लेखन, पत्र-पत्रिकाओं के लिये आलेख रचना, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन हेतु वार्ता, साक्षात्कार एवं परिचर्चा तैयार करने की विधियों से अवगत हुए।
CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी कार्यालयी पत्राचार के विविध रूपों से परिचित हुए।
CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने सोशल मीडिया एवं न्यू-मीडिया लेखन की विभिन्न विधियों तथा हिंदी भाषा के तकनीकी प्रयोगों से परिचय प्राप्त किया।
CO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को सृजनात्मक लेखन की विभिन्न साहित्यिक विधाओं एवं उनके स्वरूप की जानकारी प्राप्त हुई।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	**आलेख रचना** सम्पादक के नाम पत्र, सम्पादकीय लेखन, स्तम्भ लेखन, पत्र-पत्रिकाओं के लिये आलेख रचना; आकाशवाणी एवं दूरदर्शन हेतु वार्ता, साक्षात्कार एवं परिचर्चा तैयार करने की विधियाँ।	24	C1
2	**व्यावहारिक लेखन** कार्यालयी पत्राचार; प्रेस विज्ञप्ति; सूचना ; ज्ञापन; कार्यसूची; कार्यवृत्त; प्रतिवेदन; सम्पादन; संक्षेपण; आत्मविवरण।	24	C2
3	**सोशल मीडिया लेखन**	18	C3

	सोशल मीडिया की अवधारणा, संचार के नवमाध्यम, न्यू मीडिया और समाज, सोशल मीडिया के विविध रूप, लेखन एवं व्यावहारिक प्रकृति।		
4	**सृजनात्मक लेखन** कविता, कहानी, नाटक तथा एकांकी, निबंध, संस्मरण, यात्रावृत्त का स्वरूप विवेचन।	24	C4
कुल संवाद-अवधि		**90**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	1	2	2	3	1	2	2	3	3
CO2	-	2	-	3	-	-	-	3	2
CO3	3	3	2	3	2	3	2	3	2
CO4	3	2	2	3	3	3	2	3	3
Average	1.75	2.25	1.50	3	1.50	2	1.50	3	2.50

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेंगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4= 20

सहायक ग्रन्थ:

1. अच्छी हिन्दी : रामचन्द्र वर्मा
2. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण और रचना : हरदेव बाहरी
3. हिन्दी भाषा :डॉ. भोलानाथ तिवारी
4. रेडियो लेखन : मधुकर गंगाधर
5. टेलीविजनः सिद्धान्त और टैकनिक :मथुरादत्त शर्मा
6. प्रयोजनमूलक हिन्दी : डॉ. दंगल झाल्टे
7. सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग : गोपीनाथ श्रीवास्तव, राजकमल, दिल्ली
8. टेलीविजन लेखन : असगर वजाहत / प्रेमरंजन ; राजकमल, दिल्ली
9. रेडियो नाटक की कला : डॉ. सिद्धनाथ कुमार, राजकमल, दिल्ली

10. रेडियो वार्ता-शिल्प : सिद्धनाथ कुमार, राजकमल, दिल्ली
11. सूचना प्रौद्योगिकी एवं पत्रकारिता : अशोक मलिक, हरियाणा साहित्य अकादमी
12. मीडिया और बाज़ार : वर्तिका नंदा, सामयिक प्रकाशन
13. नए समय में मीडिया : विनीत उत्पल, अपनी जुबान

द्वितीय सत्र

HIN-CC-1210

रीतिकाल: इतिहास एवं रचनाएँ

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. : इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी रीतिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियां एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ, अवधारणा तथा रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी केशव और मतिराम की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन करेंगे।

LO3. विद्यार्थी सेनापति और बिहारी विरचित चयनित कविताओं की व्याख्या और आलोचना का अध्ययन करेंगे।

LO4. विद्यार्थी घनानंद और भूषण की चयनित कविताओं की व्याख्या एवं मीमांसा से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने रीतिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियां एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ, अवधारणा तथा रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराओं का परिचय प्राप्त किया।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने केशव और मतिराम की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया।

CO3. विद्यार्थियों ने सेनापति और बिहारी विरचित चयनित कविताओं की व्याख्या और आलोचना का अध्ययन किया।

CO4. विद्यार्थी घनानंद और भूषण की चयनित कविताओं की व्याख्या एवं मीमांसा से अवगत हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	रीति की अवधारणा और रीति काव्य, रीतिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियां एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएं : सामान्य परिचय, रीतिकालीन रचनाकार एवं रचनाएं, रीतिकालीन काव्य-भाषा।	30	C1
2	(क) केशव: पाठ्य पुस्तक: कविप्रिया – प्रिया प्रकाशन, लाला भगवानदीन पाठांश : तीसरा प्रभाव, छंद संख्या 1,2,4 तथा 5	30	C2

	आलोचना: कविप्रिया का काव्य सौन्दर्य, केशव की अलंकार-योजना (ख) मतिराम: पाठ्य पुस्तक: रीतिकाव्य संग्रह, डॉ. विजयपाल सिंह, लोकभारती प्रकाशन पाठांश: प्रारंभ से पाँच पद आलोचना: रीतिकालीन कवियों में मतिराम का स्थान, मतिराम की काव्य-कला		
3	(क) सेनापति: पाठ्य पुस्तक: रीतिकाव्य संग्रह, डॉ. विजयपाल सिंह, लोकभारती प्रकाशन पाठांश: पद संख्या :- 1,2,5,9 तथा 10 आलोचना: शृंगारिकता, काव्यगत विशेषताएँ (ख) बिहारी : पाठ्य पुस्तक : बिहारी रत्नाकर; सम्पादक: जगन्नाथदास रत्नाकर पाठ्य दोहे- 1, 2, 5, 6, 7,15,19, 20, 21 तक आलोचना: बिहारी की बहुज्ञता, सतसई परम्परा में बिहारी का स्थान	30	C3
4	(क) घनानन्द: पाठ्य पुस्तक : घनानन्द कवित्त; संपा.- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र पाठांश : पद संख्या 1 से 5 तक आलोचना : प्रेम वर्णन, भाषा एवं काव्य-कला (ख) भूषण : पाठ्य पुस्तक : रीति काव्य धारा; संपा – रामचन्द्र तिवारी पाठ्य छंद - 9, 10, 11, 12, 15, 24 आलोचना: वीरता की कविता, भाषा एवं काव्य कला	30	C4
	कुल संवाद-अवधि		**120**

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	3	2	3	2	3	2	3
CO2	3	3	3	2	3	3	3	2	3
CO3	3	3	3	2	3	3	3	3	3
CO4	3	3	3	2	3	3	3	2	3
Average	3	3	3	2	3	2.75	3	2.25	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. इकाई 2, 3 तथा 4 से व्याख्या पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x3 = 24
2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 14x4= 56

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं. डॉ. नगेन्द्र
3. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ. रामकुमार वर्मा
4. रीतिकाव्य की भूमिका : डॉ. नगेन्द्र
5. बिहारी का नया मूल्यांकन : बच्चन सिंह
6. घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा : मनोहर लाल गौड़
7. बिहारी सतसई : जगन्नाथ दास रत्नाकर
8. रीतिकालीन काव्य सिद्धांत : डॉ. सूर्यनारायण द्विवेदी
9. भूषण और उनका साहित्य : राजमल बोरा
10. शिवराज-भूषण तथा प्रकीर्ण रचना : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

द्वितीय सत्र

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

HIN-MC-1111

गद्य साहित्य : उपन्यास, नाटक एवं एकांकी

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. **:** इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को हिंदी उपन्यास, नाटक तथा एकांकी के उद्भव और विकास तथा तत्वों का ज्ञान प्राप्त होगा।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' का प्रतिपाद्य जान सकेंगे एवं समीक्षा कर सकेंगे तथा प्रेमचंद की उपन्यास कला से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी भारतेंदु हरिश्चंद की नाट्य-कला से अवगत हो सकेंगे और उनके नाटक 'अंधेर नगरी' का प्रतिपाद्य जान सकेंगे एवं समीक्षा कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी डॉ. रामकुमार वर्मा की एकांकी 'औरंगजेब की आखिरी रात' का प्रतिपाद्य जान सकेंगे एवं समीक्षा कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को हिंदी उपन्यास, नाटक तथा एकांकी के उद्भव और विकास तथा तत्वों का ज्ञान प्राप्त हुआ।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' का प्रतिपाद्य जान सके एवं समीक्षा भी कर सके तथा प्रेमचंद की उपन्यास-कला से परिचित हुए।

CO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी भारतेंदु हरिश्चंद की नाट्य-कला से अवगत हुए और उनके नाटक 'अंधेर नगरी' का प्रतिपाद्य जान सके एवं समीक्षा कर सके।

CO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी डॉ. रामकुमार वर्मा की एकांकी 'औरंगजेब की आखिरी रात' का प्रतिपाद्य जान सके एवं समीक्षा कर सके।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	उपन्यास :उपन्यास के तत्व; हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास। नाटक :नाटक के तत्व; हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास। एकांकी : हिंदी एकांकी का उद्भव और विकास तथा एकांकी के तत्व।	30	C1

2	**उपन्यासः** निर्मला : प्रेमचंद आलोचना : प्रेमचंद की उपन्यास-कला, पठित उपन्यास का प्रतिपाद्य, पठित उपन्यास की समीक्षा एवं चरित्र चित्रण।	30	C2
3	**नाटकः** अंधेर नगरी : भारतेंदु हरिश्चंद आलोचना : पठित नाटक की समीक्षा, प्रतिपाद्य एवं भारतेंदु हरिश्चंद की नाट्य-कला।	30	C3
4	**एकांकी :** औरंगजेब की आखिरी रात : डॉ. रामकुमार वर्मा आलोचना : पठित एकांकी की समीक्षा एवं प्रतिपाद्य।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	1	2	3	2	2	1	2
CO2	3	3	2	2	3	3	3	2	3
CO3	3	3	2	2	3	3	3	3	3
CO4	3	3	2	2	3	3	3	3	3
Average	3	3	1.75	2	3	2.75	2.75	2.25	2.75

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श तथा सामग्री-समीक्षा आदि।

निर्देशः

1. पाठ्यक्रम की इकाई 2, 3 तथा 4 से व्याख्या पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8X3 = 24
2. सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से चार आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। चारों प्रश्नों के लिये विकल्प भी होंगे। 14X4= 56

संदर्भ ग्रन्थः

1. प्रेमचन्द और उनका युग : रामविलास शर्मा
2. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद : डॉ. त्रिभुवन सिंह
3. हिन्दी उपन्यास का विकास : मधुरेश
4. हिन्दी गद्य साहित्य : रामचन्द्र तिवारी
5. हिन्दी गद्यः विन्यास और विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी
6. उपन्यास का शिल्प : गोपाल राय
7. उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा : परमानंद श्रीवास्तव

द्वितीय सत्र

HIN-MD-1210

साहित्य और सिनेमा

संवाद-अवधि	: 90
क्रेडिट	: 3
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)-

LO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी साहित्य की विभिन्न विधाओं, उनके स्वरूप, शिल्प और संवेदना का अध्ययन कर सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी हिंदी सिनेमा के इतिहास एवं हिंदी सिनेमा में प्रमुख पौराणिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक कृतियों के उपयोग का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी प्रमुख हिंदी उपन्यासकारों की कृतियों और उन पर बनी फिल्मों की समीक्षा कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी प्रमुख हिंदी कहानीकारों की कृतियों और उन पर बनी फिल्मों की समीक्षा कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने साहित्य की विभिन्न विधाओं, उनके स्वरूप, शिल्प और संवेदना का अध्ययन किया।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने हिंदी सिनेमा के इतिहास एवं हिंदी सिनेमा में प्रमुख पौराणिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक कृतियों के उपयोग का ज्ञान प्राप्त किया।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने प्रमुख हिंदी उपन्यासकारों की कृतियों और उन पर बनी फिल्मों की समीक्षा की।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने प्रमुख हिंदी कहानीकारों की कृतियों और उन पर बनी फिल्मों की समीक्षा की।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	**साहित्य का अर्थ : क्षेत्र विस्तार** साहित्य की विधाएँ : कहानी, उपन्यास और नाटक, निबंध, आत्मकथा, संस्मरण, यात्रा वृतांत, जीवनी आदि , साहित्य के उपकरण : शिल्प और संवेदना।	24	C1
2	हिंदी सिनेमा का इतिहास, हिंदी सिनेमा में प्रमुख पौराणिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक कृतियों का उपयोग।	18	C2

3	भारतीय फिल्मों का विकास और हिंदी उपन्यास, हिंदी उपन्यास पर बनी फिल्म की समीक्षा।	24	C3
4	फिल्मों का विकास और हिंदी कहानी, हिंदी कहानियों पर बनी फिल्मों की समीक्षा।	24	C4
	कुल संवाद-अवधि		**90**

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	3	3	3	2	3	3
CO2	3	3	3	3	3	3	3	3	3
CO3	3	3	2	3	3	3	2	3	3
CO4	3	3	2	3	3	2	2	3	3
Average	3	3	2.25	3	3	2.75	2.25	3	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प होंगे। 15x4= 60
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4 =20

सहायक ग्रंथ-

1. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक : हर्षदेव
2. जनमाध्यम : पीटर गोल्डिंग
3. जनमाध्यम सैद्धांतिकी : जगदीश्वर चतुर्वेदी
4. सिनेमा और साहित्य : हरीश कुमार
5. 'वसुधा' पत्रिका : फिल्म विशेषांक
6. सिनेमा और संस्कृति : राही मासूम रज़ा
7. 'हंस' पत्रिका : फिल्म विशेषांक

द्वितीय सत्र

HIN-AE-1210

पटकथा तथा संवाद लेखन

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. **:** इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को पटकथा एवं संवाद लेखन की जानकारी प्राप्त हो सकेगी तथा वे पटकथा लेखन की कला को भली-भांति जान सकेंगे।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमता तथा कल्पनाशक्ति का विकास होगा।

LO3. विद्यार्थी को कहानी, कविता, उपन्यास के दृश्य-रूपान्तरण करने की कला का ज्ञान होगा तथा उनमें संवाद-रचना कौशल का विकास हो सकेगा।

LO4. विद्यार्थियों में आधुनिक तकनीक के साथ पटकथा के संवादों में सामंजस्य स्थापित करने की कला का विकास होगा।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को पटकथा एवं संवाद लेखन की जानकारी प्राप्त हुई तथा वे पटकथा लेखन की कला से अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमता तथा कल्पनाशक्ति का विकास हुआ।

CO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी कहानी, कविता, उपन्यास के दृश्य-रूपान्तरण करने की कला से अवगत हुए तथा उनमें संवाद-रचना कौशल का विकास हुआ।

CO4. विद्यार्थियों में आधुनिक तकनीक के साथ पटकथा के संवादों में सामंजस्य स्थापित करने की कला का विकास हुआ।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	पटकथा का अर्थ और परिभाषा, पटकथा लेखन में प्रतिभा, कल्पना और अभ्यास का महत्व।	30	C1
2	संवाद का अर्थ और पटकथा से संवाद का संबंध, कथा और पटकथा में अन्तर।	30	C2

3	पटकथा लेखन का स्वरूप : प्रस्तावना, संघर्ष और समाधान। पटकथा लेखन के चरण - प्रारंभ, मध्य-भाग और अंत।	30	C3
4	पटकथा और संवाद लेखन : पटकथा के फिल्मांकन की तकनीक, पटकथा-संवाद और संगीत ध्वनि का अंतर्संबंध।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	1	2	2	3	2	3	2	3	3
CO2	1	3	2	3	2	3	2	3	2
CO3	1	3	3	2	1	3	2	3	1
CO4	-	2	2	3	1	3	2	3	2
Average	0.75	2.50	2.25	2.75	1.50	3	2	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4 =20

सहायक ग्रंथ-

1. पटकथा लेखन : मनोहर श्याम जोशी,
2. पटकथा कैसे लिखें : राजेद्र पाण्डेय
3. कथा पटकथा : मन्नू भंडारी
4. पटकथा लेखन : असगर वजाहत
5. पटकथा लेखन : रामशरण जोशी

द्वितीय सत्र

HIN-SE-0020

सृजनात्मक लेखन

संवाद-अवधि	: 90
क्रेडिट	: 3
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. **:** इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में सृजनात्मक लेखन की अवधारणा और सिद्धांत की समझ विकसित हो सकेगी।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी सृजनात्मक लेखन के भाषा सन्दर्भ से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी रचना-कौशल विश्लेषण से अवगत हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी कविता, कहानी तथा अन्य गद्य विधाओं की आधारभूत संरचना और उसके व्यावसायिक अनुप्रयोग से परिचित हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. **:** इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में सृजनात्मक लेखन की अवधारणा और सिद्धांत की समझ विकसित हुई।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी सृजनात्मक लेखन के भाषा सन्दर्भ से परिचित हुए।

CO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी रचना-कौशल विश्लेषण से अवगत हुए।

CO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी कविता, कहानी तथा अन्य गद्य विधाओं की आधारभूत संरचना और उसके व्यावसायिक अनुप्रयोग से परिचित हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	**सृजनात्मक लेखन: अवधारणा, स्वरूप एवं सिद्धांत** भाव एवं विचार की रचना में रूपांतरण की प्रक्रिया: विविध अभिव्यक्ति-क्षेत्र: साहित्य, पत्रकारिता, विज्ञापन, विविध गद्य अभिव्यक्तियाँ; संभाषण और लोकप्रिय संस्कृति ।	25	C1
2	**सृजनात्मक लेखन: भाषा-संदर्भ**	25	C2

	अर्थ निर्मित के आधारः शब्दार्थ-मीमांसा, शब्द के प्राक्-प्रयोग, नव्य-प्रयोग, शब्द की व्याकरणिक कोटि; भाषा की भंगिमाएं, भाषिक संदर्भः क्षेत्रीय, वर्ग-सापेक्ष, समूह-सापेक्ष।		
3	**सृजनात्मक लेखनः रचना-कौशल विश्लेषण** रचना-सौष्ठवः शब्द-शक्ति , प्रतीक, बिम्ब, अलंकरण और वक्रताएँ।	20	C3
4	**विविध विधाओं की आधारभूत संरचनाओं का व्यावहारिक अध्ययन** (क) कविताः संवेदना, काव्यरूप, भाषा-सौष्ठव, छंद, लय, गति और तुक (ख) कथा-साहित्यः वस्तु, पात्र, परिवेश एवं विमर्श (ग) नाट्य-साहित्यः वस्तु, पात्र, परिवेश वं रंगकर्म (घ) विविध गद्य-विधाएँ: निबंध, संस्मरण, व्यंग्य, बाल-साहित्य आदि की आधारभूत संरचना	20	C4
	कुल संवाद-अवधि		**60**

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	-	3	2	2	2	3	3	3	1
CO2	2	3	2	3	2	3	3	3	1
CO3	1	3	2	3	1	3	3	2	1
CO4	3	3	3	3	2	3	3	3	2
Average	1.50	3	2.25	2.75	1.75	3	3	2.75	1.25

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60

2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4 =20

सहायक ग्रंथ-

1. रचनात्मक लेखन : सं. रमेश गौतम
2. रचनात्मक लेखन : हरीश अरोड़ा, अनिल कुमार सिंह
3. सृजनात्मक लेखन : राजेंद्र मिश्र

तृतीय सत्र

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

HIN-CC-2110
आधुनिक काल: इतिहास एवं रचनाएँ- 1

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, हिंदी नवजागरण की परिस्थितियों, प्रवृत्तियों तथा भारतेंदु युग से छायावाद तक की काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन कर सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी भारतेंदु हरिश्चंद तथा जगन्नाथदास 'रत्नाकर'की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन कर सकेंगे। भारतेंदु की काव्य-कला तथा जगन्नाथदास 'रत्नाकर' के काव्य-सौष्ठव से अवगत हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी मैथिलीशरण गुप्त और रामनरेश त्रिपाठी की चयनित कविताओं की व्याख्या और आलोचना का अध्ययन कर सकेंगे। मैथिलीशरण गुप्त की काव्यगत विशेषताओं और रामनरेश त्रिपाठी के काव्य-सौष्ठव से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की चयनित कविताओं की व्याख्या एवं मीमांसा से अवगत हो सकेंगे। जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की काव्य-कला से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, हिंदी नवजागरण की परिस्थितियों, प्रवृत्तियों तथा भारतेंदु युग से छायावाद तक की काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन किया।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने भारतेंदु हरिश्चंद तथा जगन्नाथदास 'रत्नाकर' की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया। साथ ही भारतेंदु की काव्य-कला तथा जगन्नाथदास 'रत्नाकर' के काव्य-सौष्ठव से अवगत हुए।

CO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों ने मैथिलीशरण गुप्त और रामनरेश त्रिपाठी की चयनित कविताओं की व्याख्या और आलोचना का अध्ययन किया तथा मैथिलीशरण गुप्त की काव्यगत विशेषताओं और रामनरेश त्रिपाठी के काव्य-सौष्ठव का परिचय प्राप्त किया।

CO4. विद्यार्थी जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की चयनित कविताओं की व्याख्या एवं मीमांसा से अवगत हुए। जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की काव्य-कला से अवगत हुए।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, हिंदी नवजागरण, परिस्थितियाँ, प्रवृत्तियाँ, भारतेंदु युग की काव्यगत विशेषताएँ, द्विवेदीयुग की काव्यगत विशेषताएँ,तथा छायावाद की काव्यगत विशेषताएँ।	30	C1
2	क- भारतेंदु हरिश्चंद : पाठ्य कविता : प्रेम माधुरी आलोचना: हिंदी साहित्य में भारतेंदु का योगदान, प्रेम माधुरी का काव्य-सौष्ठव और भारतेंदु की काव्य-कला ख- जगन्नाथदास 'रत्नाकर': पाठ्य पुस्तक: उद्धव शतक पाठांश : उद्धव का मथुरा से ब्रज जाना आलोचना: भ्रमरगीत परम्परा और जगन्नाथदास 'रत्नाकर', जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का काव्य-सौष्ठव तथा पठित कविता का प्रतिपाद्य	30	C2
3	(क) मैथिलीशरण गुप्त : पाठ्य पुस्तक : भारत-भारती पाठांश: वर्तमान खंड (1. दुर्भिक्ष 2. कृषि और कृषक) आलोचना: राष्ट्रीय आन्दोलन की चेतना और मैथिलीशरण गुप्त, मैथिलीशरण गुप्त की काव्यगत विशेषताएँ तथा पठित कविताओं का प्रतिपाद्य (ख) रामनरेश त्रिपाठी : पाठ्य पुस्तक: स्वप्न :पाठ्य कविता: स्वदेश प्रेम आलोचना: रामनरेश त्रिपाठी की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना, रामनरेश त्रिपाठी का काव्य-सौष्ठव तथा पठित कविता का प्रतिपाद्य	30	C3
4	(क) जयशंकर प्रसाद : पाठ्य कविता: मेरे नाविक, बीती विभावरी जाग री आलोचना: छायावादी काव्य प्रवृत्तियाँ और जयशंकर प्रसाद, पठित कविताओं की काव्यगत विशेषताएँ तथा जयशंकर प्रसाद की काव्य-कला (ख) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : पाठ्य कविता: जूही की कली तथा कुकुरमुत्ता आलोचना: छायावादी काव्य प्रवृत्तियाँ और निराला का काव्य, पठित कविताओं की काव्यगत विशेषताएँ तथा निराला की काव्य-कला	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	1	2	3	2	2	1	2
CO2	3	1	3	2	3	3	2	2	2
CO3	3	1	3	2	3	3	2	2	2
CO4	3	1	3	2	3	3	2	2	2
Average	3	1.25	2.50	2	3	2.75	2	1.75	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. पाठ्यक्रम की इकाई 2, 3 तथा 4 से व्याख्या पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8 X3 = 24

2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 14 x4= 56

सहायक ग्रन्थ :

1. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. हिन्दी साहित्य का अतीत : भाग 1,2 - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, ब्रहमनाल, वाराणसी
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली
4. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद
5. हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी - नन्ददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रका. इलाहाबाद
6. हिन्दी साहित्य : बीसवी शताब्दी - नन्द दुलारे वाजपेयी
7. हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष - शिवदान सिंह चौहान
8. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह
9. जयशंकर प्रसाद - नन्द दुलारे वाजपेयी
10. प्रसाद और उनका साहित्य - विनोद शंकर व्यास
11. जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला - डॉ रामेश्वर खण्डेलवाल
12. प्रसाद का काव्य - डॉ. प्रेमशंकर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. निराला की साहित्य साधना, भाग 1,2,3 - डॉ. रामविलास शर्मा
14. निराला एक आत्महन्ता आस्था - दूधनाथ सिंह, लोक भारती, इलाहाबाद
15. छायावाद - डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
16. क्रांतिकारी कवि निराला - डॉ. बच्चन सिंह
17. मैथिलीशरण गुप्त - रेवती रमण
18. रामनरेश त्रिपाठी -साहित्य अकादमी

तृतीय सत्र

HIN-CC-2120
हिंदी कहानी-1

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)-

LO1. इस पत्र के अध्ययन से छात्र हिंदी कहानी के उद्भव-विकास की पृष्ठभूमि को जान पाएंगे। हिंदी कहानी के क्रमिक विकास तथा कहानियों की विभिन्न प्रवृत्तियों से भी अवगत हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला), चंद्रधर शर्मा गुलेरी तथा प्रेमचंद की चयनित कहानियों की समीक्षा कर सकेंगे तथा कहानीकारों की कहानी-कला से अवगत हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', यशपाल और भीष्म साहनी की चयनित कहानियों की समीक्षा कर सकेंगे तथा कहानीकारों की कहानी-कला से अवगत हो सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी फणीश्वरनाथ रेणु, हरिशंकर परसाई तथा ओमप्रकाश वाल्मीकि की चयनित कहानियों की समीक्षा कर सकेंगे तथा कहानीकारों की कहानी-कला से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)-

CO1. इस पत्र के अध्ययन से छात्र हिंदी कहानी के उद्भव-विकास की पृष्ठभूमि को जान पाए तथा हिंदी कहानी के क्रमिक विकास तथा कहानियों की विभिन्न प्रवृत्तियों से भी अवगत हुए।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला), चंद्रधर शर्मा गुलेरी तथा प्रेमचंद की चयनित कहानियों की समीक्षा कर सके तथा कहानीकारों की कहानी-कला से अवगत हुए।

LO3. विद्यार्थी पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', यशपाल और भीष्म साहनी की चयनित कहानियों की समीक्षा कर सके तथा कहानीकारों की कहानी-कला से अवगत हुए।

LO4. विद्यार्थी फणीश्वरनाथ रेणु, हरिशंकर परसाई तथा ओमप्रकाश वाल्मीकि की चयनित कहानियों की समीक्षा कर सके तथा कहानीकारों की कहानी-कला से अवगत हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	हिंदी कहानी का उद्भव और विकास, हिंदी की प्रारम्भिक कहानियाँ , प्रेमचंदयुगीन कहानियाँ, प्रेमचंदोत्तर कहानियाँ, साठोत्तरी कहानियाँ।	30	C1

2	राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला) : चंद्रदेव से मेरी बातें चंद्रधर शर्मा गुलेरी : उसने कहा था प्रेमचंद : ईदगाह आलोचना :पठित कहानियों की समीक्षा एवं कहानीकारों की कहानी-कला।	30	C2
3	पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' : उसकी माँ यशपाल : शम्बूक भीष्म साहनी : चीफ की दावत आलोचना :पठित कहानियों की समीक्षा एवं कहानीकारों की कहानी-कला।	30	C3
4	फणीश्वरनाथ रेणु : तीसरी कसम हरिशंकर परसाई : इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर ओमप्रकाश वाल्मीकि : सलाम आलोचना : पठित कहानियों की समीक्षा एवं कहानीकारों की कहानी-कला।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	2	2	3	2	2	-	2
CO2	3	3	2	1	3	3	2	2	3
CO3	3	3	2	1	3	3	2	2	3
CO4	3	3	2	1	3	3	2	2	3
Average	3	2.75	2	1.25	3	2.75	2	1.50	2.75

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. पाठ्यक्रम की इकाई 2, 3 तथा 4 से व्याख्या पूछी जाएगी जिसके विकल्प भी होंगे। 8 X3 = 24

2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 14 x4= 56

सहायक ग्रन्थ

1. प्रेमचन्द और उनका युग : रामविलास शर्मा
2. कहानीः नयी कहानी : डॉ. नामवर सिंह
3. हिंदी कहानी का विकास (तीन खंड में) : गोपाल राय
4. कुछ कहानियां : कुछ विचार : विश्वनाथ त्रिपाठी
5. हिन्दी कहानी का विकास : मधुरेश
6. हिन्दी गद्य साहित्य : रामचन्द्र तिवारी
7. हिन्दी गद्यः विन्यास और विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी
8. हिंदी की चर्चित कहानियाँ: पुनर्मूल्यांकन : डॉ. कुसुम वार्षणेय

तृतीय सत्र

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

HIN-MC-2110
हिंदी आत्मकथा और जीवनी

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र को पढ़कर छात्र हिंदी आत्मकथा के उद्भव-विकास को जान पाएंगे। हिंदी आत्मकथा के क्रमिक विकास से भी छात्र अवगत हो सकेंगे।

LO2. गाँधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' को पढ़कर गाँधी जी द्वारा स्थापित मूल्यों से छात्र परिचित हो सकेंगे। पठित आत्मकथा के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा आत्मकथा के तत्वों के आधार पर समीक्षा भी कर सकेंगे।

LO3. इस पत्र को पढ़कर विद्यार्थी हिंदी जीवनी लेखन का इतिहास, जीवनी की परिभाषा, स्वरूप, जीवनी के प्रकार तथा जीवनी के तत्वों को जान सकेंगे।

LO4. 'मेरे बाबूजी' नामक जीवनी को पढ़कर छात्र हिंदी के महान जनकवि नागार्जुन के जीवन और रचना कर्म से भली-भांति परिचित हो सकेंगे। पठित जीवनी के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा जीवनी के तत्वों के आधार पर समीक्षा भी कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र को पढ़कर छात्र हिंदी आत्मकथा के उद्भव-विकास को जान पाए तथा हिंदी आत्मकथा के क्रमिक विकास से भी अवगत हुए।

CO2. गाँधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' को पढ़कर गाँधी जी द्वारा स्थापित मूल्यों से छात्र परिचित हुए। पठित आत्मकथा के प्रतिपाद्य को जान सके तथा आत्मकथा के तत्वों के आधार पर समीक्षा भी की।

CO3. इस पत्र को पढ़कर विद्यार्थी हिंदी जीवनी लेखन का इतिहास, जीवनी की परिभाषा, स्वरूप, जीवनी के प्रकार तथा जीवनी के तत्वों को जान सके।

CO4. 'मेरे बाबूजी' नामक जीवनी को पढ़कर छात्र हिंदी के महान जनकवि नागार्जुन के जीवन और रचना कर्म से भली-भांति परिचित हुए। पठित जीवनी के प्रतिपाद्य को जान सके तथा जीवनी के तत्वों के आधार पर समीक्षा भी की।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	हिंदी आत्मकथा: उद्भव और विकास : आत्मकथा की परिभाषा, स्वरूप, आत्मकथा के प्रकार तथा आत्मकथा के तत्त्व।	30	C1

2	महात्मा गाँधी : सत्य के प्रयोग आलोचना : पठित आत्मकथा के आधार पर महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व एवं विचार, आत्मकथा के तत्वों के आधार पर समीक्षा तथा प्रतिपाद्य।	30	C2
3	हिंदी जीवनी लेखन का इतिहास, जीवनी की परिभाषा, स्वरूप, जीवनी के प्रकार तथा जीवनी के तत्त्व।	30	C3
4	शोभाकांत: मेरे बाबूजी आलोचना : पठित जीवनी के आधार पर नागार्जुन के व्यक्तित्व एवं विचार, जीवनी के तत्वों के आधार पर समीक्षा तथा प्रतिपाद्य।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	1	2	1	3	3	2	1	1
CO2	3	3	2	2	3	3	2	1	3
CO3	3	1	2	1	3	3	2	1	1
CO4	3	3	2	2	3	3	2	1	3
Average	3	2	2	1.50	3	3	2	1	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. पाठ्यक्रम की इकाई 2 तथा 4 से व्याख्या पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x2 = 16

2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 16 x4=64

सहायक ग्रन्थ

1. समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य - रामस्वरूप चतुर्वेदी,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. हिन्दी जीवनी साहित्य: सिद्धान्त और अध्ययन - डॉ. भगवानशरण भारद्वाज, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिन्दी गद्य का विकास - डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
4. आत्मकथा की संस्कृति - पंकज चतुर्वेदी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. गाँधी की आत्मकथा- मेरे सत्य के प्रयोग - दिव्यांश पब्लिकेशन्स, लखनऊ
6. गाँधी और हमारा समय - श्रीभगवान सिंह, यश पब्लिकेशन्स
7. गाँधी के आश्रम से सन्देश हैं - भगवान सिंह, यश पब्लिकेशन्स
8. गाँधी की सुन्दरता- महात्मा में मानुष की खोज - सुशोभित

तृतीय सत्र

HIN-MD-1310

कम्प्यूटर-अनुप्रयोग : तकनीकी संसाधन एवं उपकरण

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों को कंप्यूटर अनुप्रयोग से सम्बन्धित तकनीकी पक्षों एवं अनिवार्य उपकरणों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

LO2. कंप्यूटर का परिचय और उसके प्रकार्य को विद्यार्थी अंतर्विषयक ज्ञान के रूप में सीख पाएंगे।

LO3. विद्यार्थी कंप्यूटर के भाषाई अनुप्रयोग सम्बन्धी दक्षता और कुशलता से परिचित हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को कंप्यूटर से जुड़ी प्रविधियों तथा इंटरनेट की बदलती शब्दावली एवं स्वरूप को समझने की दृष्टि प्राप्त होगी।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों ने कंप्यूटर अनुप्रयोग से सम्बन्धित तकनीकी पक्षों एवं अनिवार्य उपकरणों की जानकारी प्राप्त की।

CO2. कंप्यूटर का परिचय और उसके प्रकार्य को विद्यार्थी अंतर्विषयक ज्ञान के रूप में सीख सके।

CO3. विद्यार्थी कंप्यूटर के भाषाई अनुप्रयोग सम्बन्धी दक्षता और कुशलता से परिचित हुए।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को कंप्यूटर से जुड़ी प्रविधियों तथा इंटरनेट की बदलती शब्दावली एवं स्वरूप को समझने की दृष्टि प्राप्त हुई।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	**कम्प्यूटर : परिचय एवं प्रकार्य** कम्प्यूटर की विकास यात्रा, कम्प्यूटर की कार्यप्रणाली, कम्प्यूटर के विभिन्न घटक, कम्प्यूटर की संरचना (हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर), कम्प्यूटर का उपयोग तथा क्षेत्र।	30	C1

2	**भाषाई कम्प्यूटर और अनुप्रयोग** भाषाई कम्प्यूटर का भविष्य, यूनीकोड की जानकारी, यूनीकोड का प्रयोग, हिंदी लेखन, प्रकाशन व वेब प्रकाशन के आवश्यक औजार (वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, फॉण्ट प्रबंधन, विविध तकनीक)।	30	C2
3	**अनुप्रयुक्त कार्य और इंटरनेट** एम.एस. ऑफिस का अध्ययन (हिंदी के विभिन्न कुंजीपटलों के संदर्भ में), हिंदी में एक्सल शीट, पावर प्वॉइंट का निर्माण तथा पेज मेकर में कार्य, ब्लॉग-प्रकाशन, अपलोडिंग, डाउनलोडिंग, इंटरनेट पर सामग्री-सृजन, यू-ट्यूब, कम्प्यूटर सुरक्षा एवं वायरस, इंटरनेट पर सूचनाएं प्राप्त करने की विधियाँ।	30	C3
4	**इंटरनेट शब्दावली और बदलता स्वरूप** ब्राउजिंग, लिंक, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, ई-मेल भेजना/प्राप्त करना, फाइल,अटेचमेंट, फाइल शेयरिंग, फाइल कन्वर्जन, साइबर अपराध, इंटरनेट संबंधी कानून तथा आचार-संहिताएँ, इंटरनेट के खतरे, चुनौतियाँ एवं संभावनाएं।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	1	1	1	3	1	1	1	3	1
CO2	2	1	1	3	2	1	1	3	-
CO3	1	1	2	3	1	1	1	2	1
CO4	3	2	2	3	3	1	1	2	2
Average	1.75	1.25	1.50	3	1.75	1	1	2.50	1

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60

2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4 = 20

सहायक ग्रंथः

1. कम्प्यूटर एक परिचय - सं. संतोष चौबे
2. एम.एस. ऑफिस - विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभाग, भारत सरकार
3. कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग - विजय कुमार मल्होत्रा
4. इंटरनेट का संक्षिप्त इतिहास - ब्रूस स्टर्लिंग
5. कम्प्यूटर और हिंदी - हरिमोहन
6. समान्तर कोश - अरविन्द कुमार
7. तकनीकी सुलझनें - बालेन्दु शर्मा दधीच

तृतीय सत्र

HIN-SE-0030

राजभाषा हिंदी : अवधारणा एवं अनुप्रयोग

संवाद-अवधि	: 90
क्रेडिट	: 3
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को राजभाषा हिंदी के स्वरूप एवं क्षेत्र की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राजभाषा हिंदी की अवधारणा, आंतरिक एकता और भाषिक समन्वय सहित संविधान में राजभाषा हिंदी के प्रयोग संबंधी प्रावधानों से परिचित हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी राजभाषा हिंदी के विविध आयामों तथा हिंदी भाषा के विविध रूपों से अवगत हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राजभाषा हिंदी सम्बन्धी अनुप्रयोग तथा राजभाषा के विभिन्न क्षेत्रों और प्रकार्यों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने राजभाषा हिंदी के स्वरूप एवं क्षेत्र की जानकारी प्राप्त की।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राजभाषा हिंदी की अवधारणा, आंतरिक एकता और भाषिक समन्वय सहित संविधान में राजभाषा हिंदी के प्रयोग संबंधी प्रावधानों से परिचित हुए।

CO3. विद्यार्थी राजभाषा हिंदी के विविध आयामों तथा हिंदी भाषा के विविध रूपों से अवगत हुए।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने राजभाषा हिंदी सम्बन्धी अनुप्रयोग तथा राजभाषा के विभिन्न क्षेत्रों और प्रकार्यों की जानकारी प्राप्त की।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	**राजभाषा हिंदी : अर्थ एवं स्वरूप** राजभाषा हिंदी : अर्थ, परिभाषा एवं क्षेत्र; हिंदी के प्रचार-प्रसार सम्बन्धी प्रमुख संस्थाएं, त्रिभाषा सूत्र, आठवीं अनुसूची।	20	C1
2	**राजभाषा हिंदी के सांविधानिक प्रावधान** राजभाषा हिंदी की अवधारणा, आंतरिक एकता और भाषिक समन्वय का सामूहिक लक्ष्य, संविधान में राजभाषा हिंदी के प्रयोग संबंधी प्रावधान : अनुच्छेद 120,	30	C2

	अनुच्छेद 210, अनुच्छेद 343 से अनुच्छेद 351, देवनागरी लिपि और मानकीकरण की समस्या।		
3	**राजभाषा हिंदी के विविध आयाम** हिंदी भाषा के विविध रूप: राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा, मानक भाषा के रूप में हिंदी; राजभाषा कार्यान्वयन : राष्ट्रपति के आदेश, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम, राजभाषा के रूप में हिंदी की भूमिका और चुनौतियाँ।	20	C3
4	**राजभाषा हिंदी सम्बन्धी अनुप्रयोग** राजभाषा विभाग, संसदीय राजभाषा समिति, राजभाषा आयोग : गठन और मुख्य सिफारिशें, राजभाषा के विभिन्न क्षेत्र और प्रकार्य, राजभाषा हिंदी में नवाचार और ऑनलाइन टूल्स।	20	C4
	कुल संवाद-अवधि	**90**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	2	3	3	1	1	3	1
CO2	3	-	1	3	1	1	-	3	2
CO3	3	1	1	3	3	1	1	3	2
CO4	3	1	1	3	3	1	1	3	2
Average	3	1	1.25	3	2.50	1	0.75	3	1.75

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4 = 60

2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4 = 20

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

सहायक ग्रंथ-

1. राजभाषा सहुलियतकार (कार्यान्वयन मार्गदर्शिका) - डॉ. वी. वेंकटेश्वर राव
2. राजभाषा-सन्दर्भ और प्रशासनिक हिंदी - छबिल कुमार मेहेर
3. राजभाषा के आन्दोलन में हिन्दी आंदोलन काइतिहास - राजनारायण दुबे, प्रकाशन संस्थान

4. राजभाषा हिन्दीः समस्याएँ और समाधान - आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, लोक भारती
5. राजभाषा हिन्दी - गोविन्द दास, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
6. राष्ट्रभाषा की समस्या - रामविलास शर्मा, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली
7. हिन्दी भाषा की संरचना - भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. हिन्दी भाषा - डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया, साहित्य भवन
9. नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी - अनंत चौधरी, बिहारी हिन्दी ग्रंथ अकादमी
10. नागरी लिपि और उसकी समस्याएँ - नरेश मिश्र, मंथन प्रकाशन, रोहतक
11. हिंदी भाषा और नागरी लिपि - डॉ. भोलानाथ तिवारी, लोक भारती, इलाहाबाद
12. राजभाषा हिंदी विकास के विविध आयाम - डॉ. मलिक मुहम्मद

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

चतुर्थ सत्र

HIN-CC-2210
हिंदी भाषा एवं भाषा विज्ञान

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी भाषा की परिभाषा तथा अभिलक्षण, भाषा विज्ञान के अध्ययन की विभिन्न दिशाओं तथा भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओं से सम्बन्ध को जान सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी ध्वनि विज्ञान के विभिन्न अवयवों का अध्ययन कर सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी अर्थ विज्ञान एवं रूप विज्ञान के विभिन्न पक्षों का अध्ययन कर सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी हिन्दी भाषा के इतिहास, हिन्दी की बोलियों के वर्गीकरण का सामान्य परिचय तथा देवनागरी लिपि के नामकरण, विशेषताएं एवं मानकीकरण के प्रयासों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी भाषा की परिभाषा तथा अभिलक्षण, भाषा विज्ञान के अध्ययन की विभिन्न दिशाओं तथा भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओं से सम्बन्ध को जान सके।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी ध्वनि विज्ञान के विभिन्न अवयवों से परिचित हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने अर्थ विज्ञान एवं रूप विज्ञान के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया।

CO4. विद्यार्थियों ने हिन्दी भाषा के इतिहास, हिन्दी की बोलियों के वर्गीकरण का सामान्य परिचय तथा देवनागरी लिपि के नामकरण,विशेषताएं एवं मानकीकरण के प्रयासों का ज्ञान प्राप्त किया।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	भाषा की परिभाषा तथा अभिलक्षण; भाषा विज्ञानः अध्ययन की दिशाएँ- वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक; भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओं से सम्बन्ध।	30	C1
2	**ध्वनि विज्ञानः**	30	C2

	स्वर स्वनों का वर्गीकरण, व्यंजन स्वनों का वर्गीकरण, मान स्वर, स्वन परिवर्तन की दिशाएँ और कारण।		
3	**अर्थ विज्ञान:** अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध, अर्थ परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ। **रूप विज्ञान:** रूपिम की अवधारणा, शब्द और पद के भेद, पद परिवर्तन के कारण।	30	C3
4	हिन्दी भाषा : हिंदी भाषा का इतिहास, हिन्दी की बोलियों का वर्गीकरण एवं सामान्य परिचय, भाषा और बोली में अंतर। देवनागरी लिपि : नामकरण, देवनागरी लिपि की विशेषताएं एवं मानकीकरण के प्रयास।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	2	2	2	2	1	2	2
CO2	3	2	2	3	1	1	1	3	2
CO3	3	2	2	3	1	1	1	3	2
CO4	3	2	2	3	1	1	1	3	2
Average	3	2	2	2.75	1.25	1.25	1	2.75	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4 = 20

सहायक ग्रन्थः

1.	भाषा विज्ञान की भूमिका	: देवेन्द्रनाथ शर्मा
2.	भाषा विज्ञान	: डॉ. भोलानाथ तिवारी
3.	भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र	: डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
4.	हिन्दी भाषा	: डॉ. भोलानाथ तिवारी
5.	हिन्दी भाषाः उद्भव और विकास	: डॉ. उदय नारायण तिवारी
6.	शब्दार्थ तत्त्व	: डॉ. शोभाकान्त मिश्र
7.	आधुनिक भाषा विज्ञान	: डॉ. राजमणि शर्मा
8.	हिन्दी भाषा का इतिहास	: डॉ.धीरेन्द्र वर्मा
9.	हिन्दी भाषाः स्वरूप और विकास	: कैलाशचन्द्र भाटिया
10.	भाषा और समाज	: रामविलास शर्मा
11.	भारतीय भाषा विज्ञान	: किशोरीदास वाजपेयी

चतुर्थ सत्र

HIN-CC-2220
हिंदी नाटक

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी नाटक, शब्द का अर्थ, स्वरूप एवं तत्व, हिंदी नाटक के उद्भव और विकास तथा हिंदी रंगमंच के सामान्य परिचय से अवगत हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक 'अंधेर नगरी' तथा जयशंकर प्रसाद के नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे, साथ ही नाटककारों की नाट्य-कला से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक 'सिंदूर की होली' तथा उपेन्द्रनाथ अश्क के नाटक 'अंजो दीदी' के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे साथ ही नाटककारों की नाट्य-कला से परिचित हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक 'बकरी' तथा शंकर शेष के नाटक 'एक और द्रोणाचार्य' के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे,साथ ही नाटककारों की नाट्य-कला से परिचित हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी नाटक शब्द के अर्थ, स्वरूप एवं तत्व, हिंदी नाटक के उद्भव और विकास तथा हिंदी रंगमंच के सामान्य परिचय से अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक'अंधेर नगरी' तथा जयशंकर प्रसाद के नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की, साथ ही नाटककारों की नाट्य-कला से परिचित हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक 'सिंदूर की होली' तथा उपेन्द्रनाथ अश्क के नाटक 'अंजो दीदी' के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा कर सके, साथ ही नाटककारों की नाट्य-कला से परिचित हुए।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक 'बकरी' तथा शंकर शेष के नाटक 'एक और द्रोणाचार्य' के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा कर सके, साथ ही नाटककारों की नाट्य-कला से परिचित हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	नाटक शब्द का अर्थ, स्वरूप एवं तत्व, हिंदी नाटक का उद्भव और विकास, हिंदी रंगमंच का सामान्य परिचय।	30	C1

2	भारतेंदु हरिश्चंद्र : अंधेर नगरी जयशंकर प्रसाद : ध्रुवस्वामिनी आलोचना : नाटककारों की नाट्य-कला, पठित नाटकों की समीक्षा और प्रतिपाद्य।	30	C2
3	लक्ष्मीनारायण लाल : सिन्दूर की होली उपेन्द्रनाथ अश्क : अंजो दीदी आलोचना : नाटककारों की नाट्य-कला, पठित नाटकों की समीक्षा और प्रतिपाद्य।	30	C3
4	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : बकरी शंकर शेष : एक और द्रोणाचार्य आलोचना : नाटककारों की नाट्य-कला, पठित नाटकों की समीक्षा और प्रतिपाद्य।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	1	3	3	2	2	2
CO2	3	3	2	2	2	3	2	1	2
CO3	3	3	2	2	2	3	2	1	2
CO4	3	3	2	2	2	3	2	1	2
Average	3	3	2	1.75	2.25	3	2	1.25	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. इकाई 2, 3 तथा 4 से व्याख्या पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x3 = 24
2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे,जिनके विकल्प भी होंगे। 14x4= 56

सहायक ग्रन्थ:

1.	हिंदी नाटक उद्भव और विकास	: डॉ.दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
2.	रंग दर्शन	: नेमिचंद्र जैन
3.	हिंदी नाटक	: बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन,नई दिल्ली
4.	हिंदी का गद्य साहित्य	: रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
5.	संक्षिप्त नाट्यशास्त्रम्	: राधावल्लभ त्रिपाठी
6.	हिंदी का गद्यपर्व	: नामवर सिंह, राजकमल
7.	रंगमंच : नया परिदृश्य	: रीतारानी पालीवाल
8.	मोहन राकेश का रंगमंच	: चंदन कुमार
9.	एकांकी और एकांकीकार	: रामचरण महेन्द्र
10.	हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष	: गिरीश रस्तोगी
11.	हिंदी नाटक और रंगमंच : नयी दिशाएँ, नए प्रश्न	: गिरीश रस्तोगी
12.	आधुनिक हिंदी नाटक	: डॉ. नगेन्द्र
13.	भारतीय नाट्य परंपरा	: नेमिचन्द्र जैन
14.	दो रंगपुरुष	: डॉ.जमुना बीनी, रीडिंग रूम्स, दिल्ली
15.	आधुनिक भारतीय नाटक	: डॉ. जयदेव तनेजा

चतुर्थ सत्र

HIN-CC-2230

कथेतर गद्य साहित्य

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. : इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी हिंदी की कथेतर गद्य विधाओं यथा - जीवनी,निबंध, आत्मकथा, यात्रा वृतांत, संस्मरण, डायरी, रेखाचित्र, पत्र साहित्य एवं रिपोर्ताज की परिभाषा एवं विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे ।

LO2. इस पत्र के माध्यम से शिवरानी देवी द्वारा लिखित जीवनी 'प्रेमचंद घर में' के आधार पर प्रेमचंद के जीवन और रचना कर्म से विद्यार्थियों को अवगत कराया जाएगा तथा विद्यार्थी एक सफल जीवनी के रूप में 'प्रेमचंद घर में' की समीक्षा कर सकेंगे। चयनित निबंधकारों के पठित निबंधों के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे और समीक्षा कर सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी चयनित आत्मकथा 'आपहुदरी' की समीक्षा कर सकेंगे तथा रमणिका गुप्ता के रचना संसार को जान सकेंगे। विद्यार्थी रेखाचित्रकारों के पठित रेखाचित्रों के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे और समीक्षा कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राहुल सांकृत्यायन के यात्रा वृतांत 'मेरी तिब्बत यात्रा' के प्रथम खंड का अध्ययन कर सकेंगे तथा राहुल जी के यात्रा साहित्य की विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे। चयनित संस्मरण और रिपोर्ताज के पठित पाठों की समीक्षा कर सकेंगे तथा लेखकों के परिचय को जान सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. : इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी हिंदी की कथेतर गद्य विधाओं यथा - जीवनी,निबंध, आत्मकथा, यात्रा वृतांत, संस्मरण, डायरी, रेखाचित्र, पत्र साहित्य एवं रिपोर्ताज की परिभाषा एवं विशेषताओं से अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के माध्यम से शिवरानी देवी द्वारा लिखित जीवनी 'प्रेमचंद घर में' के आधार पर प्रेमचंद के जीवन और रचना कर्म से विद्यार्थी अवगत हुए तथा एक सफल जीवनी के रूप में 'प्रेमचंद घर में' की समीक्षा की। चयनित निबंधकारों के पठित निबंधों के प्रतिपाद्य को जान सके और समीक्षा की।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी चयनित आत्मकथा 'आपहुदरी' की समीक्षा कर सके तथा रमणिका गुप्ता के रचना संसार को जान सके। विद्यार्थी रेखाचित्रकारों के पठित रेखाचित्रों के प्रतिपाद्य को जान सके और समीक्षा की।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने राहुल सांकृत्यायन के यात्रा-वृतांत 'मेरी तिब्बत यात्रा' के प्रथम खंड का अध्ययन किया तथा राहुल जी के यात्रा-साहित्य की विशेषताओं से अवगत हुए। चयनित संस्मरण और रिपोर्ताज के पठित पाठों की समीक्षा की तथा लेखकों के परिचय को जान सके।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	हिंदी की कथेतर गद्य विधाएं: परिभाषा एवं विशेषताएँ: जीवनी,निबंध, आत्मकथा, यात्रा वृतांत,संस्मरण, डायरी, रेखाचित्र, पत्र साहित्य एवं रिपोर्ताज।	30	C1
2	**क. जीवनी:** • प्रेमचंद घर में : शिवरानी देवी आलोचना: जीवनी साहित्य का स्वरूप, प्रेमचंद का जीवन और रचना कर्म, एक सफल जीवनी के रूप में 'प्रेमचंद घर में' की समीक्षा। **ख. निबंध:** • सरदार पूर्ण सिंह : मजदूरी और प्रेम • रामचन्द्र शुक्ल : ईर्ष्या • हजारी प्रसाद द्विवेदी : नाखून क्यों बढ़ते हैं आलोचना: पठित निबंधों की समीक्षा एवं प्रतिपाद्य।	30	C2
3	**क. आत्मकथा:** • आपहुदरी (एक जिद्दी लड़की की आत्मकथा) : रमणिका गुप्ता आलोचना: आत्मकथा का स्वरूप, आपहुदरी की समीक्षा, रमणिका गुप्ता का रचना संसार। **ख. रेखाचित्र** • महादेवी वर्मा : लछमा (पाठ्यपुस्तक : अतीत के चलचित्र) • रामवृक्ष बेनीपुरी : सुभान खाँ (पाठ्य पुस्तक : माटी की मूरतें) आलोचना: पठित रेखाचित्रों की समीक्षा एवं प्रतिपाद्य	30	C3
4	क. **यात्रा वृतांत** : पाठ्य पुस्तक: मेरी तिब्बत यात्रा : राहुल सांकृत्यायन **पाठ्यांश**: ल्हासा से उत्तर की ओर	30	C4

	आलोचना: हिन्दी यात्रा साहित्य और राहुल सांकृत्यायन, राहुल के यात्रा साहित्य की विशेषताएँ। **ख. संस्मरण तथा रिपोर्ताज** (पाठ्यपुस्तक : गद्य गौरव – सं. डॉ. ई. रा. स्वामी, राजकमल प्रकाशन) • रामकुमार वर्मा : महात्मा गाँधी • फणीश्वरनाथ रेणु : कुत्ते की आवाज़ (ऋणजल-धनजल) ।चना: संस्मरण तथा रिपोर्ताज का स्वरूप, पठित पाठों की समीक्षा एवं लेखक परिचय।		
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	2	3	3	2	1	3
CO2	3	3	2	2	3	3	2	1	3
CO3	3	3	2	2	3	3	2	1	3
CO4	3	3	2	2	3	3	2	1	3
Average	3	3	2	2	3	3	2	1	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देश:

1. इस पत्र की इकाई 2, 3 तथा 4 से व्याख्या पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8X3 = 24
2. प्रत्येक इकाई से चार आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 14X4= 56

सहायक ग्रंथ –

1. हिंदी का गद्य विन्यास और विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी
2. हिंदी गद्य साहित्य : रामचन्द्र तिवारी
3. हिंदी गद्य रूप सैद्धान्तिक विवेचन : निर्मला देवी श्रीवास्तव
4. हिंदी निबंध उद्भव और विकास : हरिचरण शर्मा
5. हिंदी का आधुनिक यात्रा साहित्य : प्रतापपाल शर्मा
6. गद्य की नई विधाओं का विकास : असद माजदा
7. गद्य की पहचान : अरुण प्रकाश
8. दूसरी परंपरा की खोज : नामवर सिंह
9. हिंदी ललित निबंध : स्वरूप विवेचन : वेदवती राठी
10. हिंदी जीवनी साहित्य : सिद्धांत और अध्ययन : डॉ. भगवानशरण भारद्वाज

चतुर्थ सत्र

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

HIN-CC-2240
हिंदी भक्ति काव्य

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को संत रैदास की काव्यगत विशेषताओं, भक्ति- भावना एवं समाज दर्शन से अवगत कराया जायेगा। चयनित पाठांश की व्याख्या की जाएगी।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को संत दादू दयाल की काव्यगत विशेषताओं, भक्ति- भावना एवं समाज दर्शन से अवगत कराया जायेगा। चयनित पाठांश की व्याख्या की जाएगी।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को मीराबाई की काव्यगत विशेषताओं, भक्ति- भावना एवं समाज दर्शन से अवगत कराया जायेगा। चयनित पाठांश की व्याख्या की जाएगी।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को रसखान की काव्यगत विशेषताओं, भक्ति- भावना एवं समाज दर्शन से अवगत कराया जायेगा। चयनित पाठांश की व्याख्या की जाएगी।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को संत रैदास की काव्यगत विशेषताओं, भक्ति- भावना एवं समाज दर्शन से अवगत कराया गया। चयनित पाठांश की व्याख्या की गयी।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को संत दादू दयाल की काव्यगत विशेषताओं, भक्ति-भावना एवं समाज दर्शन से अवगत कराया गया। चयनित पाठांश की व्याख्या की गयी।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को मीराबाई की काव्यगत विशेषताओं, भक्ति-भावना एवं समाज दर्शन से अवगत कराया गया। चयनित पाठांश की व्याख्या की गयी।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को रसखान की काव्यगत विशेषताओं, भक्ति-भावना एवं समाज दर्शन से अवगत कराया गया। चयनित पाठांश की व्याख्या की गयी।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	रैदास : पाठ्य पुस्तक : संत काव्य – संपादक आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, इलाहाबाद पाठांश : साखी – 1 से 14 तक	30	C1
2	दादू दयाल : पाठ्य पुस्तक : संत काव्य – संपादक आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, इलाहाबाद पाठांश : साखी – 1 से 25 तक	30	C2
3	मीराबाई : पाठ्य पुस्तक : मीराबाई की पदावली : सं परशुराम चतुर्वेदी पाठांश: पद संख्या – 1 से 10	30	C3
4	पाठ्य पुस्तक: रसखान रचनावली : सं विद्यानिवास मिश्र पाठांश : पद संख्या – 1 से 10 **आलोचना बिंदु** – सन्त साहित्य की विशेषताएं, पठित संतों एवं भक्तों की काव्यगत विशेषताएं, पठित रचनाकारों की भक्ति भावना तथा समाज दर्शन।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	3	2	3	3	3	1	3
CO2	3	3	3	2	3	3	3	1	3
CO3	3	3	3	2	3	3	3	1	3
CO4	3	3	3	2	3	3	3	1	3
Average	3	3	3	2	3	3	3	1	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. प्रत्येक इकाई से एक-एक व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x4 = 32
2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12x4= 48

सहायक ग्रंथ :

1. नाथ सम्प्रदाय : हजारीप्रसाद द्विवेदी, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी।
2. हिन्दी साहित्य में निर्गुण सम्प्रदाय : डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल।
3. उत्तर भारत की संत परंपरा : परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, प्रयाग।
4. मध्ययुगीन निर्गुण चेतना : डॉ. धर्मपाल मैनी, लोकभारती, इलाहाबाद।
5. संतों के धार्मिक विश्वास : डॉ. धर्मपाल मैनी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
6. रैदास वाणी : डॉ. शुकदेव सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
7. कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन।
8. दादू पंथ : साहित्य और समाज दर्शन : डॉ. ओकेन लेगो, यश पब्लिकेशन, दिल्ली।
9. दादू दयाल : परशुराम चतुर्वेदी
10. संत साहित्य की समझ : नन्द किशोर पाण्डेय, यश पब्लिकेशन, दिल्ली।
11. सन्त रज्जब : नन्द किशोर पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
12. पंचरंग चोला पहन सखी री : माधव हाड़ा, वाणी प्रकाशन
13. जयदेव : आनन्द कुशवाहा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
15. रसखान : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
16. रसखान: जीवन और काव्य : डॉ. देवेन्द्र प्रताप उपाध्याय
17. मीराबाई की सम्पूर्ण पदावली : सं. रामकिशोर शर्मा, लोकभारती प्रकाशन
18. संत कवि दादू दयाल : बलदेव बंशी
19. दादू दयाल : रामबक्ष, साहित्य अकादमी
20. रसखान : साहित्य अकादमी

चतुर्थ सत्र

HIN-MC-3210
आधुनिक हिंदी कविता

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी माखनलाल चतुर्वेदी तथा बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन करेंगे।
LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी जयशंकर प्रसाद तथा सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन करेंगे।
LO3. विद्यार्थी रामधारी सिंह 'दिनकर' तथा गजानन माधव 'मुक्तिबोध'की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा कर सकेंगे।
LO4. विद्यार्थी शमशेर बहादुर सिंह तथा सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने माखनलाल चतुर्वेदी तथा बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया।
CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने जयशंकर प्रसाद तथा सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया।
CO3. विद्यार्थी रामधारी सिंह 'दिनकर' तथा गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा कर सके।
CO4. विद्यार्थी शमशेर बहादुर सिंह तथा सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा कर सके।

(पाठ्य पुस्तक : आधुनिक हिंदी काव्यधारा – डॉ. विजयपाल सिंह)

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	माखनलाल चतुर्वेदी : पाठ्य कविता- पुष्प की अभिलाषा, कैदी और कोकिला बालकृष्ण शर्मा नवीन : पाठ्य कविता- पराजय गीत, पथ निरीक्षण	30	C1
2	जयशंकर प्रसाद : पाठ्य कविता – कामायनी - लज्जा सर्ग	30	C2

	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : पाठ्य कविता - सरोज स्मृति		
3	रामधारी सिंह 'दिनकर' : पाठ्य कविता – हिमालय, नारी गजानन माधव 'मुक्तिबोध': पाठ्य कविता – चम्बल की घाटी में	30	C3
4	शमशेरबहादुर सिंह : पाठ्य कविता - बात बोलेगी, एक पीली शाम : पाठ्य कविता – मोचीराम आलोचना बिंदु : पठित कविताओं की विशेषताएँ, कवियों की काव्य-कला, पठित कविताओं का प्रतिपाद्य।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	3	2	3	3	3	1	3
CO2	3	3	3	2	3	3	3	1	3
CO3	3	3	3	2	3	3	3	1	3
CO4	3	3	3	2	3	3	3	1	3
Average	3	3	3	2	3	3	3	1	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. प्रत्येक इकाई से एक-एक व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x4 = 32
2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे,जिनके विकल्प भी रहेगा। 12x4= 48

सहायक ग्रंथ :

1. माखनलाल चतुर्वेदी का रचना संसार - डॉ. बद्रीप्रसाद विरमाल
2. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' - पवन कुमार मिश्र साहित्य अकादमी
3. जयशंकर प्रसाद - नन्द दुलारे वाजपेयी
4. प्रसाद और उनका साहित्य - विनोद शंकर व्यास

5. जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला - डॉ रामेश्वर खण्डेलवाल

6. प्रसाद का काव्य - डॉ. प्रेमशंकर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

7. निराला की साहित्य साधना, भाग 1,2,3 - डॉ. रामविलास शर्मा

8. निराला एक आत्महन्ता आस्था - दूधनाथ सिंह, लोक भारती, इलाहाबाद

9. छायावाद - डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

10. क्रांतिकारी कवि निराला - डॉ. बच्चन सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन

11. कामायनी अनुशीलन - रामलाल सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

12. दिनकर एक पुनर्विचार - कुमार निर्मलेंदु, लोकभारती प्रकाशन

13. छायावाद के कवि: प्रसाद, निराला और पन्त - विजय बहादुर सिंह, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली

14. धूमिल की कविता में विरोध और संघर्ष - नीलम सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन

15.धूमिल और उनका काव्य संघर्ष - ब्रह्मदेव मिश्र, लोकभारती प्रकाशन

16. रामधारी सिंह दिनकर - कुमार विमल, साहित्य अकादेमी

17. मुक्तिबोध: कविता और जीवन विवेक - चंद्रकांत देवताले, राजकमल प्रकाशन

18. मुक्तिबोध: ज्ञान और संवेदना - नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन

19. माखनलाल चतुर्वेदी का रचना संसार - डॉ. बद्रीप्रसाद विरमाल

20. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' - पवन कुमार मिश्र साहित्य अकादमी

पंचम सत्र

HIN-CC-3110

भारतीय काव्यशास्त्र

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास, काव्य-लक्षण, काव्य–प्रयोजन, काव्य-हेतु एवं काव्य के गुण-दोषों का अध्ययन कराया जायेगा।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी रस सिद्धांत का अध्ययन करेंगे और इसके अंतर्गत रस का स्वरूप, अवयव और उसके भेद, सभी रसों के लक्षण एवं उदाहरण से भी अवगत हो सकेंगे। ध्वनि सिद्धांत के अंतर्गत ध्वनि की परिभाषा तथा उसके भेदों से परिचित हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी अलंकार सिद्धांत की स्थापनाओं का अध्ययन कर सकेंगे तथा अलंकार के भेदों, विभिन्न अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण से भी अवगत हो सकेंगे। विद्यार्थी रीति सिद्धांत के अंतर्गत रीति का अर्थ एवं रीति के भेदों से परिचित हो सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी वक्रोक्ति सिद्धांत के अंतर्गत वक्रोक्ति की अवधारणा तथा उसके भेदों का अध्ययन कर सकेंगे, साथ ही औचित्य सिद्धांत की अवधारणा तथा उसके भेदों से भी अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र के संक्षिप्त इतिहास, काव्य-लक्षण, काव्य–प्रयोजन, काव्य-हेतु एवं काव्य के गुण-दोषों का अध्ययन किया।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने रस सिद्धांत का अध्ययन किया और इसके अंतर्गत रस का स्वरूप, अवयव और उसके भेद, सभी रसों के लक्षण एवं उदाहरण से भी अवगत हुए। ध्वनि सिद्धांत के अंतर्गत ध्वनि की परिभाषा तथा उसके भेदों से परिचित हुए।

CO3. विद्यार्थियों ने अलंकार सिद्धांत की स्थापनाओं का अध्ययन किया तथा अलंकार के भेदों, विभिन्न अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण से भी अवगत हुए। विद्यार्थी रीति सिद्धांत के अंतर्गत रीति का अर्थ एवं रीति के भेदों से परिचित हुए।

CO4. विद्यार्थियों ने वक्रोक्ति सिद्धांत के अंतर्गत वक्रोक्ति की अवधारणा तथा उसके भेदों का अध्ययन किया, साथ ही औचित्य सिद्धांत की अवधारणा तथा उसके भेदों से भी अवगत हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	भारतीय काव्यशास्त्रः भारतीय काव्यशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास; काव्य-लक्षण; काव्य–प्रयोजन; काव्य-हेतु; काव्य के गुण-दोष।	30	C1

2	(क) रस सिद्धांत : रस का स्वरूप, अवयव और भेद, सभी रसों का लक्षण एवं उदाहरण। (ख) ध्वनि सिद्धांत : ध्वनि की परिभाषा तथा उसके भेद।	30	C2
3	(क) अलंकार सिद्धांत : परिभाषा, उसके भेद, अलंकारों का लक्षण एवं उदाहरण – (अनुप्रास, उपमा, रूपक, यमक, अतिश्योक्ति, श्लेष, संदेह, विरोधाभास, पुनरुक्ति, उत्प्रेक्षा, अनन्वय, विभावना) (ख) रीति सिद्धांत : रीति का अर्थ, रीति के भेद।	30	C3
4	(क) वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति की अवधारणा तथा वक्रोक्ति के भेद। (ख) औचित्य सिद्धांत : औचित्य की अवधारणा तथा उनके भेद।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	3	2	3	2	3	3	1
CO2	2	3	3	2	3	2	3	3	1
CO3	2	3	3	2	3	2	3	3	1
CO4	2	3	3	2	3	2	3	3	1
Average	2	3	3	2	3	2	3	3	1

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 14x4= 56
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेंगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4= 20

सहायक ग्रन्थ:

1. संस्कृत आलोचना : बलदेव उपाध्याय
2. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र : डॉ. भगीरथ मिश्र
3. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना : डॉ. रामचन्द्र तिवारी
4. काव्यशास्त्र विमर्श : डॉ. कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध'
5. काव्यांग कौमुदी : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
6. काव्य के तत्त्व : देवेन्द्रनाथ शर्मा
7. भारतीय काव्यशास्त्र : सत्यदेव चौधरी
8. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका : डॉ. नगेन्द्र
9. रस मीमांसा : रामचन्द्र शुक्ल
10. भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज : डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

पंचम सत्र

HIN-CC-3120

आधुनिक काल: इतिहास एवं रचनाएँ- 2

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श एवं जनजातीय विमर्श के स्वरूप एवं प्रवृत्तियों की जानकारी दी जाएगी।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी नागार्जुन तथा अज्ञेय की चयनित कविताओं के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा रचनाकारों की काव्यगत विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी कुंवर नारायण तथा गगन गिल की चयनित कविताओं के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा रचनाकारों की काव्यगत विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी असंगघोष और निर्मला पुतुल की चयनित कविताओं के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा रचनाकारों की काव्यगत विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श एवं जनजातीय विमर्श के स्वरूप एवं प्रवृत्तियों की जानकारी दी गयी।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी नागार्जुन तथा अज्ञेय की चयनित कविताओं के प्रतिपाद्य को जान सके तथा रचनाकारों की काव्यगत विशेषताओं से अवगत हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी कुंवर नारायण तथा गगन गिल की चयनित कविताओं के प्रतिपाद्य को जान सके तथा रचनाकारों की काव्यगत विशेषताओं से अवगत हुए।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी असंगघोष और निर्मला पुतुल की चयनित कविताओं के प्रतिपाद्य को जान सके तथा रचनाकारों की काव्यगत विशेषताओं से अवगत हुए।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श एवं जनजातीय विमर्श: स्वरूप एवं प्रवृत्तियाँ।	30	C1
2	(क) नागार्जुन : कविताएँ: अकाल और उसके बाद, खुरदरे पैर। (ख) अज्ञेय : पाठ्य कविताएँ: यह द्वीप अकेला, कलगी बाजरे की। आलोचना बिंदु : नागार्जुन की जन पक्षधरता, अज्ञेय की प्रयोगधर्मिता, पठित कविताओं का प्रतिपाद्य, कवियों की काव्यगत विशेषताएँ।	30	C2
3	(क) कुंवर नारायण : पाठ्य कविता : नचिकेता (ख) गगन गिल : पाठ्य कविताएँ: एक दिन लौटेगी लड़की, यह लड़की जब उदास होगी। आलोचना बिंदु : कुंवर नारायण के काव्य में मिथकीय प्रयोग, गगन गिल की कविता एवं स्त्री विमर्श , पठित कविताओं का प्रतिपाद्य, कवियों की काव्यगत विशेषताएँ ।	30	C3
4	(क) असंगघोष : हम ही हटायेंगे कोहरा (ख) निर्मला पुतुल : पाठ्य कविताएँ : चुड़का सोरेन से, बिटिया मुर्मू के लिए। आलोचना बिंदु : असंगघोष की कविताओं में जाति का प्रश्न, निर्मला पुतुल के काव्य में अभिव्यक्त जनजातीय चेतना, पठित कविताओं का प्रतिपाद्य, कवियों की काव्यगत विशेषताएँ।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**1**	**2**
CO2	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**1**	**3**
CO3	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**1**	**3**
CO4	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**1**	**3**
Average	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**3**	**1**	**2.75**

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देशः

1. पाठ्यक्रम की इकाई 2, 3 तथा 4 से व्याख्या पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8X3 = 24
2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 14x4= 56

सहायक ग्रन्थ :

1. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ - नामवर सिंह
2. विजयदेव नारायण साही रचना संचयन - गोपेश्वर सिंह
3. प्रगतिवाद - शिवदान सिंह चौहान, प्रदीप प्रकाशन
4. प्रगतिवाद एक समीक्षा - धर्मवीर भारती, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग
5. प्रगतिवाद - शिव कुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. हिंदी कविता की प्रगतिशील भूमिका - प्रभाकर श्रोत्रिय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
7. छायावाद, प्रयोगवाद, प्रगतिवाद एवं नयी कविता – पृथ्वी सिंह, भाषा प्रकाशन, नयी दिल्ली
8. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
9. दलित कविता : प्रश्न और परिप्रेक्ष्य - बजरंग बिहारी तिवारी
10. आदिवासी साहित्य : परम्परा और प्रयोजन - वन्दना टेटे
11. आदिवासी साहित्य यात्रा - रमणिका गुप्ता
12. दलित आन्दोलन का इतिहास (चार खण्डों में) - मोहनदास नैमिषराय
13. साहित्य का सही वक्ता - वी. कुमारन, मधुरा: जवाहर पुस्तकालय
14. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास - सुमन राजे
15. स्त्री चिंतन की चुनौतियां - रेखा कस्तवार
16. पितृसत्ता के नए रूप; स्त्री और भूमंडलीकरण - राजेंद्र यादव

पंचम सत्र

HIN-CC-3130

प्रयोजनमूलक हिन्दी

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रयोजनमूलक हिन्दी के स्वरूप तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी की आवश्यकता एवं विशेषताओं की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राजभाषा के महत्त्व तथा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति से अवगत हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी पत्रकारिता एवं संचार माध्यम के अन्तःसम्बन्ध से परिचित हो सकेंगे तथा हिन्दी पत्रकारिता के विकास और वर्तमान स्थिति से अवगत हो सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी पत्र लेखन तथा विज्ञापन लेखन के विभिन्न पक्षों एवं विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रयोजनमूलक हिन्दी के स्वरूप तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी की आवश्यकता एवं विशेषताओं की जानकारी प्राप्त हुई।

CO2 इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राजभाषा के महत्त्व तथा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति से अवगत हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी पत्रकारिता एवं संचार माध्यम के अन्तःसम्बन्ध से परिचित हुए तथा हिन्दी पत्रकारिता के विकास और वर्तमान स्थिति से अवगत हुए।

CO4. विद्यार्थी पत्र लेखन तथा विज्ञापन लेखन के विभिन्न पक्षों एवं विशेषताओं से अवगत हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	प्रयोजनमूलक हिन्दीः परिभाषा और स्वरूप; प्रयोजनमूलक हिन्दी की आवश्यकता एवं विशेषताएँ। राष्ट्रभाषा, राजभाषा का स्वरूप : सम्पर्क भाषाः स्वरूप; सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का राष्ट्रीय एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य; स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी की भूमिका; पूर्वोत्तर भारत में सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की उपयोगिता, प्रचार में आने वाली समस्याएँ, समाधान और सुझाव।	30	C1

2	राजभाषा राजभाषाः अर्थ एवं स्वरूप; हिन्दी की संवैधानिक स्थिति ; अनुच्छेद 343 से 351; राजभाषा संकल्प, त्रिभाषा सूत्र, राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित 1987; राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग में आने वाली समस्याएँ और सुझाव।	30	C2
3	हिन्दी पत्रकारिता एवं संचार माध्यम पत्रकारिता- हिन्दी पत्रकारिता के विकास का संक्षिप्त परिचय; साहित्यिक पत्रकारिता; हिन्दी पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति। संचार माध्यम- हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं सिनेमा का योगदान; रेडियो लेखन की कला।	30	C3
4	पत्र लेखनः सरकारी तथा अर्धसरकारी पत्र, सूचना, ज्ञापन, आदेश, टिप्पणी, अनुस्मारक; प्रतिवेदन तथा मसौदा लेखन; विज्ञापन लेखन। अनुवाद एवं पारिभाषिक शब्दावलीः परिभाषा; अनुवाद के प्रकार; अनुवादः समस्याएँ और समाधान। पारिभाषिक शब्दावलीः स्वरूप एवं परिभाषा; 100 पारिभाषिक शब्द।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	1	3	3	1	2	3	2
CO2	3	2	1	2	3	1	2	3	2
CO3	3	2	1	3	3	1	2	3	2
CO4	3	2	1	2	3	1	2	2	2
Average	3	2	1	2.50	3	1	2	2.75	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिसके विकल्प भी होंगे। 15X4= 60
2. कुल पाँच टिप्पणियाँ पूछी जाएगी, जिनमें से किन्हीं दो का उत्तर लिखना होगा। 5X2= 10
3. इस पत्र में निर्धारित 100 पारिभाषिक शब्दों में से दस पारिभाषिक शब्द परीक्षा में पूछे जायेंगे। 1X10= 10

सहायक ग्रन्थः

1. राजभाषा हिन्दी प्रचलन : डॉ. रामेश्वर प्रसाद

2. हिन्दी पत्रकारिता : डॉ. वेदप्रताप वैदिक
3. व्यावहारिक राजभाषा : डॉ. नारायणदत्त पालीवाल
4. अनुवादः सिद्धान्त और प्रयोग : गोपीनाथन, जी
5. हिन्दी शब्द-अर्थ प्रयोग : डॉ. हरदेव बाहरी
6. पूर्वोत्तर में हिन्दी प्रचार-प्रसार : चित्र महन्त
7. प्रयोजनमूलक हिन्दी : डॉ. महन्त
8. प्रयोजनमूलक हिन्दी : डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव
9. अरुणाचल प्रदेश में हिन्दीः अध्ययन के नये आयाम :डॉ. श्याम शंकर सिंह

अंग्रेजी के सौ पारिभाषिक शब्द हिंदी अर्थ के साथ :

1. Abandonment - परित्याग
2. Ability - योग्यता
3. Abolition - उन्मूलन, अंत
4. Abridge - संक्षेप करना, न्यून करना
5. Absence - अनुपस्थिति
6. Absolve - विमुक्त करना
7. Absorb - अवशोषण करना, समाहित करना
8. Abstract - सार
9. Absurdity - अर्थहीनता, बेतुकापन
10. Academic - शैक्षणिक
11. Academy - अकादमी
12. Acceptance - स्वीकार
13. Account - लेखा, खाता
14. Accurate - यथार्थ
15. Accuse - अभियोग लगाना
16. Adjustment - समायोजन
17. Adjuster -समायोजक
18. Administrative - प्रशासकीय
19. Admonition - भर्त्सना
20. Affidavit - शपथनामा
21. Affiliate - सम्बद्ध करना
22. Allotment - आबंटन
23. Ambassador - राजदूत
24. Bench - न्यायपीठ
25. Bribe - घूस,रिश्वत
26. Broadcast - प्रसारण
27. Cabinet - मंत्रिमंडल

28. Capital - पूँजी
29. Catalogue - ग्रंथसूची
30. Caution - सावधान
31. Cell - कोष्ठ /कक्ष
32. Censure Motion - निन्दा प्रस्ताव
33. Circle - इलाका / अंचल
34. Claim - दावा
35. Claimant - दावेदार
36. Clause - खंड
37. Collusion - दुरभिसंधि
38. Commemoration - स्मारक
39. Commencement - प्रारंभ
40. Comment - टीका, टिप्पणी
41. Concern - प्रतिष्ठाण/सरोकार/चिंता/समुद्यम
42. Concession - रियायत
43. Confidential - गोपनीय
44. Confirmation -पुष्टि करना
45. Contribution - अंशदान
46. Corrigendum - शुद्धिपत्र
47. Controversial - विवादास्पद
48. Corroborate - संपुष्टि करना
49. Credibility - विश्वसनीयता
50. Defamation - मानहानि
51. Defence - रक्षा
52. Defendant - प्रतिवादी
53. Deficiency - कमी
54. Denial - अस्वीकार
55. Department - विभाग
56. Deposit - निक्षेप / जमा
57. Deputy - उप
58. Detective - गुप्तचर /जासूस
59. Dignitary - उच्चपदधारी / उच्चपदस्थ
60. Discrepancy - विसंगति
61. Dismiss - पदच्युत करना
62. Disobey - अवज्ञा करना / आज्ञा न मानना
63. Disposal - निपटान / निवर्तन
64. Disqualify - अनर्ह करना / अनर्ह होना

65. Disregard	- अवहेलना
66. Ditto	- यथोपरि / जैसे ऊपर
67. Duration	- अवधि
68. Draft	- प्रारूप /मसौदा
69. Earmark	- चिह्न करना/उद्दिष्ट करना
70. Eligible	- पात्र
71. Embassy	- राजदूतावास
72. Emblem	- प्रतीक / चिह्न
73. Enrolment	- नामांकन
74. Ensure	- आश्वस्त करना
75. Entitle	- हकदार होना
76. Extensive	- व्यापक / विस्तृत
77. Faculty	-संकाय
78. Financial	- वित्तीय
79. Forward	- अग्रेषित करना
80. Judgement	- निर्णय
81. Legislative	- विधान मंडल
82. Leisure	- अवकाश
83. Lien	- पुनर्ग्रहणाधिकार
84. Literacy	- साक्षरता
85. Misconduct	- अनाचार / कदाचार
86. Monopoly	- एकाधिकार
87. Nominee	-नामिती /नामित / मनोनीत व्यक्ति
88. Non-acceptance	- अस्वीकृति
89. Oath	- शपथ
90. Observance	- पालन
91. Prohibited	- निषिद्ध
92. Project	- परियोजना
93. Promotion	- प्रोन्नति
94. Prospectus	- विवरण-पत्रिका
95. Provisional	- अस्थायी
96. Provision	- उपबंध / शर्त, व्यवस्था
97. Recommended	- संस्तुत
98. Relaxation	- छूट / रियायत/ढील
99. Unavoidable	- अनिवार्य /अपरिहार्य
100. Valid	- विधिमान्य

पंचम सत्र

HIN-CC- 3140

लोक साहित्य

संवाद-अवधि	: 60
क्रेडिट	: 2
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को लोक साहित्य की परिभाषा और उसके स्वरूप तथा लोक साहित्य के तत्वों की जानकारी दी जाएगी।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं - लोकगाथा, लोकगीत, लोक नाट्य, लोक कथा तथा लोक सुभाषित के स्वरूप एवं विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी लोक नाट्य के विविध रूपों यथा - रामलीला, अचिल्हामु, अंकिया नाट तथा यक्षगान का अध्ययन कर सकेंगे तथा अरुणाचल प्रदेश की लोक कथाओं से अवगत हो सकेंगे।

LO4. अरुणाचल प्रदेश के लोकगीतों और लोक सुभाषितों के प्रकार और विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को लोक साहित्य की परिभाषा और उसके स्वरूप तथा लोक साहित्य के तत्वों की जानकारी दी गयी।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं - लोकगाथा, लोकगीत, लोक नाट्य, लोक कथा तथा लोक सुभाषित के स्वरूप एवं विशेषताओं से अवगत हुए।

CO3. विद्यार्थी लोक नाट्य के विविध रूपों यथा - रामलीला, अचिल्हामु, अंकिया नाट तथा यक्षगान का अध्ययन कर सके तथा अरुणाचल प्रदेश की लोक कथाओं से अवगत हो सके।

CO4. अरुणाचल प्रदेश के लोकगीतों और लोक सुभाषितों के प्रकार और विशेषताओं से अवगत हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ(Course Outcome)**
1	लोक साहित्य : परिभाषा और स्वरूप ; लोक साहित्य के तत्व; मिथक एवं लोक विश्वास।	12	C1
2	लोक साहित्य: लोकगाथा, लोकगीत, लोक नाट्य, लोक कथा तथा लोक सुभाषित; स्वरूप एवं विशेषताएँ।	12	C2

3	लोक नाट्य के विविध रूप - रामलीला, अचिल्हामु, अंकिया नाट तथा यक्षगान। लोक कथा : मूल्य परक लोककथा, उपदेशात्मक लोक कथा और उत्पत्तिपरक लोक कथा (5-5 अरुणाचली लोक कथाएँ) पाठ्य पुस्तक: अरुणाचल प्रदेश की लोक कथाएँ : सं. नन्द किशोर पाण्डेय, हरीश कुमार शर्मा	18	C3
4	लोकगीत : अरुणाचली लोक गीतों के प्रकार और विशेषताएँ, अरुणाचल प्रदेश के दस लोक गीतों का अध्ययन; अरुणाचली लोक सुभाषितों के प्रकार और विशेषताएँ, अरुणाचल प्रदेश के बीस लोकसुभाषितों का अध्ययन।	18	C4
	कुल संवाद-अवधि	**60**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	3	3	3	2	1	3
CO2	3	3	2	2	3	3	2	1	3
CO3	2	3	2	3	2	3	2	1	3
CO4	3	2	2	3	3	2	2	1	3
Average	2.75	2.75	2	2.75	2.75	2.75	2	1	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4= 20

सहायक ग्रंथ –

1. भारत के लोक नाट्य : शिवकुमार माथुर
2. लोकधर्मी नाट्य परंपरा : श्याम परमार

3. लोक साहित्य की भूमिका : कृष्णदेव उपाध्याय
4. लोक साहित्य की भूमिका : रामनरेश त्रिपाठी
5. लोक संस्कृति : वसन्त निरगुणे
6. लोक साहित्य का अवगमन : त्रिलोचन पाण्डेय
7. लोकगीत की सत्ता : सुरेश गौतम
8. भारतीय लोक साहित्य की रूपरेखा : दुर्गाभागवत
9. लोकजीवन के कलात्मक आयाम : कालूराम परिहार
10.लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग : श्रीराम शर्मा
11. हिंदी साहित्य का वृहद इतिहास : कृष्णदेव उपाध्याय
12. लोक साहित्य विज्ञान : डॉ सत्येंद्र
13. ऊई मोक : जमुना बीनी
14. न्यीशी लोक साहित्य का समाज भाषिक अध्ययन : जोराम यालाम नाबाम
15. न्यीशी लोकगीत : सांस्कृतिक अध्ययन : जोराम आनिया ताना
16. न्यीशी लोक साहित्य :केंद्रीय हिंदी संस्थान
17. यापोम : गुम्पी ङूसो
18. गालो जनजाति की लोक संस्कृति: पहचान और प्रवाह : अरुण कुमार पाण्डेय
19. मोनपा लोक साहित्य : केंद्रीय हिंदी संस्थान
20. आदी जनजाति : समाज और साहित्य : ओकेन लेगो
21. तानी कथाएँ : जोराम यालाम

पंचम सत्र

HIN-MC-4110

प्रवासी साहित्य

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रवासी हिन्दी साहित्य के इतिहास, प्रवासी साहित्य की अवधारणा और प्रकार तथा प्रवासी हिंदी साहित्यकारों के हिन्दी के विकास में योगदान की जानकारी दी जाएगी।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी चयनित प्रवासी रचनाकारों की पठित कविताओं के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा रचनाकारों के सामान्य परिचय एवं उनकी काव्य-कला से अवगत हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'लाल पसीना' के सारांश, प्रतिपाद्य तथा समीक्षा से अवगत हो सकेंगे तथा रचनाकार की उपन्यास कला से परिचित हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी चयनित प्रवासी रचनाकारों की पठित कहानियों के सारांश और समीक्षा से अवगत हो सकेंगे तथा रचनाकारों की कहानी कला से भी परिचित हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. **:** इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रवासी हिन्दी साहित्य के इतिहास, प्रवासी साहित्य की अवधारणा और प्रकार तथा प्रवासी हिंदी साहित्यकारों के हिन्दी के विकास में योगदान की जानकारी दी जाएगी।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी चयनित प्रवासी रचनाकारों की पठित कविताओं के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा रचनाकारों के सामान्य परिचय एवं उनकी काव्य-कला से अवगत हो सकेंगे।

CO3. विद्यार्थी अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'लाल पसीना' के सारांश, प्रतिपाद्य तथा समीक्षा से अवगत हो सकेंगे तथा रचनाकार की उपन्यास कला से परिचित हो सकेंगे।

CO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी चयनित प्रवासी रचनाकारों की पठित कहानियों के सारांश और समीक्षा से अवगत हो सकेंगे तथा रचनाकारों की कहानी कला से भी परिचित हो सकेंगे।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	प्रवासी हिन्दी साहित्य का इतिहास;प्रवासी साहित्य: अवधारणा और प्रकार; प्रवासी हिंदी साहित्यकारों का हिन्दी के विकास में योगदान (उपन्यास,कहानी तथा कविता के विशेष सन्दर्भ में)।	30	C1

2	**कविता :** • माँ जब कुछ कहती मैं चुप रह सुनता : रमा तक्षक, आईसेक्ट पब्लिकेशन • थेम्स नदी के किनारे : तेजेंद्र शर्मा, जे वी पी पब्लिकेशन • सहयात्री हैं हम : जय वर्मा, अयन प्रकाशन • रेत का लिखा : दिव्या माथुर, नटराज प्रकाशन आलोचना: कविताओं की काव्यगत विशेषताएँ, पठित कविताओं का प्रतिपाद्य, रचनाकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी काव्य-कला।	30	C2
3	**उपन्यास :** लाल पसीना : अभिमन्यु अनत, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली आलोचना : अभिमन्यु अनत की उपन्यास कला, पठित उपन्यास का सारांश, उपन्यास की समीक्षा, प्रतिपाद्य।	30	C3
4	**कहानियां :** • घर वापसी :अर्चना पेन्युली • एक स्विस डॉक्टर की मौत : प्रेमलता वर्मा • कौन सी जमीन अपनी : सुधा ओम ढींगरा आलोचना : पठित कहानियों का सारांश, पठित कहानियों की समीक्षा, कहानीकारों की कहानी कला।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	2	3	3	2	2	1	3
CO2	3	3	2	3	3	3	2	1	3
CO3	3	3	2	3	3	3	2	1	3
CO4	3	3	2	3	3	3	2	1	3
Average	3	2.75	2	3	3	2.75	2	1	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. इकाई 2, 3 तथा इकाई 4 से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x3 = 24
2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 14x4= 56

सहायक ग्रंथ-

1. प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य : सं. विमलेश कांति वर्मा
2. प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा और दिशा, प्रो. प्रदीप श्रीधर
3. प्रवासी हिंदी साहित्य: विविध आयाम : डॉ. रमा
4. हिंदी का प्रवासी साहित्य :डॉ. कमलकिशोर गोयनका
5. प्रवासी लेखन : नई जमीन, नया आसमान : अनिल जोशी
6. प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानियाँ : डॉ. सुरेंद्र गंभीर
7. प्रवासी श्रम इतिहास : धनंजय सिंह
8. प्रवास में : डॉ. उषाराजे सक्सेना
9. प्रवासी साहित्यकार मूल्यांकन, श्रृंखला-1 : तेजेंद्र शर्मा, सं. डॉ. रमा, महेंद्र प्रजापति
10. प्रवासी साहित्य: भाव और विचार : संध्या गर्ग
11. हिंदी प्रवासी साहित्य (गद्य साहित्य) : डॉ. कमलकिशोर गोयनका
12. प्रवासी की कलम से : बादल सरकार
13. प्रतिनिधि आप्रवासी हिंदी कहानियाँ : सं. हिमांशु जोशी, साहित्य अकादमी

षष्ठ सत्र

HIN-CC–3210

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा के सामान्य परिचय तथा उसके प्रमुख वादों और सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त होगी।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी प्लेटो, अरस्तू और लोंजाइनस के काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों से अवगत हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी डॉ. सैमुअल जॉनसन, वर्ड्सवर्थ तथा क्रोचे के काव्य सम्बन्धी मतों से परिचित हो सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी टी.एस. एलियट, आई.ए. रिचर्ड्स तथा सिगमंड फ्रायड के काव्य सिद्धांतों से परिचित हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा के सामान्य परिचय तथा उसके प्रमुख वादों और सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त की।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी प्लेटो, अरस्तू और लोंजाइनस के काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों से अवगत हुए।

CO3. विद्यार्थी डॉ. सैमुअल जॉनसन, वर्ड्सवर्थ तथा क्रोचे के काव्य सम्बन्धी मतों से परिचित हुए।

CO4. विद्यार्थी टी.एस. एलियट, आई.ए. रिचर्ड्स तथा सिगमंड फ्रायड के काव्य सिद्धांतों से परिचित हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा का सामान्य परिचय, प्रमुख वाद और सिद्धांत : स्वच्छन्दतावाद, अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद तथा आधुनिकतावाद, प्रतीक, बिम्ब और मिथक।	30	C1
2	क. प्लेटो : काव्य सम्बन्धी अवधारणाएं। ख. अरस्तू : अनुकरण सम्बन्धी अवधारणा, विरेचन एवं त्रासदी के सिद्धांत। ग. लोंजाइनस : उदात्त सिद्धांत।	30	C2
3	क. डॉ. सैमुअल जॉनसन : नव आभिजात्यवाद। ख. वर्ड्सवर्थ : काव्य भाषा का सिद्धांत। ग. क्रोचे : अभिव्यंजना का सिद्धांत ।	30	C3

4	क. टी.एस. इलिएट : परंपरा और वैक्तिक प्रतिभा। ख. आई. ए. रिचडर्स : मूल्य सिद्धांत तथा संप्रेषण का सिद्धांत। ग. सिगमंड फ्रायड का मनोविश्लेषण का सिद्धांत।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	3	2	3	2	3	3	1
CO2	2	3	3	2	3	2	3	3	1
CO3	2	3	3	2	3	2	3	3	1
CO4	2	3	3	2	3	2	3	3	1
Average	2	3	3	2	3	2	3	3	1

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60

2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4= 20

सहायक ग्रंथ :

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत : डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेन्द्रनाथ शर्मा
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : बच्चन सिंह
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र: इतिहास, सिद्धांत और वाद : डॉ. भगीरथ मिश्र
5. पाश्चात्य साहित्य चिंतन : निर्मला जैन
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : विजय बहादुर सिंह

षष्ठ सत्र

HIN-CC-3220

छायावाद

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को छायावादी काव्य प्रवृत्ति तथा जयशंकर प्रसाद की सांस्कृतिक चेतना तथा काव्यगत विशेषताओं की जानकारी प्राप्त होगी, साथ ही पठित काव्यांश के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को निराला के साहित्य में अभिव्यक्त ओज और विद्रोह तथा काव्यगत विशेषताओं की जानकारी प्राप्त होगी, साथ ही पठित काव्यांश के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी पन्त के प्रकृति चित्रण तथा काव्यगत विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे, साथ ही पठित काव्यांश के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी महादेवी वर्मा की कविताओं में अभिव्यक्त प्रेम और वेदना तथा काव्यगत विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे, साथ ही पठित काव्यांश के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने छायावादी काव्य प्रवृत्ति तथा जयशंकर प्रसाद की सांस्कृतिक चेतना तथा काव्यगत विशेषताओं की जानकारी प्राप्त की, साथ ही पठित काव्यांश के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने निराला के साहित्य में अभिव्यक्त ओज और विद्रोह तथा काव्यगत विशेषताओं की जानकारी प्राप्त की, साथ ही पठित काव्यांश के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की।

CO3.विद्यार्थी पन्त के प्रकृति चित्रण तथा काव्यगत विशेषताओं से अवगत हुए, साथ ही पठित काव्यांश के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की।

CO4. विद्यार्थी महादेवी वर्मा की कविताओं में प्रेम और वेदना तथा काव्यगत विशेषताओं से अवगत हुए, साथ ही पठित काव्यांश के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	**जयशंकर प्रसादः** पाठ्य कविता- ‘कामायनी’ का श्रद्धा सर्ग	30	C1
2	**सूर्यकान्त त्रिपाठी निरालाः** पाठ्य कविताएँ- सखि, बसन्त आया; जागो फिर एक बार-2	30	C2

3	**सुमित्रानन्दन पन्तः** पाठ्य कविताएँ- प्रथम रश्मि;पर्वत प्रदेश में पावस;पतझर	30	C3
4	**महादेवी वर्माः** पाठ्य रचनाएँ- फिर विकल है प्राण मेरे; क्या पूजा क्या अर्चन रे ! ; मैं नीर भरी दुःख की बदली	30	C4
आलोचना बिंदु : छायावादी काव्य-प्रवृत्ति, जयशंकर प्रसाद सांस्कृतिक चेतना, निराला के साहित्य में ओज और विद्रोह, पन्त का प्रकृति-चित्रण, महादेवी की कविताओं में प्रेम और वेदना,पठित कविताओं का प्रतिपाद्य, कवियों की काव्यगत विशेषताएँ।			
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	3	3	2	3	2	3
CO2	3	3	2	3	3	3	3	1	3
CO3	3	3	2	3	3	3	3	1	3
CO4	3	3	2	3	3	3	3	1	3
Average	3	3	2	3	3	2.75	3	1.25	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देशः

1. प्रत्येक इकाईयों से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x4 = 32
2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12x4= 48

संदर्भ ग्रन्थः

1. हिन्दी साहित्यः बीसवीं सदी - नन्ददुलारे वाजपेयी
2. जयशंकर प्रसाद - नन्ददुलारे वाजपेयी
3. कामायनी का पुनर्मूल्यांकन - रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. निराला की साहित्य साधनाः भाग – 1,2,3 - डॉ. रामविलास शर्मा

5. निरालाः एक आत्महंता आस्था - दूधनाथ सिंह
6. छायावाद - डॉ. नामवर सिंह
7. महादेवी का काव्य-सौष्ठव - कुमार विमल
8. महादेवी का नया मूल्यांकन - डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त
9. कवि सुमित्रानन्दन पन्त - नन्ददुलारे बाजपेयी
10. पन्त की दार्शनिक चेतना - डॉ. सुरेशचन्द्र गुप्त
11. त्रयी (प्रसाद, निराला, पन्त) - डॉ. जानकी वल्लभ शास्त्री

षष्ठ सत्र

HIN-CC- 3230

प्रेमचन्द

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को हिन्दी उपन्यास और प्रेमचन्द, प्रेमचंद के उपन्यास 'रंगभूमि' में चरित्र-चित्रण; स्वाधीनता आन्दोलन और किसान समस्या तथा उपन्यास की समीक्षा से अवगत कराया जायेगा।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी पाठ्य उपन्यास 'गबन' में चरित्र-चित्रण, शिल्प, नारी समस्या, मध्यवर्गीय संस्कृति तथा उपन्यास की समीक्षा से परिचित हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी प्रेमचन्द और हिंदी कहानी, प्रेमचन्द की कहानी-कला तथा पठित कहानियों की समीक्षा का अध्ययन कर सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी प्रेमचन्द की निबंध-कला तथा पठित निबंधों के प्रतिपाद्य और समीक्षा का अध्ययन कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी उपन्यास और प्रेमचन्द, प्रेमचंद के उपन्यास 'रंगभूमि' में चरित्र-चित्रण; स्वाधीनता आन्दोलन और किसान समस्या तथा उपन्यास की समीक्षा से अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी पाठ्य उपन्यास 'गबन' में चरित्र-चित्रण, शिल्प, नारी समस्या, मध्यवर्गीय संस्कृति तथा उपन्यास की समीक्षा से परिचित हुए।

CO3. विद्यार्थियों ने प्रेमचन्द और हिंदी कहानी, प्रेमचन्द की कहानी-कला तथा पठित कहानियों की समीक्षा का अध्ययन किया।

CO4. विद्यार्थियों ने प्रेमचन्द की निबंध-कला तथा पठित निबंधों के प्रतिपाद्य और समीक्षा का अध्ययन किया।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	**उपन्यासः** पाठ्य उपन्यास- 'रंगभूमि' आलोचना बिंदु : हिन्दी उपन्यास और प्रेमचन्द; चरित्र-चित्रण; स्वाधीनता आन्दोलन और रंगभूमि; उपन्यास की समीक्षा; रंगभूमि और किसान समस्या।	30	C1
2	**उपन्यासः** पाठ्य उपन्यासः गबन आलोचना बिंदु: चरित्र-चित्रण; शिल्प; नारी समस्या का व्यापक चित्रण; मध्यवर्गीय संस्कृति और गबन, उपन्यास की समीक्षा।	30	C2

3	**कहानियाँ :** पाठ्य-पुस्तकः प्रतिनिधि कहानियाँ; प्रकाशक- राजकमल प्रकाशन , दिल्ली। पाठ्य कहानियाँ- बड़े भाई साहब, नशा, पूस की रात, ठाकुर का कुआँ और पंच परमेश्वर। आलोचना बिंदु : प्रेमचन्द और हिंदी कहानी; प्रेमचन्द की कहानी-कला; पठित कहानियों की समीक्षा।	30	C3
4	**निबन्धः** पाठ्य पुस्तकः प्रेमचन्द के विचार (खण्ड-एक); सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद। पाठ्य-निबन्ध- स्वराज्य से किसका अहित होगा; डण्डा; महाजनी सभ्यता; दमन की सीमा। आलोचना बिंदु : प्रेमचन्द की निबंध-कला ; पठित निबंधों का प्रतिपाद्य ; पठित निबंधों की समीक्षा।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	2	3	3	3	1	3
CO2	3	3	2	2	3	3	3	1	3
CO3	3	3	2	2	3	3	3	1	3
CO4	3	3	2	2	3	3	3	1	3
Average	3	3	2	2	3	3	3	1	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देशः

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x4 =32
2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12x4= 48

सहायक ग्रन्थः

1. प्रेमचन्द और उनका युग - डॉ. रामविलास शर्मा
2. प्रेमचन्दः जीवन और कृतित्व - हंसराज रहबर
3. प्रेमचन्द कोश - डॉ. कमलकिशोर गोयनका
4. कमल के सिपाही - अमृतराय
5. प्रेमचन्द - डॉ. गंगाप्रसाद विमल
6. प्रेमचन्द और यथार्थवाद - डॉ. नगेन्द्रप्रताप सिंह
7. हिन्दी की चर्चित कहानियाः पुनर्मूल्यांकन - डॉ. कुसुम वर्ष्णेय
8. प्रेमचंद संचयन - कमल किशोर गोयनका, निर्मल वर्मा
9. प्रेमचंद की कहानियों का कालक्रमिक अध्ययन - कमल किशोर गोयनका, साहित्य अकादमी
10. प्रेमचंद और किसान समस्या - वीर भारत तलवार
11. प्रेमचंद विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता -मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, रेखा अवस्थी
12. प्रेमचंद और हमारा समाज - आभा गुप्ता ठाकुर, नीरज खरे
13. प्रेमचंद की प्रासंगिकता - अमृत राय
14. भारतीय समाज, राष्ट्रवाद और प्रेमचंद - जितेन्द्र श्रीवास्तव

षष्ठ सत्र

HIN-CC-3240

मीडिया के विविध आयाम

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी मीडिया के उद्भव और विकास के अध्ययन के साथ-साथ मीडिया के विविध रूपों से अवगत हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी मीडिया और हिन्दी भाषा के अन्तःसम्बन्ध से परिचित हो सकेंगे और मीडिया में प्रयुक्त हिन्दी शब्दावली और उनके प्रयोग क्षेत्र की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी जनमाध्यम लेखन का परिचय प्राप्त करते हुए मीडिया लेखन के सृजनात्मक आयाम का अध्ययन कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सूचना एवं संचार-प्रौद्योगिकी (आई सी टी) तथा न्यू मीडिया के आभासी संचार विधियों से परिचित हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को मीडिया के उद्भव और विकास सहित मीडिया के विविध रूपों की जानकारी प्राप्त हुई।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी मीडिया और हिन्दी भाषा के अन्तःसम्बन्ध से परिचित होते हुए मीडिया में प्रयुक्त हिन्दी शब्दावली और उनके प्रयोग क्षेत्र की जानकारी प्राप्त हुई।

CO3. विद्यार्थी जनमाध्यम लेखन का परिचय प्राप्त करते हुए मीडिया लेखन के सृजनात्मक आयामों से परिचित हुए।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सूचना एवं संचार-प्रौद्योगिकी (आई सी टी) तथा न्यू मीडिया के आभासी संचार विधियों से अवगत हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	मीडिया : उद्भव और विकास, स्वाधीनता पूर्व मीडिया लेखन, स्वातंत्र्योत्तर मीडिया लेखन, मीडिया की उपयोगिता, मीडिया के विविध रूप - प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया – टेलीविजन, रेडियो और सिनेमा।	30	C1

2	मीडिया और हिन्दी भाषा: मीडिया में प्रयुक्त हिन्दी शब्दावली और उनका प्रयोग क्षेत्र, हिन्दी मीडिया का वर्तमान स्वरूप, समाचार लेखन की भाषा, रेडियो तथा टेलीविज़न हेतु हिन्दी कार्यक्रम निर्माण, सोशल मीडिया की भाषा।	30	C2
3	जनमाध्यम लेखन: परिचय एवं अवधारणा, मीडिया लेखन के सृजनात्मक आयाम, समाचार लेखन,फीचर लेखन, स्तंभ लेखन, अग्रलेख लेखन, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के लिए लेखन- रेडियो, टेलीविज़न एवं फिल्म।	30	C3
4	सूचना एवं संचार-प्रौद्योगिकी (आई सी टी): न्यू मीडिया का आभासी संचार (वर्चुअल वर्ल्ड), डिजिटलाइजेशन एवं हिंदी मीडिया, न्यू मीडिया के विविध रूप: न्यूमीडिया का सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	2	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	2	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	2.50	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4=20

सहायक ग्रंथ :

1. विज्ञापन माध्यम एवं प्रचार : डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ
2. जनसंचार माध्यम : विविध आयाम : बृज मोहन गुप्त
3. जनमाध्यम : संप्रेषण और विकास : देवेन्द्र इस्सर
4. हिंदी पत्रकारिता : कल आज और कल : सं. सुरेश गौतम
5. मीडिया की भाषा : डॉ. वसुधा गाडगिल
6. टेलीविजन की दुनिया : प्रभु झिंगरन
7. पत्र संपादन कला : नन्द किशोर त्रिखा

षष्ठ सत्र

HIN-MC-4210

राष्ट्रीय चेतना का साहित्य

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को भारतेंदु हरिश्चंद के नाटक 'भारत दुर्दशा' के प्रतिपाद्य, नाट्य तत्वों के आधार पर इसकी समीक्षा तथा भारतेंदु की नाट्य-कला की जानकारी प्राप्त होगी।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी चयनित कहानीकारों की कहानी कला, पठित कहानियों की समीक्षा तथा उनके प्रतिपाद्य से अवगत हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी चयनित निबंधकारों के निबंधों की विशेषताएँ, पठित निबंधों की समीक्षा तथा उनके प्रतिपाद्य से परिचित हो सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी हिंदी संस्मरण के उद्भव और विकास तथा उसके तत्वों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा पठित निबंधों की समीक्षा कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को भारतेंदु हरिश्चंद के नाटक 'भारत दुर्दशा' के प्रतिपाद्य, नाट्य तत्वों के आधार पर इसकी समीक्षा एवं भारतेंदु की नाट्य-कला की जानकारी प्राप्त हुई।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी चयनित कहानीकारों की कहानी कला, पठित कहानियों की समीक्षा तथा उसके प्रतिपाद्य से अवगत हुए।

CO3. विद्यार्थी चयनित निबंधकारों के निबंधों की विशेषताओं, पठित निबंधों की समीक्षा तथा उनके प्रतिपाद्य से परिचित हुए।

CO4. विद्यार्थियों ने हिंदी संस्मरण के उद्भव और विकास तथा उसके तत्वों की जानकारी प्राप्त की तथा पठित निबंधों की समीक्षा की।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	**नाटक :** भारतेंदु हरिश्चंद : भारत दुर्दशा आलोचना बिंदु : भारतेंदु की नाट्य-कला; नाट्य तत्व के आधार पर नाटक की समीक्षा; नाटक का प्रतिपाद्य।	30	C1
2	**कहानी :** पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' : ऐसी होली खेलो, लाल	30	C2

	प्रेमचन्द : यही मेरा वतन है आलोचना बिंदु : कहानीकारों की कहानी-कला; पठित कहानियों की समीक्षा; कहानियों का प्रतिपाद्य।		
3	**निबंध :** रामधारी सिंह 'दिनकर' : भारत की सांस्कृतिक एकता महादेवी वर्मा : चीनी भाई आलोचना बिंदु : निबंधकारों की निबंध की विशेषताएँ; पठित निबंधों की समीक्षा; पठित निबंधों का प्रतिपाद्य।	30	C3
4	**संस्मरण :** महादेवी वर्मा : प्रणाम रामकुमार वर्मा : महात्मा गाँधी आलोचना बिंदु : हिंदी संस्मरण : उद्भव और विकास ; संस्मरण के तत्व; पठित संस्मरण के आधार पर रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व का विश्लेषण।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	3	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x4= 32
2. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12x4= 48

सहायक ग्रंथ :

1.	हिंदी का गद्य विन्यास और विकास	: रामस्वरूप चतुर्वेदी
2.	हिंदी गद्य साहित्य	: रामचन्द्र तिवारी
3.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	: सं. नगेन्द्र, हरदयाल , नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
4.	हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास	: डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन,
5.	अवध का किसान विद्रोह	: सुभाष चंद्र कुशवाहा, राजकमल प्रकाशन
6.	चौरी-चौरा	: सुभाष चंद्र कुशवाहा, पेंगुइन बुक्स
7.	कथेतर गद्य	: माधव हाड़ा
8.	हिंदी नाटक और रंगमंच	: गिरीश रस्तोगी, अभिव्यक्ति प्रकाशन
9.	गद्य की नई विधाओं का विकास	: माजदा असद
10.	हिन्दी कहानी का विकास	- मधुरेश, लोकभारती , दिल्ली
11.	हिन्दी कहानी का इतिहास, भाग-।, ।।,III और IV	- गोपाल राय, राजकमल, दिल्ली
12.	हिन्दी कहानी: पहचान और परख	- इन्द्रनाथ मदान
13.	हिन्दी नाटक उद्भव और विकास	– डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
14.	रंग दर्शन	- नेमिचन्द्र जैन
15.	संस्कृति के चार अध्याय	- रामधारी सिंह 'दिनकर'
16.	दिनकर: एक पुनर्विचार	- कुमार निर्मलेंदु, लोकभारती
17.	प्रयाग पथ पत्रिका (दिनकर विशेषांक)	- हितेश कुमार सिंह
18.	महादेवी और संस्मरणात्मक रेखचित्र	- डॉ. अनुराधा

सप्तम सत्र

HIN-CC -4110

हिन्दी साहित्य का इतिहास

(आदिकाल से रीतिकाल तक)

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को साहित्य के इतिहास दर्शन, इतिहास लेखन की पद्धतियाँ, समस्याएँ, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, काल विभाजन, सीमा-निर्धारण और नामकरण की जानकारी प्राप्त होगी।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों एवं विभिन्न धाराओं तथा आदिकालीन साहित्य की भाषा से अवगत हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी भक्ति-आन्दोलन के उद्भव और विकास, पृष्ठभूमि, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, भक्ति के अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्त: प्रादेशिक वैशिष्ट्य, भक्ति साहित्य की विभिन्न धाराओं तथा भाषा दृष्टि एवं काव्य भाषा ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी रीतिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, रीति की अवधारणा तथा रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराओं से अवगत हो सकेंगे तथा रीतिकालीन साहित्य की काव्य भाषा तथा अभिव्यंजना शिल्प को जान सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को साहित्य के इतिहास दर्शन, इतिहास लेखन की पद्धतियाँ, समस्याएँ, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, काल विभाजन, सीमा-निर्धारण और नामकरण की जानकारी हुई।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों एवं विभिन्न धाराओं तथा आदिकालीन साहित्य की भाषा से अवगत हुए।

CO3. विद्यार्थी भक्ति-आन्दोलन के उद्भव और विकास, पृष्ठभूमि, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, भक्ति के अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्त: प्रादेशिक वैशिष्ट्य, भक्ति साहित्य की विभिन्न धाराओं तथा भाषा दृष्टि एवं काव्य भाषा ज्ञान प्राप्त किया।

CO4. विद्यार्थी रीतिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, रीति की अवधारणा तथा रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराओं से अवगत हुए तथा रीतिकालीन साहित्य की काव्य भाषा तथा अभिव्यंजना शिल्प को भी जान सके।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	साहित्य का इतिहास दर्शन और इतिहास लेखन की पद्धतियां; साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ; हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, हिन्दी साहित्य का इतिहास: काल विभाजन, सीमा-निर्धारण और नामकरण।	30	C1
2	आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां; रासो साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, बौद्ध-सिद्ध साहित्य; अमीर खुसरो की हिन्दी कविता एवं लोक काव्य; आदिकालीन साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियां; आदिकालीन साहित्य की भाषा।	30	C2
3	भक्ति-आन्दोलन : उद्भव और विकास; भक्तिकाल की पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां; भक्ति का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्त: प्रादेशिक वैशिष्ट्य; भक्ति साहित्य की विभिन्न धाराएं- संत काव्य, सूफी काव्य, कृष्ण काव्य; राम काव्य; परिचय, प्रवृत्तियां, प्रमुख रचनाएं और रचनाकार, भक्तिकालीन साहित्य और लोकजागरण, भक्तिकालीन कवियों की भाषा दृष्टि एवं काव्य भाषा।	30	C3
4	रीतिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां; रीति की अवधारणा और रीति काव्य; रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएं : सामान्य परिचय, रचनाएं, रचनाकार एवं प्रमुख प्रवृत्तियां; रीतिकालीन काव्य भाषा एवं अभिव्यंजना शिल्प।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	3	1	3	2	2	1	2
CO2	3	3	3	1	3	2	2	1	2
CO3	3	3	2	1	3	2	2	1	3
CO4	3	3	3	1	3	2	2	1	2
Average	3	3	2.75	1	3	2	2	1	2.25

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश :

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4=60
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4= 20

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. हिन्दी साहित्य की भूमिका - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
5. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली।
6. हिन्दी साहित्य का अतीत : भाग 1, 2 - विनय प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी।
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास - सं. नगेन्द्र नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
8. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद।
9. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी - आ. नन्ददुलारे वाजपेयी, लोकभारती, इलाहाबाद।
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन - नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।
11. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास प्रथम एवं द्वितीय खण्ड - डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
12. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. राम कुमार वर्मा, लोकभारती
13. साहित्य और इतिहास दर्शन - डॉ. मैनेजर पाण्डेय
14. साहित्य की समाजशास्त्रीय भूमिका - डॉ. मैनेजर पाण्डेय
15. आलम (हिंदी कवि) - भवदेव पाण्डेय , साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
16. कबीर - प्रभाकर माचवे, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
17. केशव दास - जगदीश गुप्त, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
18. चंडी दास - सुकुमार सेन, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
19. गोस्वामी तुलसीदास - रामजी तिवारी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
20. गोरखनाथ - नागेन्द्र नाथ उपाध्याय, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
21. घनानन्द - लल्लन राय, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सप्तम सत्र

HIN-CC -4120

आदिकालीन साहित्य एवं निर्गुण भक्ति काव्य

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सरहपा और चंदबरदाई की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन कर सकेंगे, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से भी अवगत हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी विद्यापति और जायसी की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन करेंगे, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी कबीर और शंकरदेव की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन करेंगे, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी रैदास और दादू की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन करेंगे, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने सरहपा और चंदबरदाई की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने विद्यापति और जायसी की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने कबीर और शंकरदेव की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हुए।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने रैदास और दादू की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हुए।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	**क. सरहपा** सिद्ध साहित्य का अन्त:प्रादेशिक प्रभाव, सिद्ध साहित्य और सरहपा, सरहपा का काव्यगत वैशिष्ट्य। पाठ्य पुस्तक आदिकालीन काव्य, सम्पा.- वासुदेव सिंह; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। पाठांश- दोहा कोश से दोहा संख्या – 1,2,5,6,7,9,11,12,13 तथा 14 ख. **चंदबरदाई** पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता; शशिव्रता विवाह प्रस्ताव का प्रतिपाद्य; शशिव्रता विवाह प्रस्ताव का काव्यगत वैशिष्ट्य; रासो की काव्य-भाषा। पाठ्य पुस्तक - पृथ्वीराज रासो-सं.- हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. नामवर सिंह पाठांश छंद सं. : 1 से 18 तक	30	C1
2	**क. विद्यापति** गीतिकाव्य परम्परा और विद्यापति पदावली; पदावली में भक्ति और शृंगार; विद्यापति की सौन्दर्य दृष्टि तथा विद्यापति का काव्यगत वैशिष्ट्य। पाठ्यपुस्तक- विद्यापति पदावली; सं.- डॉ. शिव प्रसाद सिंह पाठांश–पद सं. : 1 से 8,10,16,18,26,51,53,54,56,57, 58 तथा 60 **ख. जायसी** सूफी काव्य परम्परा और जायसी; नागमती वियोग वर्णन; पद्मावत का प्रेम-वर्णन; जायसी का काव्यगत वैशिष्ट्य। पाठ्य पुस्तक – जायसी ग्रन्थावली; सम्पा- आ. रामचन्द्र शुक्ल पाठांश: नागमती वियोग खण्ड, पद सं.- 4 से 15 तक	30	C2
3	**कबीर** सन्त-काव्य और कबीर; कबीर की भक्ति-भावना; कबीर-काव्य का सामाजिक पक्ष, कबीर की दार्शनिक चेतना। पाठ्य पुस्तक – कबीर: हजारीप्रसाद द्विवेदी पाठांश-पद सं. : 1, 2, 33, 41, 123, 130, 134, 160, 163, 168, 191, 199, 224, 247, 256	30	C3

	शंकरदेव शंकरदेव: व्यक्तित्व और कृतित्व; भक्ति का अखिल भारतीय स्वरूप और शंकरदेव; शंकरदेव की भक्ति; शंकरदेव की काव्य–भाषा और ब्रजावली। पाठ्य पुस्तक : भूपेन्द्रराय चौधरी : शंकरदेव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व पाठांश : पुस्तक में संकलित पाँचों बरगीत		
4	**रैदास** रैदास की भक्ति-भावना; रैदास की सामाजिक चेतना, रैदास का दर्शन, रैदास की काव्यगत विशेषताएँ। पाठ्य पुस्तक – रैदास बानी ; सं. शुकदेव सिंह ; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। पाठ्य पद संख्या: 41, 42, 46, 58, 62, 66, 71, 72, 75, 82 **दादू दयाल** सन्त काव्य और दादू की रचनाएँ; दादू की शिष्य परम्परा; दादू का दार्शनिक वैशिष्ट्य; दादू-काव्य का भाषिक वैशिष्ट्य। स्तक – संत-काव्य; सम्पा.परशुराम चतुर्वेदी; किताब महल, इलाहाबाद। पाठांश: प्रारम्भ से पाँच पद।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	3	2	3	3	3	1	3
CO2	3	3	3	2	3	3	3	1	3
CO3	3	3	3	2	3	3	3	1	3
CO4	3	3	3	2	3	3	3	1	3
Average	3	3	3	2	3	3	3	1	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देश :

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8×4=32
2. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4= 48

सहायक ग्रंथ:

1. हिन्दी साहित्य का आदिकाल - डॉ हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
2. पृथ्वीराज रासो: भाषा और साहित्य - डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
3. कबीर - हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
4. कबीर बीजक की भाषा - डॉ. शुकदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. जायसी - विजयदेव नारायण साही, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।
6. सूफीमत: साधना और साहित्य - डॉ. रामपूजन तिवारी, ज्ञानमंडल, काशी।
7. मध्यकालीन धर्म साधना - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
8. नाथ पंथ और संत साहित्य - डॉ. नगेन्द्रनाथ उपाध्याय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
9. संत साहित्य की समझ - डॉ. नन्द किशोर पाण्डेय, यश पब्लिकेशन, दिल्ली ।
10. मध्यकालीन काव्य आन्दोलन - डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र
11. साहित्य विमर्श का विवेक - डॉ. सुशील कुमार शर्मा, मीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली।
12. मधुमालती में प्रेम-व्यंजना - डॉ. सुशील कुमार शर्मा, उपहार प्रकाशन, दिल्ली।
13. शंकरदेव: साहित्यकार और विचारक - प्रो. कृष्णनारायण प्रसाद मागध।
14. दादूपन्थ: साहित्य और समाज दर्शन - डॉ. ओकेन लेगो; यश पब्लिकेशन, दिल्ली।
15. विद्यापति: अनुशीलन और मूल्यांकन - डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्त्व, बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना।
16. सामाजिक समरसता में मुसलमान हिन्दी कवियों का योगदान - डॉ. लखनलाल खरे, रजनी प्रकाशन, दिल्ली ।
17. हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योगदान - डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
18. लोहित के मानसपुत्र : शंकरदेव - सांवरमल सांगानेरिया; हेरिटेज फाउंडेशन
19. जगनिक - अयोध्या प्रसाद कुमुद, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
20. दाददयाल - रामबक्ष, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
21. पुष्पदंत - योगेन्द्र नाथ शर्मा‘अरुण’, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
22. रहीम - विजयेन्द्र स्नातक, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
23. रैदास - धर्मपाल मैनी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
24. विद्यापति - रमानाथ झा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
25. स्वयंभू - सदानन्द शाही, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
26. सरहपा - विश्वम्भर नाथउपाध्याय, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
27. संत कवि दादू - बलदेव बंशी
28. विद्यापति - लालसा यादव

सप्तम सत्र

HIN-CC - 4130

भारतीय काव्य शास्त्र

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र के संक्षिप्त इतिहास, काव्य लक्षण, हेतु, प्रयोजन, प्रकार, गुण-दोष, शब्द शक्तियों और काव्य भेद से परिचित हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी रस की अवधारणा, रस निष्पत्ति संबंधी विभिन्न अवधारणाओं तथा साधारणीकरण की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी ध्वनि सिद्धांत, रीति सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत तथा औचित्य सिद्धांत की परिभाषा, अवधारणा और भेदों से परिचित हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी अलंकार सिद्धांत की अवधारणा, प्रमुख अलंकारों की परिभाषा एवं उनके उदाहरण को समझ सकेंगे। वे विभिन्न छंदों की परिभाषा, तत्व, वर्गीकरण एवं प्रमुख छंदों के लक्षण एवं उदाहरण से भी परिचित हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र के संक्षिप्त इतिहास, काव्य लक्षण, हेतु, प्रयोजन, प्रकार, गुण दोष, शब्द शक्तियों और काव्य भेद से अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को रस की अवधारणा, रस निष्पत्ति संबंधी विभिन्न अवधारणाओं तथा साधारणीकरण की अवधारणा की जानकारी प्राप्त हुई।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी ध्वनि सिद्धांत, रीति सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत तथा औचित्य सिद्धांत की परिभाषा, अवधारणा और भेदों से परिचित हुए।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी अलंकार सिद्धांत की अवधारणा, प्रमुख अलंकारों की परिभाषा एवं उनके उदाहरण को समझ सके। वे विभिन्न छंदों की परिभाषा, तत्व, वर्गीकरण एवं प्रमुख छंदों के लक्षण एवं उदाहरण से भी परिचित हुए।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	भारतीय काव्यशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास; प्रमुख आचार्यों का परिचय; काव्य लक्षण; काव्य हेतु; काव्य प्रयोजन; काव्य के प्रकार; काव्य के गुण-दोष; शब्द-शक्तियाँ; काव्य-भेद।	30	C1
2	**रस सिद्धान्त :** रस: अवधारणा; रस निष्पत्ति: भट्ट लोल्लट; भट्ट शंकुक; भट्टनायक; अभिनवगुप्त; साधारणीकरण की अवधारणा: भट्टनायक; अभिनवगुप्त; रामचन्द्र शुक्ल; डॉ. नगेन्द्र।	30	C2
3	**विभिन्न काव्य सिद्धान्त :** ध्वनि सिद्धान्त: ध्वनि की परिभाषा तथा उसका भेद; ध्वनि सिद्धांत की मूल स्थापनाएं: रीति सिद्धान्त: रीति सिद्धान्त की मूल स्थापनाएं;रीति का अर्थ; रीति के भेद: वक्रोक्ति सिद्धान्त: वक्रोक्ति की अवधारणा; वक्रोक्ति के भेद: औचित्य सिद्धान्त: औचित्य की अवधारणा तथा उसके भेद।	30	C3
4	**अलंकार सिद्धांत :** अलंकार सिद्धान्त की अवधारणा, अलंकारों का सोदाहरण परिचय –अनुप्रास, श्लेष, प्रतीप, निदर्शना, अप्रस्तुत प्रशंसा, काव्यलिंग, विभावना, अपह्नुति, रूपकातिशयोक्ति तथा विरोधाभास। **छन्द :** छन्द की परिभाषा और तत्व, छन्दों का वर्गीकरण; काव्य में छन्दों का महत्व। अग्रांकित छन्दों के लक्षण और उदाहरण- वंशस्थ, वसन्ततिलका, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित, कवित्त, दोहा, चौपाई, हरिगीतिका, कुण्डलिया, छप्पय तथा मुक्त छन्द।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	3	2	3	2	3	3	1
CO2	2	3	3	2	3	2	3	3	1
CO3	2	3	3	2	3	2	3	3	1
CO4	2	3	3	2	3	2	3	3	1
Average	2	3	3	2	3	2	3	3	1

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4=20

सहायक ग्रंथ

1. हिस्ट्री आफ संस्कृत पोयटिक्स - पी.बी. काणे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. साहित्य शास्त्र - गणेश त्र्यम्बक देशपाण्डे, पापुलर बुक डिपो, पूना।
3. भारतीय काव्यशास्त्र - सत्यदेव चौधरी।
4. काव्यशास्त्र की भूमिका - डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
5. भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज - डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. रस सिद्धान्त - डॉ. नगेन्द्र
7. हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास - भगीरथ मिश्र
8. काव्य शास्त्र - भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
9. साहित्य शास्त्र और काव्य भाषा - डॉ. सियाराम तिवारी।
10. काव्य समीक्षा - डॉ. विक्रमादित्य राय।
11. लिटेरेरी क्रिटिसिज्म - राय एण्ड द्विवेदी, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।
12. नई समीक्षा के प्रतिमान - डॉ. निर्मला जैन
13. काव्य के तत्व - देवेन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
14. साहित्य मीमांसा के आयाम - डॉ. श्याम शंकर सिंह, साहित्य सहकार, दिल्ली।
15. सुगम भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ. धर्मदेव तिवारी शास्त्री, चन्द्रमुखी प्रकाशन, दिल्ली
16. काव्यशास्त्र विमर्श - डॉ. कृष्ण प्रसाद नारायण मागध, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
17. पंडितराज जगन्नाथ - पी. रामचंद्रुदु , साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
18. मम्मट - जगन्नाथ पाठक, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
19. राजशेखर - प्रभुनाथ द्विवेदी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
20. क्षेमेन्द्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
21. संस्कृत काव्यशास्त्र और काव्य परम्परा - राधावल्लभ त्रिपाठी

सप्तम सत्र

HIN-CC -4140

कहानी एवं अन्य गद्य विधाएँ

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राजेंद्र बाला घोष, माधवराव सप्रे, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्र तथा फणीश्वरनाथ रेणु की चयनित कहानियों के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे, साथ ही रचनाकारों की कहानी कला से परिचित हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी निर्मल वर्मा, अज्ञेय, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, शेखर जोशी तथा ज्ञानरंजन की चयनित कहानियों के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे, साथ ही रचनाकारों की कहानी कला से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी चयनित रेखाचित्रों और संस्मरणों के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित जीवनी 'आवारा मसीहा' के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे, साथ ही जीवनी साहित्य के तत्वों से भी परिचित हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राजेंद्र बाला घोष, माधवराव सप्रे, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्र तथा फणीश्वरनाथ रेणु की चयनित कहानियों के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की, साथ ही रचनाकारों की कहानी कला से परिचित हुए।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी निर्मल वर्मा, अज्ञेय, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, शेखर जोशी तथा ज्ञानरंजन की चयनित कहानियों के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की, साथ ही रचनाकारों की कहानी कला से परिचित हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी चयनित रेखाचित्रों और संस्मरणों के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित जीवनी 'आवारा मसीहा' के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की, साथ ही जीवनी साहित्य के तत्वों से भी परिचित हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	**कहानी** राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला) : दुलाईवाली माधवराव सप्रे : एक टोकरी भर मिट्टी प्रेमचंद : दुनिया का सबसे अनमोल रतन जयशंकर प्रसाद : आकाशदीप	30	C1

	जैनेन्द्र : अपना-अपना भाग्य फणीश्वरनाथ रेणु : लाल पान की बेगम		
2	**कहानी** निर्मल वर्मा : परिन्दे अज्ञेय : गैंग्रीन भीष्म साहनी : अमृतसर आ गया कृष्णा सोबती : सिक्का बदल गया शेखर जोशी : कोसी का घटवार ज्ञानरंजन : पिता	30	C2
3	**रेखाचित्र और संस्मरण** (क). अतीत के चलचित्र : महादेवी वर्मा पाठ्य रचनाएँ : रामा; भाभी (ख). माटी की मूरतें : रामवृक्ष बेनीपुरी पाठ्य रचनाएँ : बलदेव सिंह; सरजू भैया (ग). संस्मरण और रेखाचित्र : सं. उर्मिला मोदी ; अनुराग प्रकाशन, वाराणसी पाठ्य रचना : महाकवि जयशंकर प्रसाद- शिवपूजन सहाय	30	C3
4	**जीवनी** आवारा मसीहा (विद्यार्थी संस्करण) : विष्णु प्रभाकर	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	3	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देश:

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8×4=32
2. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4=48

सहायक ग्रंथ:-

1. हिन्दी कहानी का विकास - मधुरेश, लोकभारती , दिल्ली।
2. हिन्दी कहानी का इतिहास, भाग-I, II,III और IV - गोपाल राय, राजकमल, दिल्ली
3. हिन्दी कहानी: पहचान और परख - इन्द्रनाथ मदान
4. कहानी : नई कहानी - डॉ. नामवर सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद।
5. नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति - सं. देवीशंकर अवस्थी, राजकमल, दिल्ली।
6. समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य - रामस्वरूप चतुर्वेदी,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
7. हिन्दी जीवनी साहित्य: सिद्धान्त और अध्ययन - डॉ. भगवानशरण भारद्वाज, परिमल प्रकाशन
8. हिन्दी गद्य का विकास - डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन।
9. निर्मल वर्मा - कृष्णदत्त पालीवाल, साहित्य अकादेमी
10. प्रेमचन्द - कमलकिशोर गोयनका, साहित्य अकादेमी
11. फणीश्वर नाथ 'रेणु' - सुरेन्द्र चौधरी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
12. भीष्म साहनी - रमेश उपाध्याय, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
13. अज्ञेय का कथा साहित्य - चंद्रकांत बान्दिवडेकर
14. शेखर जोशी: कुछ जीवन की कुछ लेखन की - नवीन जोशी, नवारुण प्रकाशन
15. शेखर जोशी : कथा समग्र - नवीनचन्द्र जोशी

सप्तम सत्र

HIN-101-RC-5110

शोध प्रविधि

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य - Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी अनुसंधान के अर्थ, स्वरूप, प्रकार, अनुसंधान और आलोचना के सम्बन्ध तथा अनुसंधानकर्ता के गुणों आदि से अवगत हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी अनुसंधान की विभिन्न प्रविधियों, यथा - ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय, पाठानुसन्धान,भाषा वैज्ञानिक, तुलनात्मक तथा सर्वेक्षणात्मक अनुसंधान प्रविधि से अवगत हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी क्षेत्र सर्वेक्षण, प्रश्नावली निर्माण एवं अनुसूची, साक्षात्कार, पर्यवेक्षण, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति (केस अध्ययन विधि), निदर्शन सिद्धांत, सारणीयन, विषयवस्तु विश्लेषण, एकांश लेखन एवं विश्लेषण से परिचित हो सकेंगे, साथ ही हस्तलेखों के संकलन और उनके उपयोग की विधि को जान सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी शोध के विभिन्न सोपानों तथा शोध-प्रारूप के निर्माण एवं लेखन की विधियों से भली-भाँति परिचित हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी अनुसंधान के अर्थ, स्वरूप, प्रकार, अनुसंधान और आलोचना के सम्बन्ध तथा अनुसंधानकर्ता के गुणों आदि से अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को अनुसंधान की विभिन्न प्रविधियों, यथा - ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय, पाठानुसन्धान,भाषा वैज्ञानिक, तुलनात्मक तथा सर्वेक्षणात्मक अनुसंधान प्रविधि का ज्ञान प्राप्त हुआ।

CO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी क्षेत्र सर्वेक्षण, प्रश्नावली निर्माण एवं अनुसूची, साक्षात्कार, पर्यवेक्षण, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति (केस अध्ययन विधि), निदर्शन सिद्धांत, सारणीयन, विषयवस्तु विश्लेषण, एकांश लेखन एवं विश्लेषण से परिचित हुए, साथ ही हस्तलेखों के संकलन और उनके उपयोग की विधियों को जान सके।

CO4. विद्यार्थी शोध के विभिन्न सोपानों तथा शोध-प्रारूप के निर्माण एवं लेखन की विधियों से भली-भाँति परिचित हुए।

इकाई	विषय	संवाद अवधि	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	अनुसंधानः अर्थ एवं स्वरूप ; साहित्यिक अनुसंधान, सामाजिक अनुसंधान एवं वैज्ञानिक अनुसन्धान; अनुसंधान के प्रकार : स्वतन्त्र अनुसन्धान, संस्थागत अनुसन्धान, साहित्यिक शोध के प्रकार, तथ्यानुसन्धान और तथ्य परीक्षण, अनुसंधान और आलोचना, अनुसंधानकर्ता के गुण।	30	C1
2	अनुसंधान प्रविधियां : ऐतिहासिक अनुसंधान प्रविधि; समाजशास्त्रीय अनुसंधान प्रविधि;पाठानुसन्धान प्रविधि; भाषा वैज्ञानिक अनुसंधान प्रविधि; तुलनात्मक अनुसंधान प्रविधि; सर्वेक्षणात्मक अनुसंधान प्रविधि।	30	C2
3	क्षेत्र सर्वेक्षण, प्रश्नावली निर्माण एवं अनुसूची, साक्षात्कार, पर्यवेक्षण, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति (केस अध्ययन विधि), निदर्शन सिद्धांत, सारणीयन, विषयवस्तु विश्लेषण, एकांश लेखन एवं विश्लेषण, हस्तलेखों का संकलन और उनका उपयोग।	30	C3
4	शोध के सोपान, शोध प्रबंध लेखन एवं प्रस्तुति : शोध प्रबन्ध का शीर्षक; परिकल्पना; रूपरेखा निर्माण; अध्यायीकरण; भूमिका लेखन; विषय सूची; विषयवस्तु ; संदर्भ लेखन ; उद्धरण : उपयोग और प्रस्तुति; संदर्भोल्लेख तथा पाद टिप्पणी; उद्देश्य, उपसंहार; परिशिष्ट ; आधार ग्रंथ; सन्दर्भ ग्रन्थ; सहायक ग्रन्थ; पत्र-पत्रिकाएं।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	2	1	3	2	2	1	3
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2.25	2.75	1.25	2.50	2.25	2	1.25	2.50	2.25

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे।

15x4= 60

2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4= 20

सहायक ग्रंथः

1. शोध प्रविधि - विनयमोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. साहित्यिक अनुसंधान के प्रतिमान - एस. एन. गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
3. साहित्यिक अनुसंधान के प्रतिमान - देवराज उपाध्याय
4. शोध और सिद्धान्त - नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
5. हिन्दी अनुसंधान - विजयपाल सिंह, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
6. अनुसंधान की प्रक्रिया - सं. सावित्री सिन्हा तथा विजयेन्द्र स्नातक
7. अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया - राजेन्द्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
8. अनुसंधान का स्वरूप - सं. सावित्री सिन्हा
9. शोध प्रविधि - रामगोपाल शर्मा दिनेश, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
10. पाठानुसंधान - डॉ. सियाराम तिवारी, विशाल पब्लिकेशन, पटना
11. शोध प्रविधि – रामकुमार खण्डेलवाल, चन्द्रकान्त रावत, जवाहर पब्लिकेशन, मथुरा
12. अनुसन्धान के विविध आयाम – रवीन्द्र कुमार जैन, शशिभूषण सिंहल राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
13. शोध प्रविधि – डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकुला
14. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका - मैनेजर पाण्डेय
15. पाण्डुलिपि विज्ञान - रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'
16. The Literary Thesis - George Watson, Longman.
17. How to Write Assignments Research Topics, Dissertations and Thesis – V.H.Bedekar, Kanak Publications,New Delhi.
18. The Art of Literary Research - R. D Altik, Newyork.
19. Introduction to Research - T. Helway.
20. The Methodology of Field Investigation in Linguistics. - A. E. Kilerik.

अष्टम सत्र - मॉडल 1

चार वर्षीय हिंदी स्नातक प्रतिष्ठा के लिए पाठ्यक्रम

अष्टम सत्र

HIN-CC- 4210

हिंदी साहित्य का इतिहास: आधुनिक काल

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों और 1857 की क्रांति, पुनर्जागरण, आधुनिकता बोध, भारतेंदु युग के अवदान और भारतेंदु मंडल के कवियों की काव्य भाषा और मूल चेतना से परिचित हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को द्विवेदी युगीन हिंदी नवजागरण और सरस्वती पत्रिका, राष्ट्रीय काव्य धारा के प्रमुख कवि, स्वच्छंदतावाद और द्विवेदी युगीन कविता की इतिवृत्तामकता की जानकारी प्राप्त होगी।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी छायावाद की पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियों और सैद्धांतिकी से परिचित हो सकेंगे। वे प्रमुख छायावादी कवियों की रचनाओं और उनकी काव्य कला का अध्ययन कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को छायावादोत्तर काव्य आंदोलनों की जानकारी प्राप्त होगी।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों और 1857 की क्रांति, पुनर्जागरण, आधुनिकता बोध, भारतेंदु युग के अवदान और भारतेंदु मंडल के कवियों की काव्य भाषा और मूल चेतना से परिचित हुए।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को द्विवेदी युगीन हिंदी नवजागरण और सरस्वती पत्रिका, राष्ट्रीय काव्य धारा के प्रमुख कवि, स्वच्छंदतावाद और द्विवेदी युगीन कविता की इतिवृत्तामकता की जानकारी प्राप्त हुई।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी छायावाद की पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियों और सैद्धांतिकी से परिचित हुए। वे प्रमुख छायावादी कवियों की रचनाओं और उनकी काव्य कला का अध्ययन कर सके।

CO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को छायावादोत्तर काव्य आंदोलनों की जानकारी प्राप्त हुई।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	आधुनिक काल की पृष्ठभूमि: सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ; 1857 की क्रांति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण; आधुनिकता बोध का विकास, हिन्दी काव्य को भारतेन्दु युग का अवदान; भारतेन्दु मण्डल के कवि तथा अन्य कवि; काव्य भाषा की चेतना और भारतेन्दु युग; भारतेन्दु युगीन कविता की मूल चेतना और विशेषताएँ।	30	C1
2	द्विवेदी युग : महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, हिन्दी नवजागरण और सरस्वती, राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि, स्वच्छन्दतावाद और उसके प्रमुख कवि ; द्विवेदी युगीन कविता की इतिवृत्तात्मकता।	30	C2
3	छायावाद : पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियां और सैद्धांतिकी; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नंददुलारे वाजपेयी, नगेन्द्र, नामवर सिंह, रामविलास शर्मा; प्रमुख छायावादी कवि और उनका काव्य; छायावादकालीन अन्य कवि और उनका काव्य; नवजागरण और छायावाद; छायावादी काव्य-भाषा का स्वरूप।	30	C3
4	छायावादोत्तर काव्यान्दोलन और काव्य : प्रगतिवाद; प्रयोगवाद; नई कविता; अकविता; नवगीत; जनवादी कविता; समकालीन कविता; दलित-चेतना, स्त्री-चेतना और जनजातीय चेतना की कविताएं।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	3	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देश :

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60

2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4=20

सहायक ग्रंथ :

1 . हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. हिन्दी साहित्य की भूमिका - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली।
5. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
6. हिन्दी साहित्य का अतीत : भाग 1,2 - विनय प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, ब्रहमनाल, वाराणसी।
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास - सं. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
8. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद।
9. हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी - नन्ददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रका. इलाहाबाद।
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन - नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
11. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास प्रथम एवं द्वितीय खंड - डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रका, इलाहाबाद।
12. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - रामकुमार वर्मा
13. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास - सुमन राजे, ज्ञानपीठ, दिल्ली
14. हिन्दी साहित्य : बीसवी शताब्दी - नन्द दुलारे वाजपेयी
15. हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष - शिवदान सिंह चौहान
16. झारखण्ड : अन्धेरे से साक्षात्कार - डॉ. अभिषेक कुमार यादव, मीडिया स्टडीज, नई दिल्ली
17. भारतेंदु हरिश्चन्द्र - मदनगोपाल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
18. महावीर प्रसाद द्विवेदी - नंदकिशोर नवल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
19. श्रीधर पाठक - रघुवंश, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
20. सुमित्रानंदन पंत - कृष्णदत्त पालीवाल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

अष्टम सत्र

HIN-DE-4220

सगुण भक्ति काव्य एवं रीति काव्य

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सूरदास की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे एवं भ्रमरगीत की परंपरा और उसकी विशेषताओं की समीक्षा कर सकेंगे।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी तुलसीदास की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे तथा उनकी भक्ति-भावना, समन्वय-भावना और काव्य-कला से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी मीराबाई की चयनित पदावलियों की व्याख्या कर सकेंगे तथा कृष्णभक्ति काव्य-परंपरा में मीराबाई का स्थान, उनकी स्त्री-चेतना, विरह-वेदना और काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी घनानंद और बिहारी की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे। वे रीतिमुक्त काव्यधारा, घनानंद की विरह-वेदना और उनकी कविताओं की शिल्पगत विशेषता, बिहारी की सौंदर्य चेतना और काव्य कला से परिचित होंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने सूरदास की चयनित कविताओं की व्याख्या की एवं भ्रमरगीत की परंपरा और उसकी विशेषताओं की समीक्षा की।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी तुलसीदास की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सके तथा उनकी भक्ति भावना, समन्वय भावना और काव्य कला से परिचित हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी मीराबाई की चयनित पदावलियों की व्याख्या कर सके तथा कृष्णभक्ति काव्य परंपरा में मीराबाई का स्थान, उनकी स्त्री-चेतना, विरह-वेदना और उनकी काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन भी किया।

CO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी घनानंद और बिहारी की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सके। वे रीतिमुक्त काव्यधारा, घनानंद की विरह-वेदना और उनकी कविताओं की शिल्पगत विशेषता, बिहारी की सौंदर्य चेतना और काव्य-कला से परिचित हुए।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	**सूरदास**: पाठ्य पुस्तक: भ्रमरगीत सार; सं. : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पद संख्या– 9, 23, 25, 34, 62, 64, 65, 82, 85, 87, 95, 97, 115, 120, 130, 138, 172, 278 आलोचना : भ्रमरगीत परम्परा और सूरदास, गोपियों का विरह वर्णन, भ्रमरगीत की विशेषताएँ, सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ।	30	C1
2	**तुलसीदास** पाठ्य पुस्तक : रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर पाठ्यांश : उत्तर काण्ड दोहा संख्या - 3 से 18 तक आलोचना: तुलसीदास की भक्ति-भावना, तुलसीदास की समन्वय भावना, उत्तरकाण्ड का प्रतिपाद्य, तुलसीदास की काव्य-कला।	30	C2
3	**मीराबाई** पाठ्य पुस्तक : मीराबाई की पदावली : सम्पा. परशुराम चतुर्वेदी पद सं- 17,18, 20, 22, 23, 35, 36, 41, 46,116,118,146,158,175,199, 200 आलोचना: कृष्ण काव्य परम्परा में मीराबाई का स्थान, मीराबाई और स्त्री चेतना, मीराबाई की विरह- वेदना, मीराबाई की काव्यगत विशेषताएँ।	30	C3
4	**घनानंद** पाठ्य पुस्तक : घनानन्द कवित्त; संपा.- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र पद सं. 6 से 21 तक आलोचना: रीतिमुक्त काव्यधारा और घनानंद, प्रेम के पीर के कवि घनानंद, घनानंद के काव्य की शिल्पगत विशेषताएँ। **बिहारी** पाठ्य पुस्तक : बिहारी रत्नाकर; सम्पा. : जगन्नाथदास रत्नाकर पाठ्यदोहे-25, 32, 38, 42, 46, 48, 51, 58, 60, 61, 69, 73, 94, 121, 131, 141, 181, 300 तथा 363 आलोचना: सतसई परम्परा और बिहारी, बिहारी की सौन्दर्य चेतना, बिहारी की काव्य-कला।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	3	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश :

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x4=32
2. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4=48

सहायक ग्रंथः-

1. सूरदास - रामचन्द्र शुक्ल, ना. प. सभा, काशी।
2. सूर साहित्य - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय - डॉ. दीनदयाल गुप्त, हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग।
4. सूर और उनका साहित्य - डॉ. हरवंश लाल शर्मा, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ ।
5. सूरदास - नंददुलारे वाजपेयी।
6. गोस्वामी तुलसीदास - रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
7. तुलसी और उनका युग - डॉ. राजपति दीक्षित, ज्ञानमंडल, काशी।
8. तुलसी-साहित्य का आधुनिक सन्दर्भ - डॉ. हरीशकुमार शर्मा, साहित्य सहकार प्रकाशन,दिल्ली।
9. रामकथा का विकास - कामिल बुल्के, हिन्दी परिषद्, प्रयाग।
10. बिहारी की वाग्विभूति - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी।
11. बिहारी का नया मूल्यांकन - डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद ।
12. घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा - डॉ. मनोहर लाल गौड़, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
13.घनानन्द का काव्य - डॉ. रामदेव शुक्ल, लोकभारती, इलाहाबाद।
14. परमानंद दास का काव्य-शिल्प - डॉ. शशिवाला शर्मा, साहित्य सहकार, दिल्ली।
15. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य - मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
16. मीरा का काव्य - विश्वनाथ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
17. मीराबाई - डॉ. सी.एल. प्रभात
18. रामचरितमनस में नारी - डॉ. सुशील कुमार शर्मा, साहित्य सहकार प्रकाशन
19. रीतिकाव्य की भूमिका - डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
20. बिहारी - बच्चन सिंह, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
21. मीराबाई - ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

अष्टम सत्र

HIN-DE-4230

आधुनिक काव्य

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी 'हरिऔध' और मैथिलीशरण गुप्त की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे। साथ ही प्रियप्रवास के महाकाव्यत्व, प्रियप्रवास की राधा, उसकी काव्यगत विशेषताओं तथा साकेत में अभिव्यक्त आधुनिक स्त्री संवेदना, उर्मिला के विरह वर्णन और उसकी काव्यगत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे। वे छायावादी काव्य मूल्य, प्रसाद की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना, दार्शनिक चेतना, निराला की 'राम की शक्ति पूजा' का प्रतिपाद्य, उनके आत्म-संघर्ष और काव्य-वैशिष्ट्य का अध्ययन कर सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे। वे पंत के प्रकृति चित्रण और उनकी काव्यगत विशेषताओं तथा महादेवी वर्मा की रहस्य-भावना, पीड़ा और वेदना तथा काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन कर सकेंगे।

LO4- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हरिवंशराय बच्चन और रामधारी सिंह 'दिनकर' की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे। वे 'निशा निमंत्रण' के प्रतिपाद्य, हालावाद और बच्चन की काव्यगत विशेषताओं तथा दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीयता, 'रश्मिरथी' का प्रतिपाद्य तथा उसके अंतर्वस्तु और शिल्प को जान सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी 'हरिऔध' और मैथिलीशरण गुप्त की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सके। साथ ही प्रियप्रवास के महाकाव्यत्व, प्रियप्रवास की राधा, उसकी काव्यगत विशेषताओं तथा साकेत में अभिव्यक्त आधुनिक स्त्री संवेदना, उर्मिला के विरह वर्णन और उसकी काव्यगत विशेषताओं से परिचित हुए।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सके। उन्होंने छायावादी काव्य मूल्य, प्रसाद की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना, दार्शनिक चेतना, निराला की 'राम की शक्ति पूजा' का प्रतिपाद्य, उनके आत्म-संघर्ष और काव्य-वैशिष्ट्य का अध्ययन किया।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सके। उन्होंने पंत के प्रकृति चित्रण और उनकी काव्यगत विशेषताओं तथा महादेवी वर्मा की रहस्य-भावना, पीड़ा और वेदना तथा काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन किया।

CO4- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हरिवंशराय बच्चन और रामधारी सिंह दिनकर की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सके। वे 'निशा निमंत्रण' के प्रतिपाद्य, हालावाद और बच्चन की काव्यगत विशेषताओं तथा दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीयता, रश्मिरथी का प्रतिपाद्य तथा उसके अंतर्वस्तु और शिल्प को जान पाए।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	**अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'** पाठ्य कविता : प्रियप्रवास; षष्ठ सर्ग; छन्द सं.- 26 से 83 आलोचना: प्रियप्रवास का महाकाव्यत्व ; प्रियप्रवास की राधा, हरिऔध की काव्यगत विशेषताएँ। **मैथिलीशरण गुप्त** पाठांश – साकेत का नवम् सर्ग प्रथम खंड: पंक्ति - दो वंशों में प्रकट करके पावनी लोक-लीला .... से.... प्रिय ही नहीं यहाँ मैं भी थी, और एक संसार भी! आलोचना:उर्मिला का विरह-वर्णन, साकेत में अभिव्यक्त आधुनिक स्त्री संवेदना, साकेत के नवम् सर्ग के सन्दर्भ में गुप्तजी की काव्यगत विशेषताएं।	30	C1
2	**जयशंकर प्रसाद** पाठांश- 'कामायनी' का इड़ा सर्ग आलोचना : छायावादी काव्य मूल्य और जयशंकर प्रसाद; प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना;कामायनी में व्यक्त दार्शनिक चेतना। **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'** पाठ्य कविता – राम की शक्ति-पूजा । आलोचना: राम की शक्ति-पूजा का प्रतिपाद्य; राम की शक्ति-पूजा और निराला का आत्मसंघर्ष,निराला का काव्य-वैशिष्ट्य।	30	C2
3	**सुमित्रानंदन पंत** पाठ्य कविता: परिवर्तन, नौका विहार पाठ्य पुस्तक - छायावाद के प्रतिनिधि कवि – डॉ. विजयपाल सिंह आलोचना: पन्त–काव्य और छायावाद; पंत का प्रकृति-चित्रण, पन्त की काव्यगत विशेषताएँ। **महादेवी वर्मा** पाठ्य कविताएं – बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, मन्दिर का दीप । पाठ्य पुस्तक- छायावाद के प्रतिनिधि कवि – डॉ. विजयपाल सिंह आलोचना : महादेवी की रहस्य भावना, पीड़ा और वेदना, महादेवी वर्मा की काव्यगत विशेषताएं।	30	C3

4	**हरिवंशराय बच्चन** पाठ्य रचना – ‘निशा-निमंत्रण’ के प्रथम चार गीत आलोचना: ‘निशा-निमंत्रण’ का प्रतिपाद्य, हालावाद और हरिवंशराय बच्चन, हरिवंशराय बच्चन की काव्यगत विशेषताएं। **रामधारी सिंह ‘दिनकर’** पाठ्यांश – रश्मिरथी (तृतीय सर्ग) आलोचना: ‘दिनकर’ के काव्य में राष्ट्रीयता, ‘रश्मिरथी’ का प्रतिपाद्य, ‘रश्मिरथी’ की अंतर्वस्तु और शिल्प।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	3	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8×4=32
2. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4=48

सहायक ग्रन्थ :

1. साकेत : एक अध्ययन - डॉ. नगेन्द्र, राजकमल प्रकाशन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस
2. साकेत के नवम सर्ग का काव्य वैभव - कन्हैयालाल सहल, हिन्दी बुक सेन्टर, दिल्ली।
3. जयशंकर प्रसाद - नन्द दुलारे वाजपेयी।
4. प्रसाद और उनका साहित्य - विनोद शंकर व्यास
5. जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला - डॉ रामेश्वर खण्डेलवाल।
6. प्रसाद का काव्य - डॉ. प्रेमशंकर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
7. निराला की साहित्य साधना, भाग 1,2,3 - डॉ. रामविलास शर्मा
8. निराला एक आत्महन्ता आस्था - दूधनाथ सिंह, लोक भारती, इलाहाबाद।

9. छायावाद - डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
10. क्रांतिकारी कवि निराला - डॉ. बच्चन सिंह
11. कामायनी अनुशीलन - रामलाल सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।
12. राम की शक्तिपूजा - डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
13. महादेवी का काव्य सौष्ठव - कुमार विमल, अनुपम प्रकाशन, पटना।
14. महादेवी - दूधनाथ सिंह, राजकमल, इलाहाबाद।
15. कवि सुमित्रानंदन पंत - नंद दुलारे वाजपेयी, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली।
16. सुमित्रानंदन पंत : कवि और काव्य - शारदालाल प्रकाशन, दिल्ली।
17. महादेवी - इन्द्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
18. हरिऔध के महाकाव्यों की नारी पात्र - रेणु श्रीवास्तव, अमन प्रकाशन, कानपुर।
19. दिनकर का कुरुक्षेत्र और मानवतावाद - डॉ. मोहसिन खान
20. पन्त की दार्शनिक चेतना - डॉ. सुरेशचन्द्र गुप्त, प्रकाश बुक डिपो, बरेली

अष्टम सत्र

HIN-DE-4240

हिन्दी नाटक एवं निबंध

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे। आधुनिक हिंदी नाटक की परंपरा तथा पठित नाटक में चित्रित समस्याओं से परिचित हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी भुवनेश्वर की एकांकी – 'स्ट्राइक', उपेंद्रनाथ अश्क की एकांकी- 'सूखी डाली' तथा जगदीश चंद्र माथुर की एकांकी – 'भोर का तारा' के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे, साथ ही चयनित एकांकीकारों की एकांकी-कला से भी परिचित हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालमुकुंद गुप्त, रामचंद्र शुक्ल और हरिशंकर परसाई की निबंध शैली से परिचित हो सकेंगे और पठित निबंधों के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी ललित निबंध की परिभाषा एवं उसकी विशेषताओं को जान सकेंगे तथा हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, विवेकी राय और नामवर सिंह की निबंध शैली से परिचित हो सकेंगे तथा पठित निबंधों की व्याख्या एवं समीक्षा कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की। आधुनिक हिंदी नाटक की परंपरा तथा पठित नाटक में चित्रित समस्याओं से परिचित हुए।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी भुवनेश्वर की एकांकी –'स्ट्राइक', उपेंद्रनाथ अश्क की एकांकी- 'सूखी डाली' तथा जगदीश चंद्र माथुर की एकांकी – 'भोर का तारा' के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की, साथ ही चयनित एकांकीकारों की एकांकी-कला से भी परिचित हुए।

LO3. विद्यार्थी भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालमुकुंद गुप्त, रामचंद्र शुक्ल और हरिशंकर परसाई की निबंध शैली से परिचित हुए और पठित निबंधों के प्रतिपाद्य को जान सके।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी ललित निबंध की परिभाषा एवं उसकी विशेषताओं को जान सके तथा हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, विवेकी राय और नामवर सिंह की निबंध शैली से परिचित हुए तथा पठित निबंधों की व्याख्या एवं समीक्षा की।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	**नाटक** आषाढ़ का एक दिन : मोहन राकेश आलोचना : आधुनिक हिंदी नाटक और मोहन राकेश,नाटक की समीक्षा, पठित नाटक में चित्रित समस्याएँ।	30	C1
2	**एकांकी** स्ट्राइक : भुवनेश्वर सूखी डाली : उपेन्द्रनाथ 'अश्क' भोर का तारा : जगदीश चन्द्र माथुर आलोचना : चयनित एकांकीकारों की एकांकी-कला, एकांकी के तत्वों के आधार पर समीक्षा, प्रतिपाद्य।	30	C2
3	**निबंध** भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है : भारतेन्दु एक दुराशा : बालमुकुन्द गुप्त उत्साह : रामचन्द्र शुक्ल पगडण्डियों का जमाना : हरिशंकर परसाई आलोचना बिंदु: चयनित निबंधकारों की निबंध शैली, पठित निबंधों का प्रतिपाद्य।	30	C3
4	**ललित निबंध** कुटज : हजारीप्रसाद द्विवेदी मेरे राम का मुकुट भीग रहा है : विद्यानिवास मिश्र उठ जाग मुसाफिर : विवेकी राय संस्कृति और सौन्दर्य : नामवर सिंह आलोचना : ललित निबंध की परिभाषा एवं विशेषताएँ, चयनित निबंधकारों की निबंध शैली,पठित निबंधों का प्रतिपाद्य।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	3	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8×4=32
2. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4=48

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी नाटक उद्भव और विकास – डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
2. रंग दर्शन - नेमिचन्द्र जैन
3. रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना – हजारीप्रसाद द्विवेदी राजकमल, दिल्ली ।
4. रामचन्द्र शुक्ल – मलयज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. हिन्दी नाटक - बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
6. हिन्दी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
7. हिन्दी : विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन
8. मोहन राकेश और उनके नाटक – गिरीश रस्तोगी, लोक भारती ।
9. हिन्दी ललित निबन्ध : स्वरूप विवेचन – वेदवती राठी, लोक भारती ।
10. आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण – विजयमोहन सिंह, ज्ञानपीठ ।
11. हिन्दी का गद्य पर्व – नामवर सिंह, राजकमल ।
12. हजारीप्रसाद द्विवेदी: समग्र पुनरावलोकन – चौकीराम मिश्र, लोकभारती ।
13. दो रंगपुरुष - डॉ. जमुना बीनी तादर, रीडिंग रूम्स, दिल्ली
14. अध्यापक पूर्ण सिंह - रामचन्द्र तिवारी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
15. जगदीश चन्द्र माथुर - सत्येन्द्र कुमार तनेजा, साहित्य अकादेमी
16. भुवनेश्वर - गिरीश रस्तोगी, साहित्य अकादेमी
17. मोहन राकेश - प्रतिभा अग्रवाल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
18. हरिशंकर परसाई - विश्वनाथ त्रिपाठी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

अष्टम सत्र

HIN-101-RC-5210

शोध एवं प्रकाशन नैतिकता

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी दर्शन की परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकार से परिचित हो सकेंगे। नीतिशास्त्र की परिभाषा, नैतिक-दर्शन तथा नैतिक निर्णय के स्वरूप से भी अवगत हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी प्रकाशन संबंधी नैतिकता एवं उसकी परिभाषा, स्वरूप तथा महत्व से परिचित हो सकेंगे। विद्यार्थी प्रकाशन दुराचार की परिभाषा, संकल्पना एवं अनैतिक आचरणों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से भी अवगत हो सकेंगे, साथ ही विद्यार्थी अनुसंधान एवं प्रकाशन संबंधी नैतिकता से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी शोध आलेख प्रकाशन, शोध प्रबंध प्रकाशन तथा साहित्यिक चोरी के संबंध में समझ विकसित कर सकेंगे, साथ ही पत्रिका तथा लेख खोजने के उपकरणों जैसे- JANE, इल्जवेयर जर्नल फाईंडर, स्प्रिंगर जर्नल सजेस्टर आदि से भी परिचित हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी साहित्यिक चोरी निरोधक उपकरणों जैसे- टर्निटिन, उरकूण्ड तथा अन्य ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर के उपयोग की प्रक्रिया को जान सकेंगे, साथ ही प्रकाशनार्थ शोध आलेख लेखन का प्रशिक्षण भी प्राप्त कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी दर्शन की परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकार से परिचित हुए। नीतिशास्त्र की परिभाषा, नैतिक-दर्शन तथा नैतिक निर्णय के स्वरूप से भी अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी प्रकाशन संबंधी नैतिकता एवं उसकी परिभाषा, स्वरूप तथा महत्व से परिचित हुए। विद्यार्थी प्रकाशन दुराचार की परिभाषा, संकल्पना एवं अनैतिक आचरणों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से भी अवगत हुए, साथ ही विद्यार्थी अनुसंधान एवं प्रकाशन संबंधी नैतिकता से परिचित हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी शोध आलेख प्रकाशन, शोध प्रबंध प्रकाशन तथा साहित्यिक चोरी के संबंध में समझ विकसित कर सके, साथ ही पत्रिका तथा लेख खोजने के उपकरणों जैसे- JANE, इल्जवेयर जर्नल फाईंडर, स्प्रिंगर जर्नल सजेस्टर आदि से भी परिचित हुए।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी साहित्यिक चोरी निरोधक उपकरणों जैसे- टर्निटिन, उरकूण्ड तथा अन्य ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर के उपयोग की प्रक्रिया को जान सके, साथ ही प्रकाशनार्थ शोध आलेख लेखन का प्रशिक्षण भी प्राप्त कर सके।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	**दर्शन और नीतिशास्त्र** क. दर्शन: परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकार । ख. नीतिशास्त्र : परिभाषा, नैतिक-दर्शन तथा नैतिक निर्णय का स्वरूप । **वैज्ञानिक आचरण :** क. विज्ञान एवं शोध के संबंध में नैतिकता : बौद्धिक ईमानदारी एवं शोध अखंडता। ख. वैज्ञानिक दुराचार : मिथ्यायीकरण, छल-रचना एवं साहित्यिक चोरी । ग. प्रकाशन में बेईमानी: डुप्लीकेट एवं ओवरलैपिंग प्रकाशन। घ. चयनात्मक रिपोर्टिंग तथा आंकड़ों की अशुद्ध व्याख्या।	30	C1
2	**प्रकाशन संबंधी नैतिकता :** क. परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व । ख. श्रेष्ठ अभ्यास, मानक सेटिंग पहल एवं दिशा-निर्देश : COPE, WAME इत्यादि। ग. अभिरूचियों में अंतर्विरोध **प्रकाशन दुराचार** क. परिभाषा, संकल्पना एवं अनैतिक आचरणों से उत्पन्न समस्याएं। ख. प्रकाशन नैतिकता का उल्लंघन, ग्रंथकारिता तथा योगदान। ग. प्रकाशन दुराचार की पहचान, शिकायत एवं अपील। घ. फर्जी (Predatory) प्रकाशक एवं पत्रिकाएं।	30	C2
3	**प्रायोगिक कार्य** **ओपन एक्सेस पब्लिशिंग :** क. ओपन एक्सेस पब्लिकेशंस एण्ड इनिसियेटिब्स । ख. प्रकाशक की कॉपीराइट की ऑनलाइन संसाधन SHERPA/RoMEO द्वारा जांच तथा स्वसंग्रह नीतियां। ग. फर्जी प्रकाशकों की पहचान के लिए SPPU द्वारा	30	C3

	विकसित सॉफ्टवेयर उपकरण। घ. पत्रिका खोजक / पत्रिका सुझाव उपकरण जैसे – JANE, इल्जवेयर जर्नल फाईंडर, स्प्रिंगर जर्नल सजेस्टर आदि।		
4	**प्रायोगिक कार्य** **प्रकाशन दुराचार :** क. विषय केंद्रित नैतिक मुद्दे, एफ.एफ.पी., ग्रंथकारिता, अभिरूचियों में अंतरविरोध, शिकायत एवं अपील : भारत और विदेश से उदाहरण एवं धोखा। ख. सॉफ्टवेयर उपकरण : साहित्यिक चोरी के उपकरणों का उपयोग जैसे- टर्निटिन, उरकूण्ड, ड्रिलविट तथा अन्य ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर। ग. डेटाबेस: अनुक्रम डेटाबेस तथा उद्धरण डेटाबेस जैसे – वेब ऑफ साइंस, स्कॉपस आदि। घ. रिसर्च मैट्रिक्स : जर्नल साइटेशन रिपोर्ट, एस.एन.आई.पी., एस.जे.आर., आई.पी.पी., साईट स्कोर, आदि के आधार पर पत्रिकाओं का इंपेक्ट फैक्टर ; मैट्रिक्स : एच-इंडेक्स, जी इंडेक्स, आई 10 इंडेक्स, एल्टमैट्रिक्स। ङ. अपनी रुचि के विषय पर प्रकाशनार्थ आलेख तैयार करना तथा सॉफ्टवेयर उपकरण द्वारा वैधता की जांच करना।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	1	2	2	3	2	2	1
CO2	2	2	1	2	2	2	2	2	3
CO3	2	2	2	3	3	2	2	3	3
CO4	2	2	2	3	3	2	2	3	3
Average	2.25	2	1.50	2.50	2.50	2.25	2	2.50	2.50

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा, आलेख-लेखन तथा प्रस्तुतीकरण आदि। **(सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा): [40/40/20]**

निर्देश:

1- इकाई एक और दो से प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15 X 2 = 30

2- इकाई एक और दो से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x2= 10

3- 40 (चालीस) अंक की प्रायोगिक परीक्षा होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. Beall, J. (2012). Predatory Publishers are corrupting open access. Nature, 489 (7415), 179-179. https://doi.org/10.1038/489179a
2. Bird, A. (2006). Philosophy of Science. Routledge.
3. Indian National Science Academy (INSA), Ethics in Since, Research and Governance (2019), ISBN_ 978-81-939482-1-7.http://www.insaindia.res.in/pdf/Ethics_Books.pdf
4. Maclntyre, Alasdair (1967), A Short History of Ethics, London.
5. National Academy of Sciences, National Academy of Engineering and Institute of Medicine. (2009). On Being a Scientist: A Guide to Responsible Conduct in Research: Third Edition, National Academic Press.
6. P. Chaddah, (2018) Ethics in Competitive Research: Do not get scooped; do not get plagiarized, ISBN: 978-9387480865
7. Resnik, D.B. (2011). What is ethics in research & why is it important. National Institute of Environmental Health Sciences, 1-10. Retrieved from
8. https://www.niehs.nih.gov/research/resources/bioethics/whatis/index.cfm

अष्टम सत्र – मॉडल 2

चार वर्षीय हिंदी स्नातक शोध के साथ प्रतिष्ठा के लिए पाठ्यक्रम

अष्टम सत्र में हिंदी प्रतिष्ठा के पाठ्यक्रम में 160 क्रेडिट अर्जित करने वाले वे विद्यार्थी जिन्होंने 12 क्रेडिट का शोध परियोजना कार्य, 4 क्रेडिट का एक कोर कोर्स का पत्र तथा 4 क्रेडिट का एक माइनर कोर्स का पत्र भी पूर्ण किया हो, उन्हें हिंदी स्नातक शोध के साथ प्रतिष्ठा की उपाधि प्रदान की जाएगी। हिंदी स्नातक शोध के साथ प्रतिष्ठा की उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थी विश्वविद्यालय द्वारा बनाए गए दिशानिर्देशों और प्रवेश परीक्षा के नियमों के अंतर्गत विश्वविद्यालय में पीएच. डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं, बशर्ते उन्हें इस पाठ्यक्रम के लिए विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अपेक्षित क्रेडिट अर्जित करना होगा।

अष्टम सत्र

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

HIN-CC- 4210
हिंदी साहित्य का इतिहास: आधुनिक काल

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों और 1857 की क्रांति, पुनर्जागरण, आधुनिकता बोध, भारतेंदु युग के अवदान और भारतेंदु मंडल के कवियों की काव्य भाषा और मूल चेतना से परिचित हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को द्विवेदी युगीन हिंदी नवजागरण और सरस्वती पत्रिका, राष्ट्रीय काव्य धारा के प्रमुख कवि, स्वच्छंदतावाद और द्विवेदी युगीन कविता की इतिवृत्तामकता की जानकारी प्राप्त होगी।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी छायावाद की पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियों और सैद्धांतिकी से परिचित हो सकेंगे। वे प्रमुख छायावादी कवियों की रचनाओं और उनकी काव्य कला का अध्ययन कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को छायावादोत्तर काव्य आंदोलनों की जानकारी प्राप्त होगी।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों और 1857 की क्रांति, पुनर्जागरण, आधुनिकता बोध, भारतेंदु युग के अवदान और भारतेंदु मंडल के कवियों की काव्य भाषा और मूल चेतना से परिचित हुए।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को द्विवेदी युगीन हिंदी नवजागरण और सरस्वती पत्रिका, राष्ट्रीय काव्य धारा के प्रमुख कवि, स्वच्छंदतावाद और द्विवेदी युगीन कविता की इतिवृत्तामकता की जानकारी प्राप्त हुई।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी छायावाद की पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियों और सैद्धांतिकी से परिचित हुए। वे प्रमुख छायावादी कवियों की रचनाओं और उनकी काव्य कला का अध्ययन कर सके।

CO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को छायावादोत्तर काव्य आंदोलनों की जानकारी प्राप्त हुई।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	आधुनिक काल की पृष्ठभूमि: सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ; 1857 की क्रांति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण; आधुनिकता बोध का विकास, हिन्दी काव्य को भारतेन्दु युग का अवदान; भारतेन्दु मण्डल के कवि तथा अन्य कवि; काव्य	30	C1

	भाषा की चेतना और भारतेन्दु युग; भारतेन्दु युगीन कविता की मूल चेतना और विशेषताएँ।		
2	द्विवेदी युग : महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, हिन्दी नवजागरण और सरस्वती, राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि, स्वच्छन्दतावाद और उसके प्रमुख कवि ; द्विवेदी युगीन कविता की इतिवृत्तात्मकता।	30	C2
3	छायावाद : पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियां और सैद्धांतिकी; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नंददुलारे वाजपेयी, नगेन्द्र, नामवर सिंह, रामविलास शर्मा; प्रमुख छायावादी कवि और उनका काव्य; छायावादकालीन अन्य कवि और उनका काव्य; नवजागरण और छायावाद; छायावादी काव्य-भाषा का स्वरूप।	30	C3
4	छायावादोत्तर काव्यान्दोलन और काव्य : प्रगतिवाद; प्रयोगवाद; नई कविता; अकविता; नवगीत; जनवादी कविता; समकालीन कविता; दलित-चेतना, स्त्री-चेतना और जनजातीय चेतना की कविताएं।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	3	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देश :

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4=20

सहायक ग्रंथ :

1 . हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. हिन्दी साहित्य की भूमिका - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली।

5. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
6. हिन्दी साहित्य का अतीत : भाग 1,2 - विनय प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, ब्रहमनाल, वाराणसी।
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास - सं. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
8. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद।
9. हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी - नन्ददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रका. इलाहाबाद।
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन - नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
11. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास प्रथम एवं द्वितीय खंड - डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रका, इलाहाबाद।
12. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - रामकुमार वर्मा
13. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास - सुमन राजे, ज्ञानपीठ, दिल्ली
14. हिन्दी साहित्य : बीसवी शताब्दी - नन्द दुलारे वाजपेयी
15. हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष - शिवदान सिंह चौहान
16. झारखण्ड : अन्धेरे से साक्षात्कार - डॉ. अभिषेक कुमार यादव, मीडिया स्टडीज, नई दिल्ली
17. भारतेंदु हरिश्चन्द्र - मदनगोपाल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
18. महावीर प्रसाद द्विवेदी - नंद किशोर नवल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
19. श्रीधर पाठक - रघुवंश, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
20. सुमित्रानंदन पंत - कृष्ण दत्त पालीवाल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

अष्टम सत्र

HIN-101-RC-5210

शोध एवं प्रकाशन नैतिकता

संवाद-अवधि	: 120
क्रेडिट	: 4
पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी दर्शन की परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकार से परिचित हो सकेंगे। नीतिशास्त्र की परिभाषा, नैतिक-दर्शन तथा नैतिक निर्णय के स्वरूप से भी अवगत हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी प्रकाशन संबंधी नैतिकता एवं उसकी परिभाषा, स्वरूप तथा महत्व से परिचित हो सकेंगे। विद्यार्थी प्रकाशन दुराचार की परिभाषा, संकल्पना एवं अनैतिक आचरणों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से भी अवगत हो सकेंगे, साथ ही विद्यार्थी अनुसंधान एवं प्रकाशन संबंधी नैतिकता से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी शोध आलेख प्रकाशन, शोध प्रबंध प्रकाशन तथा साहित्यिक चोरी के संबंध में समझ विकसित कर सकेंगे, साथ ही पत्रिका तथा लेख खोजने के उपकरणों जैसे- JANE, इल्जवेयर जर्नल फाईंडर, स्प्रिंगर जर्नल सजेस्टर आदि से भी परिचित हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी साहित्यिक चोरी निरोधक उपकरणों जैसे- टर्निटिन, उरकूण्ड तथा अन्य ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर के उपयोग की प्रक्रिया को जान सकेंगे, साथ ही प्रकाशनार्थ शोध आलेख लेखन का प्रशिक्षण भी प्राप्त कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी दर्शन की परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकार से परिचित हुए। नीतिशास्त्र की परिभाषा, नैतिक-दर्शन तथा नैतिक निर्णय के स्वरूप से भी अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी प्रकाशन संबंधी नैतिकता एवं उसकी परिभाषा, स्वरूप तथा महत्व से परिचित हुए। विद्यार्थी प्रकाशन दुराचार की परिभाषा, संकल्पना एवं अनैतिक आचरणों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से भी अवगत हुए, साथ ही विद्यार्थी अनुसंधान एवं प्रकाशन संबंधी नैतिकता से परिचित हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी शोध आलेख प्रकाशन, शोध प्रबंध प्रकाशन तथा साहित्यिक चोरी के संबंध में समझ विकसित कर सके, साथ ही पत्रिका तथा लेख खोजने के उपकरणों जैसे- JANE, इल्जवेयर जर्नल फाईंडर, स्प्रिंगर जर्नल सजेस्टर आदि से भी परिचित हुए।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी साहित्यिक चोरी निरोधक उपकरणों जैसे- टर्निटिन, उरकूण्ड तथा अन्य ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर के उपयोग की प्रक्रिया को जान सके, साथ ही प्रकाशनार्थ शोध आलेख लेखन का प्रशिक्षण भी प्राप्त कर सके।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	**दर्शन और नीतिशास्त्र** क. दर्शन: परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकार। ख. नीतिशास्त्र : परिभाषा, नैतिक-दर्शन तथा नैतिक निर्णय का स्वरूप। **वैज्ञानिक आचरण :** क. विज्ञान एवं शोध के संबंध में नैतिकता : बौद्धिक ईमानदारी एवं शोध अखंडता। ख. वैज्ञानिक दुराचार : मिथ्यायीकरण, छल-रचना एवं साहित्यिक चोरी। ग. प्रकाशन में बेईमानी: डुप्लीकेट एवं ओवरलैपिंग प्रकाशन। घ. चयनात्मक रिपोर्टिंग तथा आंकड़ों की अशुद्ध व्याख्या।	30	C1
2	**प्रकाशन संबंधी नैतिकता :** क. परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व। ख. श्रेष्ठ अभ्यास, मानक सेटिंग पहल एवं दिशा-निर्देश : COPE, WAME इत्यादि। ग. अभिरूचियों में अंतर्विरोध **प्रकाशन दुराचार** क. परिभाषा, संकल्पना एवं अनैतिक आचरणों से उत्पन्न समस्याएं। ख. प्रकाशन नैतिकता का उल्लंघन, ग्रंथकारिता तथा योगदान। ग. प्रकाशन दुराचार की पहचान, शिकायत एवं अपील। घ. फर्जी (Predatory) प्रकाशक एवं पत्रिकाएं।	30	C2
3	**प्रायोगिक कार्य** **ओपन एक्सेस पब्लिशिंग :** क. ओपन एक्सेस पब्लिकेशंस एण्ड इनिसियेटिब्स। ख. प्रकाशक की कॉपीराइट की ऑनलाइन संसाधन SHERPA/RoMEO द्वारा जांच तथा स्वसंग्रह नीतियां। ग. फर्जी प्रकाशकों की पहचान के लिए SPPU द्वारा	30	C3

	विकसित सॉफ्टवेयर उपकरण। घ. पत्रिका खोजक / पत्रिका सुझाव उपकरण जैसे – JANE, इल्जवेयर जर्नल फाईंडर, स्प्रिंगर जर्नल सजेस्टर आदि।		
4	**प्रायोगिक कार्य** **प्रकाशन दुराचार :** क. विषय केंद्रित नैतिक मुद्दे, एफ.एफ.पी., ग्रंथकारिता, अभिरूचियों में अंतरविरोध, शिकायत एवं अपील : भारत और विदेश से उदाहरण एवं धोखा। ख. सॉफ्टवेयर उपकरण : साहित्यिक चोरी के उपकरणों का उपयोग जैसे- टर्निटिन, उरकूण्ड, ड्रिलविट तथा अन्य ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर। ग. डेटाबेस: अनुक्रम डेटाबेस तथा उद्धरण डेटाबेस जैसे – वेब ऑफ साइंस, स्कॉपस आदि। घ. रिसर्च मैट्रिक्स : जर्नल साइटेशन रिपोर्ट, एस.एन.आई.पी., एस.जे.आर., आई.पी.पी., साइट स्कोर, आदि के आधार पर पत्रिकाओं का इंपेक्ट फैक्टर ; मैट्रिक्स : एच-इंडेक्स, जी इंडेक्स, आई 10 इंडेक्स, एल्टमैट्रिक्स। ङ. अपनी रुचि के विषय पर प्रकाशनार्थ आलेख तैयार करना तथा सॉफ्टवेयर उपकरण द्वारा वैधता की जांच करना।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	1	2	2	3	2	2	1
CO2	2	2	1	2	2	2	2	2	3
CO3	2	2	2	3	3	2	2	3	3
CO4	2	2	2	3	3	2	2	3	3
Average	2.25	2	1.50	2.50	2.50	2.25	2	2.50	2.50

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा, आलेख-लेखन तथा प्रस्तुतीकरण आदि।
(सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा): [40/40/20]

निर्देश:

4- इकाई एक और दो से प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15 X 2 = 30

5- इकाई एक और दो से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x2= 10

6- 40 (चालीस) अंक की प्रायोगिक परीक्षा होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. Beall, J. (2012). Predatory Publishers are corrupting open access. Nature, 489 (7415), 179-179. https://doi.org/10.1038/489179a
2. Bird, A. (2006). Philosophy of Science. Routledge.
3. Indian National Science Academy (INSA), Ethics in Since, Research and Governance (2019), ISBN_ 978-81-939482-1-7.http://www.insaindia.res.in/pdf/Ethics_Books.pdf
4. Maclntyre, Alasdair (1967), A Short History of Ethics, London.
5. National Academy of Sciences, National Academy of Engineering and Institute of Medicine. (2009). On Being a Scientist: A Guide to Responsible Conduct in Research: Third Edition, National Academic Press.
6. P. Chaddah, (2018) Ethics in Competitive Research: Do not get scooped; do not get plagiarized, ISBN: 978-9387480865
7. Resnik, D.B. (2011). What is ethics in research & why is it important. National Institute of Environmental Health Sciences, 1-10. Retrieved from
8. https://www.niehs.nih.gov/research/resources/bioethics/whatis/index.cfm

अष्टम सत्र

HIN-RC-0010

शोध परियोजना/ लघु शोध प्रबंध

संवाद-अवधि	: 360
क्रेडिट	: 12
पूर्णांक	: 300
मौखिकी	: 60
लघु शोध प्रबंध	: 240

प्रस्तावना

स्नातक स्तर से ही हिंदी में शोध की गतिविधियों को शुरू करने तथा भविष्य में शोध को और सुचारू रूप से संचालित करने के उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम रखा गया है। इस तरह की शोध परियोजना से विद्यार्थियों को भविष्य में गंभीर शोध करने के लिए एक मजबूत आधार प्राप्त होगा। विद्यार्थी, विभाग द्वारा आवंटित संकाय के निर्देशन में ही शोध परियोजना/लघु शोध प्रबंध तैयार करेंगे।

शोध परियोजना कार्य को सुचारू रूप से संपन्न करने हेतु सप्तम सत्र में विभाग द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी को एक शोध निर्देशक आवंटित किया जाएगा। शीतावकाश में विद्यार्थी शोध प्रारूप तैयार करेंगे और अष्टम सत्र के आरम्भ होने के 15 दिनों के भीतर विभाग द्वारा एक बैठक के माध्यम से इन शोध प्रारूपों को अंतिम रूप दिया जायेगा। इस सत्र में विद्यार्थी लघु शोध प्रबंध का लेखन कार्य करेंगे। लघु शोध प्रबंध का मूल्यांकन कुल 300 अंकों में किया जाएगा, जिसमें मौखिकी के लिए 60 अंक तथा लघु शोध प्रबंध के लिए 240 अंक निर्धारित हैं। सत्र के अंत में विद्यार्थी लघु शोध प्रबंध की तीन प्रतियाँ विभाग में जमा करेंगे।

उद्देश्य: Learning Objectives(LOs)

LO1 . विद्यार्थी साहित्य समीक्षा के द्वारा शोध सम्बन्धी अपनी दृष्टि का विस्तार कर सकेंगे तथा प्रासंगिक विषयों में शोध प्रारूप तैयार करने में सक्षम होंगे।

LO2: विद्यार्थी शोध की विभिन्न प्रविधियों, उपकरणों तथा शोध सम्बन्धी नैतिकता और तकनीकी का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा उसका अनुपालन कर सकेंगे।

LO3: इस पत्र के अध्ययन के द्वारा विद्यार्थी उपयुक्त मानकों के अनुरूप शोध आलेख तैयार करने में सक्षम हो सकेंगे तथा उन्हें देश-विदेश की प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित करा सकेंगे।

LO4: विद्यार्थी भाषा, साहित्य, साहित्यशास्त्र, लोक साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में उपयुक्त विषय पर एक लघु शोध प्रबंध का लेखन कार्य कर सकेंगे।

उपलब्धियाँ: Course Outcomes (Cos)

CO1: विद्यार्थी साहित्य समीक्षा के द्वारा शोध सम्बन्धी अपनी दृष्टि का विस्तार कर सके तथा विद्यार्थी लघु शोध प्रबंध की रूपरेखा तैयार करने की विधि से अवगत हुए।

CO2: विद्यार्थी शोध की विभिन्न प्रविधियों, उपकरणों तथा शोध सम्बन्धी नैतिकता और तकनीकी का ज्ञान प्राप्त कर सके तथा उसका अनुपालन भी कर सके।

CO3: विद्यार्थी चयनित विषय पर मौलिक शोध आलेख तैयार करने में सक्षम हुए।

CO4: विद्यार्थियों ने भाषा, साहित्य, साहित्यशास्त्र, लोक साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में उपयुक्त विषय पर एक लघु शोध प्रबंध का लेखन कार्य किया।

मूल्यांकन

शोध परियोजना निरंतर मूल्यांकन पर आधारित होगी, जिसमें प्रदत्त कार्य, गृह कार्य, सत्रीय परीक्षा तथा सत्रांत परीक्षा आदि शामिल होगी। सत्रीय कार्य के अंतर्गत शोध की विभिन्न प्रविधियों के अनुरूप साहित्य समीक्षा, शोध प्रारूप तैयार करना तथा शोध आलेख तैयार करना आदि शामिल होगा। संगोष्ठी प्रपत्र प्रस्तुति तथा परियोजना रिपोर्ट लेखन आदि प्रायोगिक कार्य भी कराये जायेंगे।

लघु शोध प्रबंध की मूल्यांकन समिति:

1. प्रत्येक विद्यार्थी के लिए सम्बद्ध विभाग/ विभागों से एक बाह्य परीक्षक
2. विभाग द्वारा आवंटित शोध निर्देशक

नोट: शोध निर्देशक तथा सम्बद्ध विभाग/ विभागों से नियुक्त बाह्य परीक्षक की अर्हता विश्वविद्यालय के नियमों के अनुरूप होगी।

क्रम संख्या	**सत्र**	**शोध परियोजना कार्य का क्रमिक विवरण**	**मूल्यांकन**	**कुल अंक**
1	अष्टम	1. अष्टम सत्र में विद्यार्थी अपने शोध निर्देशक के निर्देशन में चयनित विषय पर लघु शोध प्रबंध तैयार करेगा। 2. इस सत्र में भी सत्रीय गतिविधियों में, सत्र के दौरान छात्र द्वारा की गई समग्र प्रगति/पीयर-समीक्षित/संदर्भित/यूजीसी-केयर सूचीबद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ जमा आलेख तथा पावर प्वाइंट प्रस्तुति आदि शामिल होगी, साथ ही शोध से सम्बंधित प्रासंगिक विषयों पर प्रदत्त कार्य की प्रस्तुति/ संगोष्ठी-सम्मेलन प्रस्तुतियाँ/ कार्यशालाओं में भाग लेना तथा शोध निर्देशक द्वारा प्रदत्त अन्य शैक्षणिक कार्य भी शामिल होंगे। 3. प्रत्येक 30 दिनों के अन्तराल में सभी विद्यार्थियों के शोध प्रगति की रिपोर्ट की नियमित समीक्षा की जाएगी। 4. सत्र के अंत में परियोजना कार्य के रूप में तैयार लघु शोध प्रबंध का मूल्यांकन किया जायेगा तथा मौखिकी भी करायी जाएगी। (मौखिकी के लिए नियत तिथि के कम से कम 10	**सत्रांत = 300 अंक** **लघु शोध प्रबंध – 240** **मौखिकी – 60**	300

		दिन पहले लघु शोध प्रबंध की एक प्रति विभागाध्यक्ष कार्यालय में जमा करनी होगी)। 5. मौखिकी मूल्यांकन समिति के सदस्य: विभागाध्यक्ष- पदेन अध्यक्ष, शोध निर्देशक, एक आंतरिक सदस्य और एक बाह्य सदस्य शामिल होंगे। आंतरिक सदस्य और बाह्य सदस्य विभागाध्यक्ष द्वारा नामित तथा सक्षम अधिकारी द्वारा अनुमोदित किये जायेंगे। 6. शोध परियोजना कार्य की समस्त औपचारिकताएं राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के शोध-सम्बन्धी नियमों के अनुरूप होंगी।		

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	2	3	3	3	1	1	2
CO2	1	1	3	2	2	2	3	3	2
CO3	3	3	2	3	3	2	2	3	3
CO4	3	3	3	2	3	3	2	2	2
Average	2.50	2.25	2.50	2.50	2.75	2.50	2	2.25	2.25

कार्य-सम्पादन- पद्धति: विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा, आलेख-लेखन तथा प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. इस पत्र में विद्यार्थी चयनित विषय पर लघु शोध प्रबंध तैयार करेंगे। विभाग द्वारा शोध के लिए शोध निर्देशक आवंटित किया जायेगा। लघु शोध प्रबंध के लिए 240 अंक निर्धारित हैं।
2. लघु शोध प्रबंध की प्रस्तुति के पश्चात मौखिकी होगी। मौखिकी के लिए 60 अंक निर्धारित है।